तरेगन

तरेगन

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : 978-93-80538-25-9

मूल्य: भा. रु. 50/-
पहिल संस्करण : 2010

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-11...2
टाइप सेट- उमेश मंडल
Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 957245.4.5, 9931654742
Taregan: Children Maithili Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal

भूमिका

अपने लोकनिक बीच छोट-छीन लघु-कथाक संग्रह उपस्थित अछि। प्रस्तुत संग्रह एक-लगाति नै लिख डेढ़-दू सालक बीच लिखल कथा-संग्रह थिक, जइमे मौलिक कथाक संग विश्व-भरिक साहित्यक सार संक्षेप नेना आ बढ़ैत नेना सभ लेल जुटाओल गेल अछि, सबहक प्रति आभार जइसँ रंग-विरंगक विषए-वस्तुक ई जमघट भऽ गेल अछि।

आजुक भाग-दौड़क जिनगीमे दीर्घ कथा पढ़ैक पलखति नै रहने लघु-कथाक महत्व स्वत: बढ़ि गेल अछि।

कथा-लेखनमे डॉ. श्रीनिवास जीक सहयोग आ प्रेरणाक चर्च करब केना बिसरि सकै छियनि ।

समए-समए गजेन्द्र जीक आग्रह आ सुझाव आ संगहि श्रुति प्रकाशनक श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारीक भरपुर सहयोग भेटलासँ लिखैक नव उत्साहो आ अशो मनकेँ सक्रत बना देने अछि।

ऐ पोथीक नाम ‘‘तरेगन’’ श्री धीरेन्द्र कुमार जीक देल अछि।

अंतमे, कथा-प्रेमी सभसँ आग्रह जे अपन अमूल्य सुझावसँ अवगति करा आगूक लेल उत्साहित करथि।

- जगदीश प्रसाद मंडल

अनुक्रम

सद्विचार
साहस
बरदास्त
भूल
धैर्य
मनुष्यक मूल्य
मदति नै चाही
मेहनतक दरद
मैक्सिम गोर्की
मूलधन
कपटी दोस्त
भीख
भगवान
एकाग्रचित
सीखैक जिज्ञासा
अनुभव
असिरवादक विरोध
धर्मक असल रुप
सौन्दर्य
स्तब्ध
एकता
विधवा विवाह
देश सेवाक व्रत
आत्मबल- १
स्वाभिमान
कलंक

बुलकी
भद्रपुरुष
झूठ नै बाजब
आर्दश माए
नारी सम्मान
अनुशासन
सादा जिनगी
विचारक उदय
पुष्ट इकाइसँ समर्थ राष्ट बनैत
डर नै करी
असिरवाद उलटि गेल
रत्न गमेवाक दुख
नशा
सामना
शिष्टाचार
ठक
पत्नीक अधिकार
शिनीची सिनेह
सिखबैक उपाए
कर्तव्यपराएन तोता
तस्वीर
दोस्तक जरुरत
स्वार्थपूर्ण विचार
संगीक महत्व
उपहास
महादान

शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो
लौह पुरुष
जंग लागल
जीवकक परीक्षा
तप
उल्टा अर्थ
जाति नै पानि
ऊँच-नीच
पागलखाना

उत्थान-पतन

एकटा शिष्य गुरुसँ पुछल- ‘‘मनुष्य शक्तिक भंडार छी फेर ओ किएक डूबैत-गिरैत अछि?’’

शिष्यक प्रश्न सुनि गुरु कनी-काल सोचि अपन कमंडल पानिमे फेक देलखिन। कमंडल तैरए लगल। कनी कालक बाद कमंडल निकालि पेनमे भूर कऽ देलखिन। भूर केला बाद फेर कमंडलकेँ पानिमे फेकलखिन। कमंडल डूबि गेल। डूबल कमंडलकेँ देखबैत गुरु कहलखिन- ‘‘जहिना छेद भेल कमंडल पानिमे डूबि गेल मुदा बिनु छेद भेल कमंडल नै डूबल तहिना मनुक्खोक अछि। जै मनुष्यमे संयम छै ओ ऐ संसाररुपी पोखरिमे नै डूबैत अछि मुदा जे असंयमी अछि ओ ओइ छेद भेल कमंडल जकाँ डूबि जाइत अछि। गाएकेँ अगर चालनिमे दूहल जाए तँ दूध धरतीपर गिरत मुदा जँ सौंस बर्तनमे दूहल जाएत तँ बर्तनमे रहत। तहिना इन्द्रिय शक्ति जँ मानसिक शक्तिकेँ कुमार्ग दिस लऽ जाएत तँ ओ ओही चालनि जकाँ भऽ जाएत। मुदा जँ सुमार्ग दिस बढ़त तँ ओ जरुर शक्तिशाली मनुष्य बनत।’’

प्रतिभा

डॉक्टर राममनोहर लोहिया जेहने विद्वान तेहने देशभक्त रहथि। देश-प्रेमक विचार पितासँ विरासतमे भेटल रहनि। ततबे नै ओहने मस्त-मौला सेहो रहथि। सदिखन चिन्तन आ आनन्दमे जिनगी बितबैत रहथि। विदेशसँ अबैकाल मद्रास बन्दरगाहपर जहाजसँ उतड़लथि। कलकत्ता जेबाक छलनि। मुदा संगमे टिकटोक पाइ नै। बिना भाड़ा देने केना जैतथि। बंदरगाहसँ उतरि सोझे हिन्दू अखबारक कार्यालयमे जा सम्पादककेँ कहलखिन- ‘‘अहाँ पत्रिकाले हम दूटा लेख देब।’’

सम्पादक पूछलखिन- ‘‘लाउ कहाँ अछि।’’

‘‘लिख कऽ दऽ दै छी।’’

लेख तँ लिखल छलनि नै, कहलखिन- ‘‘कागज-कलम दिअ अखने लिख कऽ दै छी।’’

लोहिया जीक जबाब सुनि सम्पादक बकर-बकर मुँह देखए लगलनि। तखन डॉक्टर लोहिया अपन वास्तविक कारण बता देलखिन। कारण बुझलाक बाद सम्पादक जी बैसबोक आ लिखबोक ओरियान कऽ देलखिन। किछु घंटाक उपरान्त दुनू लेख तैयार कऽ लोहिया जी दऽ देलखिन।

दुनू लेख पढ़ि सम्पादक गुम्म भऽ मने-मन हुनक प्रतिभाक प्रशंसा करए लगलखिन। ज्ञानक महत्ता सर्वोपरि अछि। ई बुझि एक्को क्षण व्यर्थ गमेबाक चेष्टा नै करक चाही। सदिखन अपनाकेँ नीक काजमे लगौने रहक चाही।

मर्म

एकटा स्कूल। जइमे हेलब सिखाओल जाइत। नव-नव विद्यार्थी प्रवेश लैत आ हेलैक कला सीख-सीख बाहर निकलैत। स्कूलेक आगूमे खूब नमगर-चौड़गर पोखरि। जकरा कातमे तँ कम पानि मुदा बीचमे अगम पानि।

शिक्षक घाटपर ठाढ़ भऽ देखए लगलथि। विद्यार्थी सभ पानिमे धँसल। विद्यार्थी सभकेँ आगू मुँहे माने अगम पानि दिस बढ़ल जाइत देख शिक्षक कहए लगलखिन- ''बाउ अखन अहाँ सभ अनजान छी। हेलब नै जनैत छी। तँए अखन अधिक गहीर दिस नै जाउ। नै तँ डूबि जाएब। जखन हेलब सीख लेब तखन पानिक उपरमे रहैक ढंग भऽ जाएत। जखन पानिक उपरमे रहैक ढंग सीख लेब तखन ओकर लाभ अपनो हएत आ दोसरोकेँ डूबैसँ बचा सकब। एहिना संसारमे बैभवोक अछि। अनाड़ी ओइमे डूबि जाइत अछि, जबकि विवेकबान ओइपर शासन करैत अछि। जइसँ अपनो आ दोसरोक भलाइ होइत छै।''

बैभवक स्थितिमे व्यक्ति अपने कुसंस्कारसँ गहीर खाइ खुनि स्वयं डूबि जाइत अछि।

अधखड्डुवा

दूटा चेलाक संग गुरु घूमैले विदा भेलाह। गामसँ निकलि पाँतरमे प्रवेश करिते बाध दिस नजरि पड़लनि। सगरे बाध खेत सभमे माटिक ढिमका देखलखिन। तीनू गोटे रस्ते परसँ हियासि-हियासि देखए लगलथि जे एना किएक छै। कनी काल गुनधुन कऽ दुनू चेला गुरुकेँ कहलकनि- ''अपने एतै, छाहरिमे बैसयौ, हम दुनू भाँइ देखने अबै छी।''

'बड़बढ़िया' कहि गुरु बैस रहलथि। दुनू चेला विदा भेल। कातेक खेतसँ ढिमका देखैत दुनू गोटे सौंसे बाधक ढिमका देख, घुरि गेल। सभ ढिमकाक बगलमे कूप खूनल छलै। मुदा कोनो कूपमे पानि नै छलै। सिर्फ एक्केटा कूपमे पानिओ छलै आ ढेकुलो गारल छलै। ओना तँ सौंसे बाधे खीराक खेती भेल छल मुदा सभ खेतक लत्ती पानिक दुआरे जरि गेल रहए। सिर्फ एक्केटा खेतमे झमटगर लत्तिओ छल आ सोहरी लागल फड़लो छल।

गुरु लग आबि चेला बाजल- ''सभ ढिमकाक बगलमे कूप खुनल छै मुदा पानि नै छै, सिर्फ एक्केटा कूपमे पानियो छै, ढेकुलो गारल छै आ खेतमे सोहरी लागल खीरो फड़ल छै।''

चेलाक बात धियान सँ सुनि गुरु पूछलखिन- ''एना किएक छै?''

दुनू चेला चुप्पे रहल। चेलाकेँ चुप देख गुरु कहए लगलखिन- ''एहेन लोक गामो सभमे ढेरियाएल अछि जे चट मंगनी पट वियाह करए चाहैत अछि। जते उथ्थर कूप छै जइमे पानि नै छै, ओ खुननिहारो सभ ओहने उथ्थर अछि। कोनो काज- चाहे आर्थिक होय आकि बौद्धिक आकि सामाजिक- अगर ढंगसँ नै कएल जेतै तँ ओहने हेतै। बीचमे जे एकटा कूप देखलिऐ, ओ खुननिहार किसान मेहनती अछि। अपन धैर्य आ श्रमसँ माटिक तरक पानि निकालि खीरा उपजौने अछि। तँए ओकरा मेहनतक फल भेटलै। बाकी सभ कामचोर अछि आशापर पानि फेरा गेलै।''

समैक बरबादी

एकटा व्यवसायी किस्सा सुनलक जे राजा परीक्षित एक्के सप्ताह भागवत सुनि ज्ञानवान भऽ गेल छलाह। तँए हमहूँ किएक ने भऽ सकै छी। ओ कथावाचक भँजियबए लगल। कथावाचक भेटलै। दुनू गोटे माने कथोवाचक आ व्यवसायियो अपन-अपन लाभक फेरमे। कथावाचक सोचैत जे मालदार सुनिनिहार भेटल आ व्यवसायी सोचैत जे जिनगी भरि बइमानी कऽ बहुत धन अरजलौं आबो मरै बेर किछु ज्ञान अरजि ली, जइसँ मुक्ति हएत।

कथा शुरु भेल। सप्ताह भरि कथा चलल। सप्ताह बीतलापर व्यवसायी कथावाचक- व्यास जीकेँ कहलकनि- "अहाँ नीक-नहाँति कथा नै सुनेलौं हमरा ज्ञान कहाँ भेल? दछिना नै देब।"

व्यवसायीक बात सुनि व्यासजी कहलखिन- "अहाँक धियान सदिखन पाइ कमाइ दिस रहैए तँ ज्ञान केना हएत?"

दुनू एक-दोसरकेँ दोख लगबए लगल। कियो अपन गल्ती मानैले तैयारे नै। दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ी होइत पटका-पटकी हुअए लगल। तखने एकटा विचारवान व्यक्ति रास्तासँ गुजरैत रहथि। ओ देखलखिन। लगमे जा दुनू गोटेकेँ झगड़ा छोड़बैत पूछलखिन। दुनू गोटे अपन-अपन बात ओइ व्यक्तिकेँ कहलक। दुनूक बात सुनि ओ व्यक्ति दुनूक हाथ-पाएर बान्हि कहलखिन- "आब अहाँ दुनू गोटे एक-दोसरक बान्ह खोलू।"

बान्हल हाथसँ केना खुजैत, बन्हन नै खुजल। तखन ओ निर्णए दैत कहलखिन- "दुनू गोटेक मन कतौ आओर छल तँए सफल नै भेलौं। सप्ताह भरिक समए दुनूक गेल तँए अपन-अपन घाटा उठा घर जाउ। एकात्म भेने बिना आध्यात्मिक उद्देश्यक पूर्ति नै होइत छै।"

पहिने तप तखन ढलिहेँ

एक दिन एकटा कुम्हार माटिक ढेरी लग बैस, माटिसँ लऽ कऽ पकाओल बरतन धरिक विचार मने-मन करैत छल। कुम्हारकेँ चिन्तामग्न देख माटि कहलकै- ''भाय! तोँ हमर एहेन बरतन बनाबह जइमे शीतल पानि भरि कऽ राखी आ प्रियतमक हृदए जुरा सकी।''

माटिक सवाल सुनि, कनी-काल गुम्म भऽ कुम्हार माटिकेँ कहलक- ''तोहर विचार तखने संभव भऽ सकै छौ जखन तोरा कोदारिक चोट, गधापर चढ़ैक, मुंगरीक मारि खाइक, पाएरसँ गंजन सहैक आ आगिमे पकैक साहस हेतौ। ऐसँ कम गंजन भेने पवित्र पात्र नै बनि सकैछेँ।''

खलीफा उमरक सिनेह

खलीफा उमर गुलामक संग घूमैले देहात दिस जाइत रहथि। किछु दूर गेलापर देखलखिन जे एकटा बुढ़िया जोर-जोरसँ अंगनमे बैस कानि रहल अछि। रास्तासँ ससरि ओ डेढ़ियापर जा ओइ बुढ़ियासँ कनैक कारण पूछलखिन। हिचुकैत बुढ़िया कहए लगलनि- ‘‘हमर जुआन बेटा लड़ाइमे मारल गेल। हम भूखे मरै छी मुदा एकोदिन खलीफा उमर खोजो-खबरि लैले नै आएल।’’

बुढ़ियाक बात सुनि उमर चोट्टे घुरि घरपर आबि, एक बोरी गहूम अपने माथपर लऽ बुढ़िया ओइठाम विदा भेला। माथपर गहूमक बोरी देख गुलाम कहलकनि- ‘‘अपने बोरी नै उठबयो। हमरा दिअ नेने चलै छी।’’

गुलामकेँ उमर जबाब देलखिन- ‘‘हम अपन पापक बोझ उठा खुदाक घर नै जाएब तँ पाप केना कटत? अहाँ तँ हमरा पापक भागी नै हएब।’’

गहूमक बोरी बुढ़ियाक घर उमर पहुँचा देलखिन। गहूम देख बुढ़िया नाओं पूछलकनि। मुस्कुराइत उमर जबाब देलखिन- ‘‘हमरे नाओं उमर छी।’’

असिरवाद दैत बुढ़िया कहलकनि- ‘‘अपन परजाक दुख-दरदकेँ अपन परिवारक दुख-दरद जकाँ बुझि कऽ चलब तखने आदर्श बनि सकब। जखन आदर्श बनब तखने हजारो-लाखो लोकक दुआ भेटत आ अमर हएब।’’

जखने जागी तखने परात

प्रसिद्ध उपनयासकार डॉक्टर क्रोनिन बड़ गरीब रहथि। मुदा जखन पी.एच.डी. केलनि आ किताब सभ बिकए लगलनि तखन धीरे-धीरे सुभ्यस्त होअए लगलथि। धनकँ अबैत देख मनो बढ़ए लगलनि। क्रिया-कलाप सेहो बदलए लगलनि। क्रिया-कलापकँ बदलैत देख पत्नी कहलकनि- ''जखन हम सभ गरीब छलौं तखने नीक छलौं जे कमसँ कम हृदेमे दयो तँ छल। मुदा आब दया समाप्त भेल जा रहल अछि।''

पत्नीक बात सुनि क्रोनिन महसूस करैत कहलखिन- ''ठीके कहलौं। धनीक धनसँ नै होइत बल्कि मन आ हृदेसँ होइत अछि। हम अपन रास्तासँ भटैक गेल छी। जँ अहाँ नै चेतैबतौं तँ हम आरो आगू बढ़ि ओइ जगहपर पहुँच जैतौं जतए एक्कोटा मनुक्खक बास नै होइत छै।''

अस्तित्वक समाप्ति

एक ठाम कनी हटि-हटि कऽ तीनटा पहाड़ छलै। पहाड़क पजरेमे नमगर आ गँहीर खाधियो छलै। जइसँ लोकक आवाजाही नै छलै। एक दिन एकटा देवता ओइ दिशासँ होइत गुजरैत रहथि। तीनू पहाड़कें देख पूछलखिन- ''ऐ क्षेत्रक नामकरण करैक अछि से ककरा नाओंसँ करी? संगहि अपन कल्याणक लेल की चहैत छी?''

पहिल पहाड़ कहलकनि- ''हम सभसँ ऊँच भऽ जाइ जइसँ दूर-दूर देख पड़िऐक।''

दोसर बाजल- ''हमरा खूब हरियर-हरियर प्रकृतिक सम्पदासँ भरि दिअ। जइसँ लोक हमरा दिस आकर्षित हुअए।''

तेसर कहलक- ''हमर उँचाइकें छील ऐ खादिकें भरि दियौ जइसँ ई सौंसे क्षेत्र उपजाउ बनि जाए। लोकोक आबाजाही भऽ जेतैक।''

तीनूक जोगार लगा देवता विदा भऽ गेलाह। एक बर्खक उपरान्त तीनूक परिणाम देखैले पुनः एलाह। पहिल पहाड़ खूब उँचगर भऽ गेल छल। मुदा कियो ओमहर जेबे ने करैत। पानि-पाथर, बिहाड़ि, रौद आ जाड़क मारि सभसँ बेसी ओकरे सहए पड़ै। दोसर तत्ते प्रकृतिक सम्पदासँ भरि गेल जे बोनाह भऽ गेल। बोनैया जानवरक डरे कियो एमहर एबे ने करैत। तेसर पहाड़सँ खाधियो भरि गेलै आ अपनो समतल भऽ गेल। खाधिसँ लऽ कऽ पहाड़ धरिक जगह उपजाउ बनि गेलै। खेती-बाड़ी करैले लोकक आवाजाही दिन-राति भऽ गेलै।

तेसर पहाड़क नाओंपर क्षेत्रक नामकरण करैत देवता कहलखिन- ''यएह पहाड़ अपन अस्तित्व समाप्त कऽ खाधियोकें अपना हृदेमे लगौलक। जइसँ ई क्षेत्र उपजाउ बनि गेल। तँए अहिक नाओंपर ऐ क्षेत्रक नाओं राखब उचित

खजाना

एकटा इलाकामे रौदी भऽ गेलै। सभ तरहक परिवारकेँ सभ तरहक जीबैक रास्ता छलैक। मुदा एकटा दशे कट्ठाबला किसान मजदूर छल। जे अपने खेतमे मेहनत कऽ गुजर करैत छल। रौदी देख बेचारा सोचए लगल जे जाबे पानि नै हएत ताबे खेती केना करब? जँ खेती करब तँ खएब की? तँए अनतै चलि जाइ, जे काज लागत तँ गुजरो चलत। जब बरखा हेतै तँ धुरि कऽ चलि आएब आ खेती करब। ई सोचि सभ तूर नुआ-वस्तु लऽ विदा भऽ गेल। जाइत-जाइत दुपहर भऽ गेलै। भूखे-पियासे बच्चा सभ लटुआए लगलै। छोटका बच्चा ठोहि फाड़ि-फाड़ि कानए लगलै। रास्ता कातमे एकटा झमटगर गाछ देख सभकेँ छाहैरिक आशा भेलै। सभ तूर गाछतर पड़ि रहल। छोटका बेटा माएकेँ कहलक- ''माए! भूखे परान निकलैए, कुछो खाइले दे।''

बेटाक बात सुनि माएक करेज पघिलए लगलै मुदा करैत की, खाइले तँ किछु रहबे ने करै। मुदा तैयो बेचारी कहलकै- ''बौआ, कनी काल बरदास करु। खाइक जोगार करै छी।''

सभ तूर जोगारमे जुटि गेल। कियो माटिक गोलाक चुल्हि बनबए लगल, तँ कियो जारन आनए गेल। कियो पानि आनए इनार दिस विदा भेल। गाछक उपरसँ एकटा चिड़ै कहलकै- ''ऐ मूर्ख! पकबैक तँ सभ जोगार सभ करै छह मुदा पकेबऽ कथी? जखन पकबैक कोनो चीज छहे नै तँ छुछे चुल्हि जरेबह।''

बड़का बेटा यएह सोचैत छल जे कतौसँ किछु कन्द-मूल आनि उसनि कऽ खाएब। मुदा तही बीच चिड़ैक मजाक सुनि खिसिया कऽ कहलकै- ''तोरे सभ परिवारकेँ पकड़ि आनि पका कऽ खेबौ।''

चिड़ैक मुखिया डरि गेल। मने-मन सोचए लगल जे परस्पर सहयोगक पुरुषार्थ किछु कऽ सकैत अछि। तँए झगड़ब उचित नै। मिलान स्वरमे बाजल-

“भाय! हमरा परिवारकेँ किएक नाश करबह। तोरा गारल खजाना देखा दै छिअह। ओकरा लऽ आबह आ चैनसँ जिनगी बितबिहह।”

ओ चिड़ै खजाना देखा देलकै। सभ मिल ओइ खजानाकेँ लऽ घर दिस घुरि गेल।

ओकरा घरक बगलेमे दोसरो ओहने परिवार छलै। जकरा सभ बात ओ कहि देलकै। मुदा ओइ परिवारक सभ कोढ़ि आ झगड़ाउ। खजानाक लोभे ओहो सभ-तूर विदा भेल। जाइत-जाइत ओइ गाछ तर पहुँचल। पहिलुके जकाँ भानस करैक नाटक सभ करए लगल। गारजन जकरा जे अढ़बै से करैक बदला झगड़े करए लगै। गाछपर सँ वएह चिड़ै कहलकै- “भोजनक जोगारे करैमे तँ सभ कटौज करै छह तखन पकेबह कथी?”

पहिलुके जकाँ परिवारक मुखिया कहलकै- “तोरे पकड़ि कऽ पकेबह?”

हँसैत चिड़ै उत्तर देलकै- “हमरा पकड़ैबला कियो आओर छल जे सभ धन लऽ चलि गेल। तोरा बुते किछु ने हेतह?”

उग्रधारा

द्वापर युगक संध्याकालीन कथा थिक। महाभारतक लड़ाइ सम्पन्न भऽ गेल छल। एक दिन एकांतमे बैस अर्जुन त्रेताक राम-रावणक लड़ाइ आ द्वापरक कौरब-पाण्डबक लड़ाइक तुलना मने-मन करैत रहथि। अनायास मोनमे उठलनि जे लंका जेबा काल रामक सेना एक-एक पाथरक टुकड़ाकेँ जोड़ि जे समुद्रमे पुल बनौलनि, ओ तँ एक तीरोमे बनि सकै छल। ऐ प्रश्नपर जत्ते सोचति तत्ते शंका बढ़ले जाइन। अंतमे, यएह सोचलनि जे पम्पापुरमे हनुमान तपस्या कऽ रहल छथि तँए हुनकेसँ किएक ने पूछि लेल जाए।

हनुमानकेँ भजियबैले अर्जुन विदा भेला। जाइत-जाइत हनुमानक कुटीपर पहुँचलथि। हनुमान तपस्यामे लीन रहथि। कुट्टीक आगूमे बैस अर्जुन हनुमानक धियान टूटैक प्रतीक्षा करए लगलथि। जखन हनुमानक धियान टूटलनि तँ अर्जुनकेँ देखलखिन। आसनसँ उठि अतिथि-सत्कार करैत हनुमान अर्जुनकेँ पूछलखिन- ''अहाँ के छी, कोन काजे ऐठाम एलौंहेँ?''

अपन परिचए दैत अर्जुन कहए लगलखिन- ''अपने त्रेताक महावीर छी तँए एकटा शंकाक समाधानक लेल एलौंहेँ।''

''पुछू।''

''लंका जेबा काल जे समुद्रमे एक-एकटा पाथरक टुकड़ा जोड़ि जे पुल बनाओल, ओ तँ एक तीरोमे बनि सकैत छल?''

अर्जुनक बात सुनि किछु काल गुम्म भऽ हनुमान उत्तर देलखिन- ''हँ, मुदा ओ ओते मजगूत नै होइतै जते एक-एक पाथरक टुकड़ा जोड़ि कऽ भेलै।''

हनुमानक उत्तरसँ अर्जुन असहमत होइत कहलखिन- ''तीरोक बनल पुल तँ ओहने मजगूत भऽ सकैत छलै।''

ऐ प्रश्नपर दुनूक बीच मतभेद भऽ गेलनि। अंतमे परीक्षाक नौबत आबि गेलै। दुनू गोटे समुद्रक कात पहुँचलाह। तरकशसँ तीर निकालि अर्जुन धनुषपर चढ़ा, समुद्रमे छोड़लनि। पुल बनलै। अपन विकराल रुप बना हनुमान पुलपर

कुदैक उपक्रम केलनि। अन्तर्यामी कृष्ण सभ देखैत रहथि। मने-मन सोचलनि जे महाभारतक नायक अर्जुन हारि रहल छथि। हुनक हारब हमर हारब हएत। संगहि महाभारतक लड़ाइ सेहो झूठ भऽ जेतैक। तँए प्रतिष्ठा बँचबैक घड़ी आबि गेल अछि। जै सोझे हनुमान पुलपर खसितथि तै सोझे कृष्ण अपन कन्हा पुलक तरमे लगा देलखिन। हनुमान कुदलाह। पुल तँ टूटैसँ बचि गेल मुदा कृष्णक करेज चहकि गेलनि। जइसँ पानिमे खून पसरए लगलै। खूनसँ रंगाइत पानि देख हनुमान धियान करए लगलथि जे एना किएक भऽ रहल छै। भजियबैत ओ ओइ जगहपर पहुँच कृष्णकेँ देखलखिन।
अचेत कृष्णकेँ देख, दुनू हाथ जोड़ि हनुमान क्षमा मंगलखिन।

व्यवहारिक

जीवनी आ अनाड़ी माने व्यवहारिक आ अव्यवहारिकक प्रश्न असान नै। ऐ विशाल संसारमे लाखो-करोड़ो ढंगक जिनगी बना लोक जीबैत अछि। एकक जिनगी दोसरसँ मिलबो करैत आ भिन्नो होइत। तँए एकक व्यवहारिक ज्ञान दोसराक लेल नीको होइत आ अधलो।

चारि गोट स्नातक महाविद्यालयसँ निकलि घर (गाम) जाइत रहथि। चारुकेँ अपन-अपन ज्ञानपर गर्व। दुपहर भऽ गेल। सभकेँ भुखो लगलनि। रास्तामे रुकि खाइक ओरियानमे चारु गोटे जुटि गेलाह। तर्कशास्त्री आँटा आनए दोकान गेल। पोलीथीनक झोरामे आँटा कीन अबैत छल। मनमे फुड़लै जे झोरा मजबुत अछि की नै। तथ्य जनैक लेल झोराकेँ हाथसँ दबलक। झोरा फाटि गेल। आँटा छिड़िया कऽ माटिमे मिल गेल। फेर घुरि कऽ चाउर कीन ओरिया कऽ नेने आएल।

कलाशास्त्री जारन आनए गेल। हरियर-हरियर सुन्दर गाछ देख मुग्ध भऽ गेल। गाछसँ सुखल जारन नै तोड़ि काँचे झाड़ी काटि कऽ नेने आएल। कहुना-कहुना कऽ तेसर पाक-शास्त्री वएह कँचका जारन पजारि बटलोही चढ़ौलक। अदहन जखन भेलै तँ चाउर लगौलक। कनियेँ कालक बाद बटलोहीमे चाउरो आ पानियो खुद-बुद करए लगल। बटलोहीमे खुद-बुद करैत देख पाक-शास्त्री मग्न भऽ गेल। चारिम जे व्याकरण जननिहार छल बटलोहीक खुद-बुद अवाज देख-सुनि व्याकरणक उच्चारणक हिसाबसँ गलत बुझि, तमसा कऽ ओकरा उल्टा देलक। भात चुल्हिमे चलि गेल। एक गोटे सभ तमाशा देखैत छल। चारुकेँ भुखल देख दया लगलै। ओ अपन मोटरीसँ नोन-सत्तू निकालि चारु गोटेकेँ खाइले दैत कहलक- “किताबी ज्ञानसँ व्यवहारिक अनुभवक मूल्य अधिक होइत।”

समर्पण

समुद्रसँ मिलैक लेल धार विदा भेल। रास्तामे बलुआही इलाका पड़ैत छल। जुआनीक जोशमे धार विदा तँ भेल मुदा रास्ताक बालू आगू बढ़ै ने दैत। सभ पानि सोंखि लैत। धारक सपना टूटए लगलैक। मुदा तैयो साहस कऽ धार अपन उद्गम स्त्रोतसँ जल लऽ लऽ दौड़ कऽ आगू बढ़ए चाहैत मुदा धारक सभ पानि बालू सोंखि लैत। जइसँ धार आगू बढ़ैमे असफल भऽ जाइत। झुंझला कऽ निराश भऽ धार बालूकेँ पूछलकै- ‘‘समुद्रमे मिलैक हमर सपना अहाँ नै पूर हुअए देब?’’

बालू उत्तर देलकै- ‘‘बलुआही इलाका होइत जाएब संभव नै अछि। अगर अहाँ अपना प्रियतमसँ मिलए चाहैत छी तँ अपन सम्पत्ति बादलकेँ सौंपि दियौक, तखने पहुँच पाएब।’’

अपन अस्तित्वकेँ समाप्त करैक अद्भुत समरपनक साहस हेबे ने करै। मुदा बालूक विचारमे गंभीरता छलैक। किछु काल विचारि धार समरपनक लेल तैयार भऽ गेल। तखन ओ पानिक बुन्नक रुपमे अपनाकेँ बदलि बादलक सवारीपर चढ़ि समुद्रमे जा मिलल।

स्त्रष्टाक समग्र रचना

सृष्टि निर्माणक काज सम्पन्न भऽ गेल। प्राणी सभकेँ बजा ब्रह्मा अपन-अपन कमीक पूर्ति करा लइले कहलखिन। सभ प्राणी अपन-अपन कमीक चरचा करए लगल। मुदा एक्के बेर जे सभ बाजए लगल तँ हल्लामे कियो ककरो बात सुनबे ने करैत। तखन सभकेँ शान्त करैत ब्रह्मा बेरा-बेरी बजैले कहलखिन। सबहक बात सुनि ब्रह्मा ककरो अठन्नी ककरो चौबन्नी, ककरो दस पैसी सुधार कऽ देलखिन।

अखन धरि मनुक्ख पछुआएले छल। पहिने ब्रह्मा नारीकेँ पूछलखिन- ‘‘अहाँमे की कमी रहि गेल अछि, बाजू?’’

तमतमाइत नारी कहलकनि- ‘‘हमरा तँ बड़ सुन्नर बनेलौं मुदा अपना सन दोसर नारीकेँ देख मनमे जलन हुअए लगैत अछि। तँए एक रंग दूटा नारी नै बनबयौक।’’

मुस्कुराइत ब्रह्माजी एकटा अएना आनि नारीक हाथमे दऽ देलखिन आ कहलखिन- ‘‘बस, एक्केटा सहेली अहाँ सन बनेलौं। जखन मन हुअए तखन आगूमे अएना रखि देख लेब। जँ सेहो देखैक मन नै हुअए तँ अएना देखबे ने करब।’’

देवता

मनुक्खक रोम-रोममे इश्वर परब्रह्म समाएल छथि। ककरो अहित करैक इच्छा करब अपना लेल पापकेँ बजाएब थिक। दधीचिक पुत्र पिप्लाद अपन माइक मुँहे अपन पिताक हड्डी देवता द्वारा मांगब आ ओइसँ बनाओल बज्रसँ अपन परान बचाएब सुनलनि। सुनिते पिप्लादकेँ देवताक प्रति असीम घृणा मनमे उठलनि। मने-मन सोचए लगलथि जे अपन स्वार्थ साधैले दोसरक प्राण हरब, कत्ते नीचता थिक। मनमे क्रोध जगलनि। पिताक बदला लेबा लेल पिप्पलाद तप करैक विचार केलनि।

पिप्पलाद तप शुरु केलनि। तप शुरु करिते मनक ताप कमए लगलनि। बहुत दिनक उपरान्त भगवान शिव प्रकट भऽ कहलखिन- “वर मांगू?”

प्रणाम कऽ पिप्पलाद शिवकेँ कहलखिन- “अपने अपन रुद्र रुप धारण कऽ ऐ देवता सभकेँ जरा भस्म कऽ दियौक।”

पिप्पलादक वर (बात) सुनि शिव स्तब्ध भऽ गेलाह। मुदा अपन वचन तँ पूरबै पड़तनि। तँए देवताकेँ जरबैक लेल तेसर आँखि खोलैक उपक्रम करए लगलथि। ऐ उपक्रमक आरंभेमे पिप्पलादक रोम-रोम जरए लगल। अपन अंगकेँ जरैत देख जोरसँ हल्ला करैत शिवकेँ कहए लगलखिन- “भगवान! ई की भऽ रहल अछि? देवताक बदला हम खुदे जरि रहल छी।”

मुस्की दैत शिव कहलखिन- “देवता अहाँक देहमे सन्हियाएल छथि। अवयवक शक्ति हुनके सामर्थ्य छियनि। देवता जरता आ अहाँ बँचल रहब से केना हएत? आगि लगौनिहार स्वयं सेहो जरैत अछि।”

पिप्पलाद अपन याचना घुमा लेलनि। तखन भगवान शिव कहलखिन- “देवता सभ त्यागक अवसर दऽ अहाँ पिताक काजकेँ गौरवान्वित केलनि। मरब तँ अनिवार्य थिक। ऐसँ ने अहाँक पिता बँचितथि आ ने वृत्तासुर राक्षस।”

पिप्पलादक भ्रम टूटि गेलनि। ओ आत्म कल्याण दिस मुड़ी गेलाह।

पाप आ पुण्य

अपन पोथी-पतरा उनटबैत चित्रगुप्त आसनपर बैसल छलाह। तै बीच दू गोटेकेँ यमदूत हुनका लग पेश केलक। पहिल व्यक्तिक परिचए दैत यमदूत कहलकनि- ‘‘ई नगरक सेठ छथि। हिनका घनक कोनो कमी नै छन्हि। खूब कमेबो केलनि आ मंदिर, धरमशाला सेहो बनौलनि।’’

कहि यमराज सेठकेँ कातमे बैसाए देलक। दोसरकेँ पेश करैत बाजल- ‘‘ई बड़ गरीब छथि। भरि पेट खेनाइयो ने होइत छन्हि। एक दिन खाइत रहथि कि एकटा भूखल कुत्ता लगमे आबि ठाढ़ भऽ गेलनि। भूखल कुत्ताकेँ देख थारीमे जे रोटी बँचल रहनि ओ ओकरा आगूमे दऽ देलखिन। अपने पानि पीब हाथ धोय लेलनि। आब अपने जे आज्ञा दिऐक।’’

यमदूतक ब्यान सुनि चित्रगुप्त पोथिओ देखैत आ विचारबो करथि। बड़ी काल धरि सोचैत-विचारैत निर्णए देलखिन- ‘‘सेठकेँ नरक आ गरीबकेँ स्वर्ग लऽ जाउ।’’

चित्रगुप्तक निर्णए सुनि यमराजो आ दुनू व्यक्तियो अचंभित भऽ गेल। तीनू गोटेकेँ अचंभित देख अपन स्पष्टीकरणमे चित्रगुप्त कहए लगलखिन- ‘‘गरीब आ निःसहाय लोकक शोषण सेठ केने अछि। ओइ निःसहाय लोकक विवशताक दुरुपयोग केने अछि। जइसँ अपनो एश-मौज केलक आ बचल सम्पत्तिक नाओं मात्र लोकेषणक पूर्ति हेतु व्यय केलक। तइमे लोकहितक कोन काज भेलै? ओइ मंदिर आ धरमशल्ला बनबैक पाछू ई भावना काज करै छलै जे लोक हमर प्रशंसा करए। मुदा पसेना चुबा कऽ जे गरीब कमेलक आ समए एलापर ओहो कुत्तेकेँ खुआ देलक। जँ ओकरा आरो अधिक धन रहितै तँ नै जानि कत्ते अभाव लोकक सेवा करैत।’’

परख

एकटा किसानकेँ चारिटा बेटा रहए। बेटा सबहक बुद्धि परखैले किसान सभकेँ बजा एक-एक आँजुर धान दऽ कहलक- ‘‘तूँ सभ अपन-अपन विचारसँ एकरा उपयोग करह।’’

धानकेँ कम बुझि जेठका बेटा आंगनमे छिड़िया देलक। चिड़ै सभ आबि बीछ-बीछ खा गेल। ओइ धानकेँ माझिल बेटा तरहत्थीपर लऽ-लऽ रगड़ि-रगड़ि, भुस्साकेँ मुँहसँ फूकि, खा गेल। बापक देल धानकेँ सम्पत्ति बुझि साँझिल बेटा कोहीमे रखि लेलक, जे जँ कहियो बाबू मंगताह तँ निकालि कऽ दऽ देबनि। छोटका बेटा, ओइ धानकेँ खेतमे बाउग कऽ देलक। जइसँ कएक बर बेसी धान उपजलै।

किछु दिनक बाद चारु बेटाकेँ बजा किसान पूछलक- ‘‘धान की भेल?’’

चारु बेटा अपन-अपन केलहा काज कहलकनि। चारु बेटाक काज देख किसान छोटका बेटाकेँ बुद्धियार बुझि परिवारक भार दैत कहलक- ‘‘परिवारमे एहने गुण अपनबए पड़ैत छै। एहने गुण अपनौलासँ परिवार सुसम्पन्न बनैत छै।’’

आलसी

एकटा गाछपर टिकुली आ मधुमाछी रहैत छलि। दुनूक बीच घनिष्ठ दोस्ती छलै। भरि दिन दुनू अपन जिनगीक लीलामे लागल रहैत छलि। अकलबेरामे दुनू आबि अपन सुख-दुखक गप-सप्प करैत छलि।

बरसातक समए एलै। सतैहिया लाधि देलकै। मधुमाछीले तँ अगहन आबि गेलै मुदा टिकुलीक लेल दुरकाल। भूखे-पियासे टिकुली घरक मोख लग मन्हुआएल बैसल छलि। मुँह सुखाएल आ चेहरा मुरुझाएल छलै। चरौर कए कऽ आबि मधुमाछी टिकुलीकेँ पूछलकै- ‘‘वहिन! एहेन सुन्नर समैमे एत्ते सोगाएल किएक बैसल छी?’’

मधुमाछीक बात सुनि कडुआएल मने टिकुली उत्तर देलकै- ‘‘वहिन! मौसमक सुन्नरतासँ पेटक आगि थोड़े मिझाइ छै। तीन दिनसँ कतौ निकलैक समैये ने भेटल, तँए भूखे तबाह छी।’’

उपदेश दैत मधुमाछी कहलकै- ‘‘कुसमए लेल किछु बचा कऽ राखक चाही।’’

‘‘कहलौं तँ वहिन ठीके मुदा बचा कऽ रखलासँ आलसियो भऽ जैतौं आ भूखलक नजरिमे चोरो होइतौं।’’

प्रेम

जखन परिवारमे पति-पत्नी आ बच्चा सबहक बीच सिनेह रहैत छै तखन परिवार स्वर्गोसँ सुन्दर बुझि पड़ैत छै। नमहरसँ नमहर विपत्ति परिवारमे किएक ने आबए मुदा ढंगसँ चललापर ओहो आसानीसँ निपटि जाइत छै।

एकटा छोट-छीन गरीब परिवार छल। दुइये परानी घरमे। सभ साल दुनू परानी -सुनिता आ सुशील- अपन विवाहोत्सव मनबैत। गरीब रहने तँ बहुत ताम-झामसँ उत्सव नै मनबैत मुदा मनबैत सभ साल छल। छोट-मोट उपहार एक-दोसरकेँ, यादि स्वरुप दैत छल। साले-साल ऐ परम्पराकेँ निमाहैत।

अहू बर्ख ओ दिन एलै। उत्सवक दिनसँ किछु पहिनहिसँ उपहारक योजना दुनू मने-मन बनबए लगल। मुदा दुनूक हाथ खाली। भरि पेट खेनाइयो ने पूरै तखन जमा कऽ की रखैत। मने-मन सुशील योजना बनौने जे पत्नीक केशमे लगबैले क्लीप नै छै तँए ऐ बेर वएह (क्लीप) उपहार देबैक। तहिना सुनितो सोचैत जे पति हाथक घड़ीक चेन पुरान भऽ गेल छन्हि तँए ऐ बेर चेन कीन कऽ देबनि। दुनू अपन-अपन जोगारमे। मुदा नाजायज कमाइ नै रहने जोगारे ने बैसै। उत्सवक दिन अबैमे एक दिन बाकी रहलै। अंतिम समैमे सुशील सोचलक जे आइ साँझमे घड़ी बेच क्लीप कीन लेब। सुनितो सोचलि जे अपन केश कटा कऽ बेच लेब तइमे घड़ीक चेन भऽ जाएत। साँझू पहर दुनू गोटे- फुट-फुट बाजार गेल। सुशील घड़ी बेच क्लीप कीन लेलक आ सुनिता केश बेच चेन कीन लेलक। खुशीसँ दुनू गोटे घर आबि अपन-अपन वस्तु -चेन आ क्लीप- ओरिया कऽ रखि लेलक।

सबेरे सुति उठि कऽ दुनू परानी हँसैत एक-दोसरकेँ उपहार दइले आगू बढ़ल। सुनिता टोपी पहिरने छलि। क्लीप निकालि सुशील सुनिताक टोपी हटा क्लीप लगबए चाहलक मुदा केशे नै। तहिना चेन निकालि सुनिता घड़ीमे लगबए चाहलनि तँ हाथमे घड़िये नै।

आमने-सामने दुनू ठाढ़। दुनूक मुँहसँ तँ किछु नै निकलैत मुदा दुनूक हृदेमे हर्ष-विस्मयक बीच घमासान लड़ाइ छिड़ गेल। अंतमे हृदए बाजल- ''जे सिनेह दूधक समुद्रमे झिलहोरि खेलैत अछि ओकरा लेल क्लीप आ चेनक कोन महत्व छै।''

हैरियट स्टो

अमर लेखिका हैरियट एलिजाबेथ स्टो विश्व-विख्यात पोथी, 'टाम काकाक कुटिया' लिखने छथि। जै समए ओ पोथी लिखैत रहथि ओइ समए ओ कठिन परिस्थितिमे जिनगी बितबैत रहथि। ओना अकसरहाँ लोक ऐ पोथीकेँ अमेरिकाक दास प्रथाक विरोधमे लिखल मानैत छथि।

अपना परिस्थितिक संबंधमे अपन भौजीकेँ कहलखिन- ''चुल्हि-चौकाक काज, नुआ-बस्तर धोनाइ, सिआइ केनाइ, जूता-चप्पल पॉलिस आ मरम्मत करब जिनगीक मुख्य काज अछि। बच्चा आ परिवारक सेवामे भरि दिन सिपाही जकाँ खटै छी। छोटका बच्चा लगमे सुतैत अछि तँए जाधरि ओ सुति नै रहैत अछि ताधरि किछु ने सोचि सकै छी आ ने लिख पबै छी। गरीबी आ परिवारक काज ऐ रुपे दबने अछि जइसँ समैये कम बँचैत अछि। मुदा तैयो एक-दू घंटा सुतैक समए काटि, अपने सन लोकक लेल, जनिका परिवारक अंग बुझैत छियनि, तिनकाले किछु लिख-पढ़ि लैत छी।''

हुनके लिखल पोथीसँ उत्तरी अमेरिका आ दछिनी अमेरिकामे दास प्रथाक खिलाप क्रान्ति भेल।

बुझैक ढंग

एकटा यात्री वृन्दावन विदा भेल। किछु दूर गेलापर रास्ताक बगलमे मीलक पत्थरपर नजरि पड़लै। ओइ मीलक पत्थरमे वृन्दावनक दूरी आ दिशा लिखल छलै। ओ यात्री ओतै अटकि बैस रहल आ बजए लगल- ''पाथरक अंकन तँ गल्ती नै भऽ सकैत अछि किएक तँ विश्वासी लोकक लिखल छिऐक। वृन्दावन तँ आबिये गेल छी, आगू बढ़ैक की प्रयोजन?''

थोड़े कालक बाद एकटा बुझनिहार आदमी ओइ रस्ते कतौ जाइत रहथि तँ सुनलखिन। मने-मन खूब हँसलथि। कनी-काल ठाढ़ भऽ हँसैत ओइ यात्रीकेँ कहलखिन- ''पाथरपर सिरिफ संकेतमात्र अछि। ऐठामसँ वृन्दावन बहुत दूर अछि। जँ अहाँ ओतए जाए चाहै छी तँ तुरन्ते सभ सामान समेट विदा भऽ जाउ नै तँ नै पहुँचब।''

भोला-भाला यात्री अपन भूल मानि विदा भेल।

एहेन बहुतो लोक छथि जे शास्त्रो पढ़ैत छथि, शास्त्रीय बातो सुनै छथि मुदा धरम धारण करैक रास्ता पकड़बे ने करैत छथि तखन ओ धर्म केना बुझथिन। जे धर्म की थिकैक?

श्रमिकक इज्जत

अपन संगी-साथीक संग नेपोलियन टहलैले जाइत रहथि। जेरगर रहने सौंसे रास्ता छेकाएल छलै। दोसर दिससँ एकटा घसबहिनी माथपर घासक बोझ नेने अबैत छलि। ओइ घसबहिनीपर सभसँ पहिल नजरि नेपोलियनक पड़लैक। ओ पाछू घुरि कऽ देखल। सौंसे रास्ता घेराएल छलै। अपन पैछला संगीक हाथ पकड़ि खिंचैत कहलखिन- ‘‘श्रमिकक सम्मान करु। एक भाग रास्ता खाली कऽ दियौ। यएह देशक अमूल्य संपत्ति थिक। एकरे बले कोनो देशक उन्नति होइत छै।’’

घसबहिनी टपि गेलि। थोड़े आगू बढ़लापर पुनः नेपोलियन संगी सभसँ कहलखिन- ‘‘सद्प्रवृत्तिकेँ बढ़ेबाक चाही। ओकरा जत्ते महत्व देबै ओत्ते जन-उत्साह जगतै। जइसँ देशक कल्याण हेतै।’’

वंश

एक दिन महान् विचारक सिसरोकेँ एकटा धनिक सरदारसँ कोनो बाते कहा-सुनी हुअए लगलनि। ने ओ धनिक पाछू हटैले तैयार आ ने सिसरो। दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ीक नौबत आबए लगलै। खिसिया कऽ ओ धनिक सिसरोकेँ कहलक- ‘‘तूँ नीच कुलक छैँ, तँए तोरा-हमरा कथीक बराबरी?’’ ऐ बातसँ सिसरो बिचलित नै भऽ साहससँ उत्तर देलखिन- ‘‘हमरा कुलक कुलीनता हमरासँ शुरु हएत जबकि तोरा कुलक कुलीनता तोरासँ अंत हेतौ।’’
सभ्यता आ कुलीनता जन्मसँ नै बल्कि चरित्र आ कर्तव्यसँ पैदा लैत अछि।

तियाग

सत्संग, भागवत आ प्रवचनमे बेर-बेर तियागक महिमाक चर्चा होइत। त्यागकेँ इश्वर प्राप्तिक रास्ता बताओल जाइत। बेर-बेर जरायुध ऐ चरचाकेँ सुनथि। तँए मनमे बिसवास भऽ गेलनि जे सत्ते तियागसँ इश्वर प्राप्ति होइत। जरायुध अपन सभ सम्पत्ति दान कऽ देलखिन। मुदा दान केलो उपरान्त हुनका ने मनमे शान्ति एलनि आ ने इश्वर भेटलनि। निराश भऽ जरायुध महाज्ञानी शुकदेव लग पहुँच पूछल- ''जनक तँ संग्रही छलाह मुदा तैयो हुनका ब्रह्मज्ञान प्राप्ति भऽ गेल छलनि आ हम सभ कुछ तियागियोकेँ ने ब्रह्मज्ञान पाबि सकलौं आ ने शान्ति भेटल। एकर की कारण छै?''

धियानसँ जरायुधक बात सुनि सुकदेव उत्तर देलखिन- ''आवश्यक वस्तुकेँ परमार्थमे लगा देब तँ नैतिक आ सामाजिक कर्तव्य बुझल जाइत। आध्यात्मिक स्तरक त्यागमे सभ वस्तुक ममत्व छोड़ि ओकरा इश्वरक घरोहर बुझए पड़त। शरीर आ मन सेहो सम्पदा छी। ओकरा इश्वरक अमानत मानि हुनके इच्छानुसार केलापर बुझबै जे सही त्याग भेल आ मोक्षक रास्ता भेटत।''

सद्विचार

एकटा न्यायप्रिय राजा साधुक भेषमे अपन प्रजाक कुशल-क्षेम बुझैक लेल निकललथि। जहिया कहियो ओ राजा साधुक भेषमे निकलथि तहिया सिर्फ एकटा मंत्रीक चेलाक रुपमे संग कऽ लथि। ने अंगरक्षक रहनि आ ने अमिला-फमिला। आ ने ककरो जानकारी देथिन।

बहुतो गोटेसँ सम्पर्क करैत राजा एकटा बगीचामे पहुँचलाह। ओइ बगीचामे एकटा वृद्ध किसान नवका -बच्चा- गाछ रोपैत रहथि। गाछ देख राजा किसानकेँ पूछलखिन- ''ई तँ अखरोटक गाछ बुझि पड़ैत अछि।''

मुस्कुराइत किसान कहलकनि- ''हँ भैया! अहाँक अनुमान बिलकुल ठीक अछि।''

''बीस-पच्चीस बर्खक गाछ भेलापर अखरोट फड़ैत छै, ताधरि अहाँ जीबते रहब?''

''ऐ बगीचाकेँ हमर बाप-दादा लगौने छथि। खून-पसीना एक कए कऽ एकरा पटौलनि, देखभाल केलनि। जेकर फड़ हम सभ खाइ छी। तँए आब हमरो कर्तव्य बनैत अछि जे ओते हमहूँ रोपि दिऐक। अपनेटा लऽ गाछ लगौनाइ तँ स्वार्थक बात भऽ जाइत छै। हम ई नै सोचै छी जे आइ ऐ गाछक उपयोगिता की छै? भविष्यमे दोसरकेँ फल दै वस यएह इच्छा अछि।''

किसानक विचार सुनि राजा मंत्रीकेँ कहलखिन- ''जँ एहिना सभ बुझए लगै जे हमरा लगबैसँ मतलब अछि तँ समाजो आ परिवारोमे सद्विचार पसरि जाएत। जाधरि समाजमे सद्-वृत्तिक प्रसार नै हएत ताधरि नीक समाज बनब, मात्र कल्पना रहत।''

साहस

सोवियत संघक नेता लेनिनपर, एकटा सिरफिरा पेस्तौल चला देलकनि गोली तँ निकलि गेलनि मुदा छर्रा गरदनिमे फँसले रहि गेलनि। तै बीच देशमे एकटा पुल टुटि गेलै। पुल मुख्य मार्गमे छलै। तँए जत्ते जल्दी भऽ सकैत ओते जल्दी पुल बनाएब छलैक। आपात् स्थिति घोषित कऽ ओइ पुलक मरम्मत युद्धस्तरपर हुअए लगलैक। देशप्रेमी जनता ओइ काजमे लगि गेल। लेनिन सेहो ओइ काजमे जुटल। श्रमिके जकाँ लेनिनो काज करैत रहथि। गरदनिमे गोली रहनौ ओ बीस-बीस घंटा काज करैत रहथि। काज करैत देख एकटा श्रमिक पूछलकनि तखन ओ कहलखिन- ‘‘अगर हम अगुआ भऽ काजमे पाछू रहब तखन जन उत्साह केना बढ़तै? जकर जरुरत देशमे अछि।’’

बरदास्त

अब्राहम लिंकन अमेरिकाक राष्ट्रपति रहथि। हुनक पत्नी चिड़चिड़ा आ कठोर स्वभावक छेलखिन। जइसँ लिंकनक परिवारिक जीवन दुःखमय छलनि। कएक दिन एहेन होइत छलै जे जखन परिवारक सभ सुति रहैत छल तखन लिंकन चुपचाप पैछला दरवाजासँ आबि सुइत रहैत छलाह। आ सुरुज उगैसँ पहिनहि तैयार भऽ निकलि ऑफिस चलि जाइत छलाह। दिन भरि अपन कार्यमे मस्त भऽ बीता लैत छलाह। संगी-साथीक संग हँसी-मजाक कऽ मन बहला लैत छलाह।

एक दिन परिवारक एकटा नोकरकेँ हुनक पत्नी गारिओ पढ़लखिन आ फटकारबो केलखिन। ओइ नोकरकेँ बड़ दुख भेलै। ओ कोठीसँ निकलि सोझे लिंकनक ऑफिस जा सभ बात कहलकनि। नोकरक सभ बात सुनि लिंकन कहलखिन- “ऐ भले आदमी! पनरह बर्खसँ हम ऐ परिस्थितिसँ मुकाबला करैत शान्तिसँ रहैत एलौं। आ अहाँ एक्के दिनक फटकारमे एत्ते दुखी भऽ गेलौं। बरदास्त कऽ लिअ।”

अचताइत-पचताइत बेचारा नोकर लिंकनक बात मानि लेलक।

भूल

प्रख्यात दार्शनिक वरट्रेण्ड रसेल अपन जीवनीमे लिखने छथि, जे हमर पहिल स्त्री सचमुच विचारवान छलीह। जखन ओ मन पड़ै छथि तखन हृदए दहकि जाइत अछि। दुनू गोटेक बीच अगाध प्रेम छल। एक दिन कोनो बाते दुनू गोटेक बीच अनबन भऽ गेल। खिसिया कऽ हम बिनु खेनहि ऑफिस विदा भऽ गेलौं। रास्तामे एकाएक मनमे उपकल जे अपन क्रोधक बात पत्नीकेँ कहि दिअनि। रस्तेसँ घुरि गेलौं। घुरि कऽ घर एलापर पत्नी घुरैक कारण पूछलनि। हमर क्रोध आरो उग्र भऽ गेल। हम कहलियनि- ‘‘आब अहाँले हमरा हृदेमे मिसिओ भरि जगह नै अछि।’’

पतिक बात सुनि पत्नी स्तब्ध भऽ गेल मुदा किछु बाजलि नै। बेचारीक हृदेमे ई बात जरुर पकड़ि लेलकनि जे हमरा ओ -पति- कपटी बुझैत छथि। आइ धरि हम भ्रममे छलौं। दुनूक बीच खाइ बढ़ैत गेलै। होइत-होइत पति पत्नीकेँ तलाक दऽ देलक। बेचारी रसेलक घरसँ सदा-सदाक लेल चलि गेल।

धैर्य

इंग्लैंडक प्रसिद्ध विद्वान टामस कूपर अंग्रेजीक शब्दकोष तैयार करैत रहथि। काजमे कूपर तेना ने लीन भऽ गेल रहथि जे घरक कोनो सुधिये-बुधिये ने रहनि। पत्नीकेँ घरक सरंजाम जुटबैमे परेशानी होइन, तँए ओ पतिपर खूब बिगड़थि। मुदा तकर कोनो असरि कूपरकेँ नै होइन। एक दिन कूपर कतौ गेल रहथि, तै बीच पत्नी खिसिया कऽ शब्दकोषक सभ कॉपी जरा देलकनि। जखन ओ घुरि कऽ एलाह तँ देखलखिन जे बरसोक मेहनत जरि गेल। मुदा धैर्य एत्ते प्रबल रहनि जे एको मिसिया तामस नै उठलनि। ने एकोरत्ती पत्नीपर बिगड़लखिन आ ने अफसोस केलनि। मुस्कुराइत सिर्फ एतबे कहलखिन- ‘‘आठ बर्खक काज अहाँ आरो बढ़ा देलौं।’’

मनुष्यक मूल्य

एक दिन सिकन्दर आ अरस्तू कतौ जाइत रहथि। रास्तामे एकटा नदी छल। जै नदीमे नाहपर पार हुअए पड़ै छलै। पहिने अरस्तू पार हुअ चहै छलाह मुदा सिकन्दर हुनका रोकि अपने पार भेलाह। जखन सिकन्दर दोसर पार गेलाह तखन अरस्तूकेँ पार होइले कहलखिन। पार भेलापर अरस्तू सिकन्दरकेँ पूछलखिन- ''पहिने हमरा पार होइसँ किएक मना केलौं?''

हँसैत सिकन्दर उत्तर देलखिन- ''अगर हम नदीमे डूबि जैतौं तैयो अहाँ हमरा सन-सन दशो सिकन्दर पैदा कऽ सकै छी मुदा जँ अहाँ डूबि जैतौं तँ हमरा सन-सन दशोटा सिकन्दर बुत्ते एकटा अरस्तू नै बनाओल भऽ सकैत अछि।''

सिकन्दरक विचार सुनि अरस्तू अपन जिनगीक मूल्य बुझलनि।

मदति नै चाही

मिश्रमे एकटा किलेन्थिस नाओंक लड़का एथेंसक तत्वबेत्ता जीनोक पाठशालामे पढ़ैत छल। किलेन्थिस बड़ गरीब छल। ने खाइक कोनो ठेकान आ ने देह झँपैक लेल वस्त्रक। मुदा पाठशालामे सही समैपर फीस दऽ दैत। पढ़ैमे चन्सगर रहने सुभ्यस्त परिवार सबहक विद्यार्थी ओकरासँ इर्ष्या करैत। किलेन्थिसकेँ दबबैले एकटा षड़यंत्र ओ सभ रचलक। षड़यंत्र यएह जे किलेन्थिस पाठशालामे जे फीस दैत अछि ओ चोरा कऽ अनैत अछि। चोरीक मुकदमा किलेन्थिसपर भेलै। पुलिस पकड़ि कऽ जहल लऽ गेलै। जखन ओकरा न्यायालयमे हाजिर कएल गेलै तखन ओ जजकेँ कहलक- ''हम निरदोस छी। हमरा फँसाओल गेल अछि। तँए हम अपन बयानक लेल दूटा गवाही न्यायालयमे देब।''

जजक आदेशसँ दुनू गवाही बजाओल गेल। पहिल गवाही एकटा माली छल आ दोसर वृद्धा औरत। मालीसँ पूछल गेल। माली कहलकै- ''सभ दिन ई लड़का हमरा बगीचामे आबि इनारसँ पानि भरि-भरि गाछ पटा दैत अछि। जकरा बदलामे हम मजूरी दैत छिऐक।''

तखन वृद्धासँ पूछल गेल। ओ वृद्धा कहलकै- ''हम वृद्धा छी। हमरा परिवारमे कियो काज करैबला नै अछि। सभ दिन ई बच्चा आबि गहूम पीस दैत अछि, जकरा बदलामे मजूरी दैत छिऐक।''

गवाहीक बयान सुनि जज मुकदमा समाप्त करैत सरकारी सहायतासँ पढ़ैक लेल सेहो आदेश देलक। परन्तु किलेन्थिस सरकारी सहायता लइसँ इनकार करैत कहलक- ''हम स्वयं मेहनत कऽ पढ़ब तँए हमरा दान नै चाही। हमरा माता-पिता कहने छथि जे मनुष्यकेँ स्वावलंबी बनि जीबाक चाही।''

मेहनतक दरद

एकटा लोहार छल। मेहनत आ लूरिसँ परिवार नीक-नहाँति चलबैत छल। मुदा बेटा जेहने खरचीला तेहने कामचोर छलैक। बेटाक चालि-चलनि देख लोहारकेँ बड़ दुख होय। सभ दिन दशटा गारि आ फज्झति बेटाकेँ करए मुदा तैयो बेटा लेल धनि सन। कोनो गम नै। लोहार सोचलक जे ई एना नै मानत। जाबे एकरा खर्च करैले पाइ देनाइ नै बन्न कऽ देबै ताबे एहिना करैत रहत। दोसर दिनसँ पाइ देब बन्न कऽ कहलकै- "अपन मेहनतसँ चारियोटा चौबन्नी कमा कऽ ला तखन खर्च देबौ। नै तँ एक्को पाइ देखब सपना भऽ जेतौ।"

बापक बात सुनि बेटा कमाइक प्रयास करए लगल। मुदा लूरिक दुआरे हेबे ने करै। अपन पैछला रखल चारिटा चौबन्नी नेने पिता लग आबि कऽ देलक। पिता भाथी पजारि हँसुआ बनबैत छल। चारु चौबन्नीकेँ आगिमे दऽ कहलकै- "ई पाइ तोहर कमाएल नै छियौ।"

पिताक बात सुनि बेटा लजाइत ओतएसँ ससरि गेल।

दोसर दिन बेटाकेँ कमाइक हिम्मते ने होय। चुपचाप माएसँ चारिटा चौबन्नी मंगलक। माए देलकै। चारु चौबन्नी नेने बेटा बाप लग पहुँचल। बेटाक मुँहे देख बाप बुझि गेल। चारु चौबन्नी बेटा बापकेँ देलक। भीतरसँ बापकेँ तामस रहबे करै। ओ चारु चौबन्नी हाथमे लऽ पुनः आगिमे फेक देलक।

पिताक काज देख बेटा बुझलक जे बिना कमेने काज नै चलत। तखन ओ मेहनत करए लगल। तेसर दिन चारिटा चौबन्नी बापक हाथमे देलक। चारू चौबन्नीकेँ लोहार पहिलुके जकाँ आगिमे फेकए लगल। आकि हल्ला करैत बेटा बापक हाथ पकड़ि कहलक- "बाबू ई हमर मेहनतक पाइ छी। एकरा किअए बेदरदी जकाँ नष्ट करैत छिऐ?"

बाप बुझि गेल। मुस्कुराइत बेटाकेँ कहए लगल- "बेटा! आब तूँ बुझलेँ जे मेहनतक कमाइक दरद केहेन होइ छै। जाधरि अन्ट-सन्टमे हमर कमेलहा खरच करै छलेँ ताबे हमरो एहने दरद होइ छलए।"

पिताक बात बेटा बुझि गेल। तखने सप्पत खेलक जे एक्को पाइ फालतू खर्च नै करब।

मैक्सिम गोर्की

बच्चेसँ मैक्सिम गोर्की निराश्रित भऽ गेल रहथि। ओइ दशामे जीबैक लेल झाड़ू लगौनाइसँ लऽ कऽ चौका-बरतन, चौकीदारी सभ केलनि। कएक दिन तँ कूड़ा-कचड़ाक ढेरीसँ काजक वस्तु ताकि-ताकि निकालि, बेच कऽ अपनो आ बूढ़ि नानीक पेटक आगि मुझबथि। एहेन परिस्थितिमे पढ़ब-लिखब असाघ्य कार्य थिक। एहेन असाध्य परिस्थितिसँ मुकाबला कऽ अनुकूल बनौनिहार मैक्सिम गोर्कीयो भेलाह।

रद्दी-रद्दी पत्रिका, फाटल-पुरान अखबार सभ एकत्रित कऽ पढ़नाइ सिखलनि। जखन पढ़ैक जिज्ञासा बढ़लनि तखन समए बचा कऽ वाचनालय जाए लगलाह। रसे-रसे लिखैक अभ्यास सेहो करए लगलथि। कोनो-कोनो बहाना बना साहित्यकार सभसँ संबंध बनबए लगलथि। जे किछु ओ -गोर्की- लिखथि ओकरा साहित्यकार सभसँ सुधार करबथि।

वएह मैक्सिम गोर्की रुसक महान् साहित्यकार भेलाह। अन्यायी शासनक विरुद्ध जनताक अधिकारक लेल सिर्फ लिखबे टा नै करथि बल्कि हुनका सबहक बीच जा संगठित आ संघर्षक नेतृत्व सेहो करथि। जखन हुनकर लिखल किताब तेजीसँ बिकए लगल तखन ओ अपन खर्च निकालि बाकी सभ पाइ संगठन चलबैले दऽ देथिन।

मूलधन

एकटा बृद्ध पिता, तीन बरखक लेल तीर्थाटन करए निकलए चाहथि। निकलैसँ पहिने चारु बेटाकेँ बजा अपन सभ पूँजी बरोबरि कऽ बाँटि कहलखिन- ''तीन सालक लेल हम तीर्थाटन करए जा रहल छी। अगर जीबैत घुमलौं तँ अहाँ सभ पूँजी घुरा देब, नै तँ कोनो बाते नै।''

अपन हिस्सा रुपैयाकेँ जेठका बेटा सुरक्षित रखि पिताक प्रतीक्षा करए लगल। मझिला बेटा सूदपर लगा देलक। सझिला एश-मौजमे फूँकि देलक। छोटका ओकरा पूँजी बुझि व्यवसाय -कारोवार- करए लगल।

तीन सालक बाद पिता आएल। चारुसँ पूँजी आपस मंगलक। घरसँ आनि जेठका ओहिना रुपैया घुरा देलक। मझिला सूद सहित मूलधन घुरौलक। सझिला तँ खर्च कऽ नेने छल तँए अगर-मगर करैत चुप भऽ गेल। छोटका व्यवसायसँ खूब कमेने छल तँए चारि गुणा घुमौलक।

चारिम माने छोटका बेटाकेँ प्रशंसा करैत पिता कहलक- ''रुपैया तँ वियाजोपर लगा बढ़ाओल जा सकैत अछि मुदा एहेन काज अधिक पूँजीबलाक छिऐ। मुदा जे अपने पूँजी दुआरे बेरोजगार अछि, ओकराले नै। ओकरा तँ जएह पूँजी छै ओइमे अपन श्रमक संग जोड़ि जिनगीकेँ ठाढ़ करए पड़तै। ताहूमे परिवारक दायित्वबलाकेँ आरो सोचि-विचारि इमनदारीसँ चलए पड़तै। तखने परिवार चैनसँ चलि सकै छै।''

कपटी दोस्त

एकटा सज्जन खढ़िया छल। ओ खढ़िया कतेकोसँ दोस्ती केलक। दोस्ती ऐ दुआरे करैत जे बेरपर हमहूँ मदति करबै आ हमरो करत। एक दिन शिकारीक कुत्ता ओकरा पकड़ैले खेहारलक। खढ़िया भागल। भागल-भागल अपन दोस्त गाए लग पहुँच, कहलकै- ‘‘अहाँ हमर पुरान दोस छी। कुत्ता हमरा रबारने अबैए। अहाँ ओकरा अपन सींगसँ मारि कऽ भगा दियौ, जइसँ हमर जान बचि जाएत।’’

खढ़ियाक बात सुनि गाए कहलकै- ‘‘हमरा घरपर जाइक समए भऽ गेल। बच्चा डिरियाइत हएत। आब एक्को क्षण ऐठाम नै अँटकब।’’

गाएक बात सुनि खढ़िया निराश भऽ गेल। कुत्ता सेहो पाछूसँ अबिते रहए। ओ खढ़िया ओइठामसँ पड़ाएल घोड़ा लग पहुँचल। घोड़ो पुरान दोस्त खढ़ियाक छलैक। घोड़ा लग पहुँच खढ़िया कहलकै- ‘‘दोस अहाँ अपना पीठपर बैसाए लिअ। जइसँ हमरा ओइ कुत्तासँ जान बँचि जाएत।’’

घोड़ा कहलकै- ‘‘हमरा पीट्ठीपर केना बैसब? हम तँ बैसबे बिसरि गेलौं।’’

घोड़ाक बात सुनि खढ़िया निराश भऽ पड़ाएल। जाइत-जाइत गदहा लग पहुँच कहलकै- ‘‘दोस! हम मुसीबतमे पड़ि गेल छी। अहाँ दुलकी चलब जनै छी। कुत्ताकेँ मारि कऽ भगा दियौ, जइसँ हमर जान बँचि जाएत।’’

खढ़ियाक बात सुनि गधा कहलकै- ‘‘घरपर जाइमे देरी हएत तँ मालिक मारत। तँए हम जाइ छी।’’

फेर खढ़िया भागल। जाइत-जाइत बकरी लग पहुँच कहलकै- ‘‘दोस! हम मरि रहल छी। अहाँ जान बचाउ।’’

अपन ओकाइत देखैत बकरी उत्तर देलकै- ‘‘दोस! झब दे ऐठामसँ दुनू गोटे भागू नै तँ हमहूँ खतरामे पड़ि जाएब।’’

बकरीक बात सुनि खढ़िया आरो निराश भऽ गेल। मनमे एलै जे अनका भरोसे जीब बेकार छी। अपने बूत्ते अपन दुख मेटा सकै छी। भलहिं मन-मुताबिक

जिनगी नै जीब सकी। तखन खढ़िया छाती मजगूत कऽ पड़ाएल। पड़ाएल-पड़ाएल एकटा झारीमे नुका रहल। कुत्ता देखबे ने केलकै। दौड़ल आगू बढ़ि गेल। खढ़ियाक जान बँचि गेलै।

भीख

एकटा मच्छर मधुमाछी छत्ता लग पहुँचल। छत्तामे ढेरो माछी छलै। छत्ता लग बैस मच्छर माछीकेँ कहलकै- ‘‘हम संगीत विद्यामे निपुण छी। अहूँ सभ संगीत सीखू। हम सिखा देब। बदलामे थोड़े-थोड़े मधु देब जइसँ हमरो जिनगी चलत।’’

मधुमाछी सभ अपनामे विचार करए लगल। मुदा बिना रानी माछीक विचारसँ कियो किछु नै कऽ सकैत, तँए रानीसँ पूछब जरुरी छलै। सभ विचारि एकटा माछीकेँ रानी लग पठौलक। रानी माछी सभ बात सुनि कहलकै- ‘‘जहिना संगीत-शास्त्रक ज्ञाता मच्छर भीख मंगैले अपना ऐठाम आएल अछि तहिना जँ हमहूँ सभ मेहनत छोड़ि देब तँ ओकरे जकाँ दशा हएत। तँए मेहनतक संस्कार छोड़ि सस्ता संस्कार अपनौनाइ मुरुखपना हएत। अगर अहूँ सभकेँ संगीतक सख होइए तँ मेहनतो करु आ बैसारीमे संगीतों सीखू।’’

भगवान

सिद्ध पुरुष भऽ कबीर प्रख्यात भऽ गेल छलाह। दूर-दूरसँ जिज्ञासु सभ आबि-आबि दर्शनो करैत आ उपदेशो सुनैत। मुदा कबीर अपन व्यवसाय- कपड़ा बुनब नै छोड़लनि। कपड़ो बुनथि आ सत्संगो करथि। एकटा जिज्ञासु कबीरक व्यवसाय देख पूछलकनि- ‘‘जाधरि अपने साधारण छलौं ताधरि कपड़ा बुनब उचित छल मुदा आब तँ सिद्ध-पुरुष भऽ गेलिऐक तखन कपड़ा किएक बुनै छी?’’

जिज्ञासुक विचार सुनि मुस्कुराइत कबीर उत्तर देलखिन- ‘‘पहिने पेटक लेल कपड़ा बुनैत छलौं। मुदा आब जन-समाजमे समाएल भगवानक देह ढकैक लेल आ अपन मनोयोगक साधनाक लेल बुनैत छी।’’

एक्के काज रहितो दृष्टिकोणक भिन्नताक उत्पन्न होइबला अंतरकेँ बुझलासँ जिज्ञासुक समाधान भऽ गेलनि।

एकाग्रचित

इंग्लैडक इतिहासमे अल्फ्रेडक नाओ इज्जतक संग लेल जाइत अछि। ओ अनेको साहसी काज प्रजाले केलनि। तँए हुनका महान् *अल्फेड, अल्फ्रेड द ग्रेट* नाओंसँ इतिहासमे चरचा अछि।

शुरुमे अल्फ्रेड साधारण राजा जकाँ क्रिया-कलाप करैत छलाह। जहिना बाप-दादाक अमलदारीमे चलैत छल तहिना। खेनाइ-पीनाइ, एश-मौज केनाइ यएह जिनगी छलनि। जइसँ एक दिन एहेन भेलै जे हुनकर कोढ़िपना दुश्मनक लेल बरदान भऽ गलैक। दुश्मन आक्रमण कऽ अल्फ्रेडकेँ सत्तासँ भगा देलक। नुका कऽ ओ एकटा किसानक ऐठाम नोकरी करए लगल। बरतन माँजब, पानि भरब आ चौकाक काज अल्फ्रेड करए लगल। नमहर किसान रहने अल्फ्रेडक देख-रेख हुनकर पत्नी करैत छलीह।

एक दिन ओ कोनो काजे बाहर जाइत छलीह। बटलोहीमे दालि चुल्हिपर चढ़ल छलै। औरत अल्फ्रेडकेँ कहि देलक जे दालिपर धियान राखब। अल्फ्रेड चुल्हि लग बैस अपन जिनगीक संबंधमे सोचए लगल। सोचैमे एत्ते मग्न भऽ गेल जे बटलोहीक दालिपर धियाने ने रहलै। बटलोहिक सभ दालि जरि गेलै। जखन ओ औरत घुरि कऽ अएलि तँ देखलक जे बटलोहिक सभ दालि जरि गेल अछि।

क्रोधसँ अल्फ्रेडकेँ कहलक- "अरे मुर्ख युवक! बुझि पड़ैए जे तोरापर अल्फ्रेडक छाप पड़ल छौ। जहिना ओकर दशा भेलै तहिना तोरो हेतौ। जे काज करैछँ ओकरा एकाग्रचित भऽ कर।"

बेचारी औरतकेँ की पता जे जकरा कहै छिऐ ओ वएह छी। मुदा अल्फ्रेड चौंक गेल। अपन गलतीक भाँज लगबए लगल। मने-मन ओ संकल्प केलक जे आइसँ जे काज करब ओ एकाग्रचित भऽ करब। सिर्फ कल्पने केलासँ नै हएत। अल्फ्रेड नोकरी छोड़ि देलक। पुनः आबि अपन सहयोगी सभसँ भेँट कऽ धनो आ आदमियोक संग्रह करए लगल। शक्ति बढ़लै। तखन ओ

दुश्मनपर चढ़ाइ केलक। दुश्मनकेँ हरौलक। पुनः सत्तासीन भेल। सत्तसीन भेलापर पैघ-पैघ काज कऽ महान भेल।

सीखैक जिज्ञासा

महादेव गोविन्द रानाडे दछिन भारतक रहथि। ओ बंगला भाषा नै जनैत रहथि। एक दिन रानाडे कलकत्ता गेलाह। कलकत्तामे अपन काज-सभ निपटा आपस होइले गाड़ी पकड़ए स्टेशन एलाह तँ एकटा बंगला अखवार कीन लेलनि। बंगला अखवार देख आश्चर्यसँ पत्नी कहलकनि- ‘‘अहाँ तँ बंगला नै जनै छी तखन अनेरे ई अखवार किएक कीन लेलौंहें?’’

मुस्कुराइत रानाडे जबाब देलखिन- ‘‘दू दिनक गाड़ी यात्रा अछि। आसानीसँ बंगला सीख लेब।’’

नीक-नहाँति रानाडे बंगला लिपि आ शब्द गठनपर धियान दऽ सीखए लगलथि। पूना पहुँच पत्नीकेँ धुर-झार अखवार पढ़ि कऽ सुनबए लगलखिन। एहन छलनि साठि वर्षीए रानाडेक मनोयोग। तँए अंतिम समए धरि हर मनुष्यकेँ सीखैक जिज्ञासा रहक चाही।

अनुभव

व्यक्ति अपन अनुभवसँ सीखबो करैत अछि आ दोसरोक लेल दिशा निर्धारित करैत अछि। एक दिन झमझमौआ बरखा होइत रहए। मेधो गरजै। बिजलोको चमकै। तेज हवो बहै। ओइ समए रास्तापर भगैत एक आदमीक मृत्यु भऽ गेलै। बरखा छुटलै। लग-पासक लोक जखन निकलक तँ रास्तापर ओइ आदमीकेँ देखलक। चारु भरसँ लोक जमा भऽ कियो कहै- ‘‘बादलक आवाजसँ मृत्यु भेलै।’’ तँ कियो किछु कहै आ कियो किछु।

ओइ समए एक अनुभवी आदमी सेहो पहुँचलथि। ओ कहलखिन- ‘‘जँ आवाजसँ मृत्यु होइत तँ बहुतो लोक आवाज सुनलक। सबहक होइतै। तँए मृत्यु आवाजसँ नै लगमे ठनका गिरलासँ भेल।’’

असिरवादक विरोध

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर अभाव आ गरीबीक बीच पढ़ि पचास टाकाक मासिक नोकरी शुरु केलनि। हुनक सफलता देख कुटुम्ब-परिवार सभ असिरवाद देमए पहुँचए लगलनि। एकटा कुटुम्ब कहलकनि- ‘‘भगवानक दयासँ अहाँक दुख मेटा गेल। आब आरामसँ रहू आ चैनसँ जिनगी बिताउ।’’

ई असिरवाद सुनिते विद्यासागरक आखिसँ नोर खसए लगलनि। नोर पोछैत कहलखिन- ‘‘जै अध्यवसायिक बले हम ओहन भीषण परिस्थितिक मुकावला केलौं ओकरे छोड़ि दइले कहै छी। अहाँकेँ ई कहैक चाहै छल जे जै गरीबीक कष्ट स्वयं अनुभव केलौं ओइ परिस्थितिकेँ बिसरु नै। अपन असाध्य श्रमसँ ओइ अवरुद्ध रास्ताकेँ साफ करु।’’

धर्मक असल रुप

श्रावस्तीक सम्राट चन्द्रचूड़कँ अनेक धर्म आ ओकर प्रवक्ता सभसँ नीक लगाव छलनि। राज-काजसँ जे समए बचनि ओकरा ओ धर्मेक अध्ययनो आ सत्संगेमे बितबथि। ई क्रम बहुत दिनसँ चलि अबैत छल। एक दिन ओ असमंजसमे पड़ि गेलाह। मोनमे एलनि जे जखन धर्म मनुक्खक कल्याण करैत अछि तखन एतेक मतभेद एक दोसर प्रवक्तामे किएक अछि?

अपन समस्याक समाधानक लेल चन्द्रचूड़ भगवान बुद्ध लग पहुँचलाह। ओइठाम ओ अपन बात बुद्धकँ कहलखिन। चन्द्रचूड़क बात सुनि बुद्धदेव हँसए लगलखिन। सत्कारपूर्वक हुनका ठहरै लऽ कहि दोसर दिन भिनसरे समाधानक बचन देलखिन। एकटा हाथी आ पाँचटा आन्हर ओ जुटौलनि।

दोसर दिन भिनसरे तथागत -वुद्धदेव- चन्द्रचूड़कँ संग केने ओइ हाथी आ अन्हरा लग पहुँचलथि। एकाएकी ओइ अन्हरा सभकँ हाथी छुबि ओकर स्वरुप बुझबैले कहलखिन। बेरा-बेरी ओ अन्हरा सभ हाथीकँ छुबि-छुबि देखए लगल। जे जे अंग हाथीक छुलक ओ ओहने स्वरुप हाथीक बतबए लगलनि। कियो खूटा जकाँ तँ कियो सूप जकाँ तँ कियो डोरी जकाँ तँ कियो टीला जकाँ कहलकनि।

सबहक बात सुनि तथागत चन्द्रचूड़कँ कहलखिन- ‘‘राजन! सम्प्रदाय अपन सीमित क्षमताक अनुरुप धर्मक एकांकी व्याख्या करैत अछि। अपन-अपन मान्यताक प्रति जिद्द धऽ अपनेमे सभ लड़ैत छथि। जहिना एक्केटा हाथीक स्वरुप पाँचो अन्हरा पाँच रंगक कहलक, तहिना धरमोक व्याख्या करैबला सभ करैत छथि। धर्म तँ समता, सहिष्णुता, उदारता आ सज्जनतामे सन्निहित अछि।’’

सौन्दर्य

संगीतकार गाल्फर्ड लग पहुँच एकटा शिष्या अपन मनक व्यथा कहए लगलनि। कुरुपताक कारणे संगीतक मंचपर पहुँचते मनमे आबए लगैत अछि जे आन लड़कीक अपेक्षा दर्शक हमरा नापसन्द कऽ हँसी उड़बैत अछि। जइसँ सकपका जाइ छी। गबैक जे तैयारी केने रहै छी ओ नीक जकाँ नै गाबि पबै छी। वएह गीत घरपर बढ़ियाँ जकाँ गबै छी मुदा मंचपर पहुँचते की भऽ जाइत अछि जे हक्का-बक्का भऽ जाइ छी।

ओइ शिष्याक बात सुनि गाल्फर्ड एकटा नमगर-चौड़गर अएना लऽ, आगूमे रखि, गबैक विचार दैत कहलखिन- ''अहाँ कुरुप नै छी, जेना मनमे होइए। गीत गौनिहारिकेँ स्वरक मिठास हेबाक चाही। जकरा कुरुपतासँ कोनो संबंध नै छै। जखन भाव-विभोर भऽ गाएब तखन अहाँक आकर्षण बढ़ि जाएत। कियो सुनिनिहार कुरुपतापर धियान नै दऽ स्वरपर धियान देत। जइसँ मनक हीनता समाप्त भऽ जाएत आ आत्म-विश्वास बढ़ि जाएत।''

फ्रान्सक वएह गायिका मेरी वुडनाल्ड नाओंसँ प्रख्यात भेलीह।

स्तब्ध

दोसर विश्वयुद्ध समाप्त भऽ गेल। इंगोएशियन माने आंग्ल-रुसी संधिपर हस्ताक्षर करैले चर्चिल मास्को एलाह। संधिपर हस्ताक्षरो भऽ गेल। मास्को छोड़ैसँ एक दिन पहिने, अनायास स्तालिन आ मोलोटोव चर्चिल लग पहुँच कहलकनि- ''लड़ाइ-उड़ाइ तँ बहुत भेल। नीक समझौतो भऽ गेल। काल्हि अहाँ जेबो करब तँए आइ थोड़े मौज-मस्ती कऽ लिअ। हमरा ऐठाम चलि भोजन करु।''
स्तालिनक आग्रह सुनि चर्चिल मने-मन सोचए लगलथि जे महान् तानाशाह स्तालिन नत देबए एलाह, आइ जरुर किछु अद्भुत वस्तु देखैक मौका भेटत। चर्चिल नत मानि स्तालिनक संग विदा भेलाह। रास्तामे सिपाही सभ अभिवादन करनि। थोड़े दूर गेलापर एकटा पीअर रंगक दु-महला मकानक आगूमे कार रुकल। सभ कियो उतड़लथि। स्तालिनक संग चर्चिल मकानक भीतर गेलाह। भीतर जा चर्चिलकेँ बैसबैत स्तालिन कहलखिन- ''ऊपरका तल्लामे लेनिन रहैत छलाह। ओ गुरु छथि तँए ओइ तल्लाक उपयोग हम नै करै छी। ओ म्युजियम बनल अछि। निच्चाँमे तीनटा कोठरी अछि एकटामे दुनू परानी रहै छी। दोसरमे बेटी रहैत अछि आ तेसरमे पार्टी सदस्यक लेल बैठकी बनौने छी।''
स्तालिनक बात सुनि चर्चिल छगुन्तामे पड़ि गेलाह जे जै तानाशाहक डरे पूँजीवादी जगत थरथराइत अछि ओइ तानाशाहक रहैक व्यवस्था एहने छै। मने-मन सोचैत चर्चिल गुम्म रहथि आकि स्तालिन कहलकनि- ''थोड़े काल हमरा छुट्टी दिअ। भोजन बनबए जाइ छी।''
ई सुनि चर्चिल अचंभित होइत पूछलखिन- ''अपने भानस करै छी, भनसिया नै अछि?''
मुस्कुराइत स्तालिन उत्तर देलखिन- ''नै। अपने दुनू परानी मिल भानस करै छी।''

स्तालिनक बात सुनि चर्चिल हतप्रभ होइत कहलखिन- “बड़ बढ़ियाँ।” आइ घरेवालीकेँ भानस करए कहिअनु। अहाँ गप-सप्प करु।”
“हम लाचार छी। पत्नी घरपर नै छथि। ओ पाँच बजे कपड़ा मिलसँ औतीह।”
चर्चिल स्तब्ध भऽ गेलाह।

एकता

एकटा पैघ भवनक निर्माण होइत छलैक। निर्माणस्थल लग एक भाग पजेबा, दोसर भाग बालू, तेसर लकड़ी, सीमेंट, चून इत्यादि जमा छल। ढेरीसँ पजेबा बाजल- ''अकास ठेकल कोठा हमरेसँ बनत, तँए कोठाक श्रेह हमरे भेटक चाही।''

पजेबाक बात सुनि सिमटी आ बालू प्रतिवाद करैत कहलकै- ''तोँ झूठ बजैछँ। तोरा ई नै बुझल छौ जे एकसँ दोसर पजेबाक बीच जँ हम नै रहबौ तँ तूँ ढनमनाइते रहमे। संगे तोरा इहो नै बुझल छौ जे जत्ते दूर तक तोँ जेमे तत्ते दूर तक हमहूँ संगे जेबौ आ तोरोसँ ऊपर हमहीं सुइत कऽ रक्षो करबौ।''

बालू आ सिमटीक बात सुनि खिड़की आ केवाड़िक लकड़ी तामसे थरथराइत कहलकै- ''तोरा तीनू बूत्ते बर हेतौ तँ देबाल बनि जेमे, मुदा बिना हमरे ने छत बनि सकमे आ ने मुँह-कान चिक्कन हेतौ। जाबे हम नै रहबौ ताबे कुत्ता-बिलाइक घर रहमे।''

सभ सामानक बीच कटौज चलैत छल। कारीगर चाह पीब बीड़ी सुनगेलक। बिड़ियो पीबैत छल आ मने-मन हँसबो करैत छल। जखन भरि मन बीड़ी पीलक, मूड साफ भेलै, तखन तीनूकँ चुप करैत कहलक- ''अगर तूँ सभ मिलाने कऽ लेमे, तइमे की हेतौ? जाबे हम नै इलमसँ तोरा सभकँ बनेबौ ताबे ओहिना माटिपर पड़ल रहमे। कौआ-कुकुड़ आबि-आबि गंदा करैत रहतौ।''

सबहक विचार सुनि निर्णए करैत भवन कहलकै- ''अपना-अपना जगहपर सबहक महत्व छौ। मुदा जाबे एक-दोसरसँ मेल कए कऽ नै रहमे ताबे भवन नै कहेमे। ओहिना पजेवा, सिमटी, चून, लकड़ी रहमे। तँए अपन-अपन बड़प्पन छोड़ि मिलानक रास्ता पकड़ जइसँ कल्याण हेतौ।''

विधवा विवाह

राजस्थानक इतिहासमे हठी हम्मीरक विशेष स्थान अछि। ओ एहेन जिद्दी छल जे जकरा उचित बुझैत छलैक, ओ वएह करैत छल। भलहिं कतबो विरोध आ निन्दा किएक ने होय। जखन हम्मीर वियाह करै जोकर भऽ गेल तखन वियाहक चरचा शुरु भेल। विद्यार्थिये जीवनमे हम्मीर विधवाक दुर्दशाकेँ गहराइसँ अध्ययन केने छल। पढ़ैऐक समए संकल्प कऽ नेने छल जे हम विधवे औरतसँ वियाह करब। हम्मीरक वियाहक चरचा पसरलै। मुदा हम्मीर एकदम संकल्पित छल जे विधवेसँ वियाह करब। कुटुम परिवार सभ हम्मीरपर बिगड़ै मुदा तकर एक्को पाइ गम नै। पंडित सबहक माध्यमसँ परिवारबला कहबौलक जे विधवा अमंगल सूचक होइत तँए एहेन काज नै करक चाही। मुदा हम्मीर ककरो बात सुनैले तैयारे नै।

एकटा बाल-विधवाकेँ हम्मीर देखलक। विधवाकेँ देख हृदए पसीज गेलै। तखने ओइ विधवाकेँ हम्मीर कहलक- ''हम अहाँसँ वियाह करब। भलहिं परिवारक कतबो विरोध हुअए।''

हम्मीरक बात सुनि विधवा खुशीसँ अह्लादित भऽ उठल। हम्मीर वियाहक दिन तँइ कऽ कुटुम्ब-परिवार आ पुरहित-पंडितकेँ छोड़ि अपन संगी-साथी आ सैनिक सभकेँ संग केने जा वियाह कऽ लेलक।

जखन हम्मीर मेवाड़क शासक बनल तखन सभ विरोधी सहयोगी बनि गेलै। पंडित सभ घोषणा केलक- ''विधवा नास्ति अमंगलम्।''

देश सेवाक व्रत

सुभाषचन्द्र बोस बच्चे रहथि। एक दिन, रातिमे माए लगसँ उठि निच्चाँमे सुतए लगला। बेटाकेँ निच्चाँमे सुतैत देख माए पुछलखिन जे एना किएक करै छी? सुभाष जबाब देलखिन- ‘‘माए! आइ स्कूलमे मास्टर साहेब कहने छेलखिन जे हमर पूर्वज ॠृषि, मुनि जमीनेपर सुतबो करथि आ कठिन मेहनतो करैत छलाह। हमहूँ ॠृषि बनब। तँए कठिन जिनगी जीबैक अभ्यास शुरु कऽ रहल छी।’’

सुभाषचन्द्रक पिता जगले रहथिन। सभ बात सुनि सुभाषकेँ पिता कहलखिन- ‘‘बेटा! जमीनेपर सुतब टा पर्याप्त नै होइत। एहिक संग ज्ञानोक संचय आ मनुक्खोक सेवा आवश्यक अछि। आइ माइये लग सुति रहू, जखन नमहर हएब तखन तीनू काज संगे करब।’’

सिर्फ शिक्षकेक बात नै पितोक बातकेँ सुभाष गिरह बान्हि लेलनि। आई.सी.एस. केलाक उपरान्त जखन नोकरीक बात सोझामे एलनि तखन ओ कहलखिन- ‘‘हम जिनगीक लक्ष्य तँइ कऽ नेने छी। नोकरी नै करब। मातृभूमिक सेवा करब।’’

आत्मबल- १

फ्रान्सक कथा थिक। रास्ता बगलक पहाड़ीपर बैस एक गोटे अपन जुत्ता मरम्मत करबैत रहथि। एकटा ढेरबा बच्चा जुत्ता मरम्मत करैत छल। ओइ बच्चाक बगए-बानिसँ गरीबी झलकैत रहए। मुदा आत्मबल आ लगन मजगूत छलैक। जुत्ता मरम्मत करा ओ आदमी एक रुपैया पारिश्रमिक दऽ चलए लगल। मुदा माएक विचार ओहिना ओइ बच्चाक हृदेमे जीबैत छल। बच्चा अपन उचित पाइ काटि बाकी घुमबए लगल। ओ महानुभाव जूत्ता मरम्मत करौनिहार सभ पाइ रखि लैले कहलक। बच्चा कहलक- ''हमर जतबे उचित मजूरी हएत, ओतबे लेब। माए कहने छथि जे जतबे श्रम करी ओतबे मजूरी ली।''

बच्चाक बात सुनि ओ गुम्म भऽ, ओहि बच्चाकेँ ऊपरसँ निच्चाँ घरि निङहारए लगल। वएह बच्चा फ्रान्सक राष्ट्रपति दगाल भेलाह।

स्वाभिमान

स्कूलक पढ़ाइ समाप्त कऽ सुभाष चन्द्र बोस कओलेजमे नाओं लिखाओल। ओइ कओलेजमे अंग्रेजीक शिक्षक अंग्रेज छल। नाओं छलनि सी.एफ. ओटन। ओहुना सत्तामे रहनिहारक बोली जनताक बोलीसँ भिन्न होइत। मुदा ओटनमे आरो बेसी रोब छलैक। बात-बातमे ओ भारतीय जिनगीक मजाक उड़बैत। भारतवासीक जिनगीक प्रति घृणा पैदा करब ओ अपन बहादुरी बुझैत छल।

सुभाष बाबूकेँ ओटनक व्यवहार पसिन्न नै होइन। मुदा विद्यार्थी रहने मन भसोसि कऽ रहि जाथि। एक दिन वर्गेमे सुभाष बैसल रहथि। ओटन भारतवासीक प्रति व्यंग्य करए लगल। व्यंग्य सुनि सुभाषक हृदेमे आगि धधकए लगलनि। क्रोधे ओ बेकाबू भऽ गेलाह। अपन जगहसँ उठि, आगू बाढ़ि ओटनक गालमे कसि कऽ दू थापर लगबैत कहलखिन- ''भारतवासीमे अखनो स्वाभिमान जीबैत छै। जँ कियो ऐ बातकेँ बिसरि चुनौती देत तँ एहिना मारि खाएत।''

कलंक

गामक कोन लेखा जे पचकोसीक लोक किसुन भायकेँ इमानदार बुझै छन्हि। ओना ओ एकचलिया लोक छथि जबकि गामो आ परोपट्टाक लोक बहुचलिया। तँए किसुन भायकेँ जत्ते प्रशंसा होइत ओतबे निन्दो। ओना ज्ञान-अज्ञानक बीच, सुख-दुखक बीच, धरम-पापक बीच, उत्थान-पतनक बीच, प्रशंसा-निन्दाक बीच तँ पहिनहिसँ संघर्ष होइत आएल अछि। मुदा किसुन भाय अनकर प्रशंसा-निन्दाकेँ ओते महत्व नै दैत जत्ते अपन सैद्धान्ति जिनगीकेँ। अपन जिनगीक रास्तापर सदिखन सचेत रहै छलथि। कएक दिन एहेन होइत जे किसुन भायक विचारसँ अलग सौंसे गामक लोकक विचार होइत। मुदा तेकर एक्को पाइ गम हुनका नै। अपन रास्तापर ओ असकरो निर्भीकसँ ठाढ़ रहैत छलाह। मुदा विचार बदलैक लेल तैयार नै होथि।

जिनगीक आरंभे किसुन भाय खेतीसँ केलनि। खेत तँ बहुत नै छलनि मुदा जतबे छलनि तइमे मेहनतक बले परिवार चला लथि। बाढ़ि, रौदी आ आरो-आरो प्राकृतिक आफत तथा उपद्रव जकाँ मानवीय आफतक मुकावला करैक लूरि सीख नेने छथि। तँए आन परिवार जकाँ परिवारमे चिन्तो नै होइन। खानदानी खेतीकेँ कतौ बदलि तँ कतौ सुधारि कऽ करथि। जइसँ गामोक खेतिहर अचता-पचता कऽ हुनके अनुकरण करैत।

तेसर साल टहलैले पंजाब गेल रहथि। टहलैले की जइतथि, खेती देखैले गेल रहथि। पंजाबक खेती अगुआएल तँए देखब जरुरी बुझि पड़लनि। पंजाबमे झिमनिक खेती देखलखिन। मिथिला क्षेत्रमे जत्ते-जत्ते घेड़ा, होइत तत्ते-तत्ते झिंगुनी देखलखिन। फड़ो अटूट। झिंगुनी देख किसुन भायक मनमे गड़ि गेलनि। मने-मन सोचलनि जे जै पंजाबक माटि गोंग अछि तखन जब एहेन अछि तँ अपन माटि (मिथिलाक माटि) मे केहन हएत, तत्काल ओ नै सोचि सकलथि। मुदा बीआ नेने एलाह। समैपर बीआ रोपलनि। ओइ चारि कट्ठा झिंगुनिक खेतीसँ किसुन भाय एकटा जरसी गाए किनलनि। अपना लेल ओते

बीआ शुरुहेक फड़ रखि लेलनि जे छः कट्ठा खेती अगिला साल करब। धुर-झाड़ जखन झिंगुनी बेचए लगलथि तखन गामोक लोक बीआ मंगलकनि। पचता फड़क बीआ लोक सभले रखि देलखिन अगता फड़क समए तँ निकलि गेल छल।

ऐबेर गाममे, झिंगुनिक अनधुन खेती भेल। किसुन भायक उपजा तँ पैछले साल जकाँ भेल मुदा गामक लोकक दब भऽ गेलै। दब होइक कारण छलैक उपजबैक ढंग आ पचता बीआ। सौंसे गामक लोक हुनका ठक कहि कलंकित करए लगलनि। कतेक गोटे सोझहोमे कहलकनि। ठकक कलंकसँ किसुन भाय सोगाए लगलथि। जेना कते भारी कुकर्म कऽ नेने होथि। मनमे सदिखन यएह नचैत रहनि जे- ‘‘एना भेलै किएक?’’

ऐ प्रश्नक उत्तर मनमे जगबे ने करनि। अनायास एक दिन हृदेसँ आवाज उठलनि- ‘‘किसुन! तोहर दोख एक्कोपाइ नै छह। अनेरे सोगाइल छह। तोहर कलंकक कारण बीआक मुरहन आ दौजी गुने भेल छह।’’

हृदेक आवाज सुनि किसुन भाय पूछलखिन- ‘‘अगर हम ऐ बातकेँ मानि अपनाकेँ निरदोस बुझिये लेब तैयो आन केना बुझत?’’

- ‘‘हँ, तोरा ओइ दिन तक कलंकक मोटरी कपारपर रखै पड़तह जै दिन तक ओहो सभ मुरहन आ दौजीक भेद बुझि नै जाएत।’’

बुलकी

एकटा खेत बोनिहारक घरवाली नाकक बुलकी लेल रुसि रहलि। बुलकी कीनैक उपाए पतिकेँ नै। हर जोति कऽ जखन ओ बोनिहार आएल तँ घरबालीकेँ रुसल देखलक। मुँह-तुँह फुलौने ओसारपर बैसलि। धिया-पूता खाइले कनैत। बोनिहार अपन तामसकेँ घोटि घरबाली लग जा कहलकै- "किअए रुसल छी? भूखे बच्चो सभ लहालोट होइए। आबो भानस करु।"

अपन रोष झाड़ैत पत्नी बाजलि- "जाबे बुलकी नै आनि देब ताबे ने खाएब आ ने किछु करब।"

खुशामद करैत पति कहलकै- "आइये साँझमे हाटसँ कीन कऽ आनि देब। अखन भानस करु।"

पतिक बात पत्नी मानि गेलि। बोनिहार कर्ज रुपैया अनैले विदा भेल। दश रुपैया अना दर सूदपर अनलक। रुपैया घरवालीक हाथमे दऽ देलक। भानस भेलै। सभ खेलक। बेरु पहर दुनू परानी हाटसँ बुलकी कीन अनलक।

दोसरि साँझमे बुलकी पहिर सुगिया-दादीकेँ गोड़ लगैले बोनिहारिन गेलि। सुगिया दादी ओसारपर बैस पोता-पोतीकेँ नल-दमयन्तीक खिस्सा सुनबैत रहथि। दादीकेँ गोड़ लागि बोनिहारिन बुलकी देखैले कहलक। बुलकी देख दादी कहए लगलखिन- "कनियाँ। सोन-चानी गरीब-गुरबा घरमे नै रहै छै। जै घरमे पेटेक भूख नै मेटाइ छै ओइ घरमे सिंगारक चीज केना रहतै। अनेरे अपन सख करै छह। कहुना-कहुना बच्चा सभकेँ पालह जे कुल-खानदान जीबैत रहतह।"

दादीक बात सुनि बोनिहारिन आंगन आबि पतिकेँ कहलक- "गलती भेल जे हम रुसि कऽ अहाँसँ बुलकी किनेलौं। अखैन रखि दै छिऐ, काल्हि घुमा कऽ कर्जाबलाक रुपैया दऽ एबै।"

भद्रपुरुष

एक दिन एकटा वृद्धा कोठीसँ निकलैत एकटा भद्र-पुरुषकेँ कहलखिन- ‘‘अहाँ, ऐ कोठीक मालिकसँ कनी भेँट करा दिअ?’’

ओ भद्र-पुरुष कहलखिन- ‘‘कोन काज अछि कहू?’’

वृद्धा- ‘‘हमरा बेटीक वियाह छी। तीन साए रुपैयाक जरुरत अछि। अगर रुपैया नै हएत तँ वियाह रुकि जाएत।’’

‘‘चलू।’’

ओ भद्र-पुरुष अपन कारमे वृद्धाकेँ बैसाए लऽ गेलखिन। थोड़े दूर गेलापर कारसँ उतरि सामनेक मकानमे प्रवेश केलनि। वृद्धोकेँ संगे नेने गेलखिन। भीतर गेलापर वृद्धाकेँ ओसारपर बैसाए अपने कोठरीमे गेलाह। कोठरीमे जा पाँच साए रुपैया नोकरकेँ दऽ, ओइ वृद्धाकेँ दऽ अबैले कहलखिन। पाँचो सौ रुपैया नेने आबि नोकर वृद्धाकेँ दैत कहलक- ‘‘भाय! पाँच सौ रुपैया अछि। तीन साएमे बेटीक वियाह सम्हारि लेब आ दू साएसँ कोनो धंधा शुरु कऽ लेब। जइसँ आगूक जिनगी आसानीसँ चलत।’’

रुपैया हाथमे लऽ वृद्धा ओइ नोकरक मुँह दिस देखैत कहलक- ‘‘भाय! कोठीक मालिक कहाँ भेटलथि?’’

नोकर- ‘‘जनिका संग अहाँ कारमे एलौं वएह ऐ कोठिक मालिक- बाबू चितरंजन दास छथि।’’

जै आदमीक लेल सौंसे समाज परिवार होइत, जे अनको दुखकेँ अपन दुख बुझि जीबैक प्रेरणा दैत वएह तँ भद्र-पुरुष होइत।

झूठ नै बाजब

बंगालक पूर्व मुख्यमंत्री डॉक्टर विधानचन्द्र राय बच्चेसँ मानवीय गुणक अंगीकार करैत रहथि। जे गुण हुनक पितासँ भेटैत रहनि। सत्यक प्रति निष्ठा आ साहस दिनानुदिन बढ़ैत गेलनि। जखन विधानचन्द्र डॉक्टरी पढ़ैत रहथि तखने अध्यापक मोटर एक्सिडैंटक संबंधमे झूठ गबाही दइले कहलकनि। अध्यापकक इच्छा रहनि जे विधानचन्द्र छात्र छी तँए जे कहबै से करत। मुदा झूठ नै बाजैक संकल्प विधानचन्द्र केने रहथि। अध्यापकक कहलापर विधानचन्द झूठ बजैसँ इनकार करैत कहलकनि- ‘‘हम जे देखलिऐ सएह कहबै। मुदा झूठ नै बाजब।’’

जेकर परिणाम विधानचन्द्रकेँ भोगए पड़लनि। परीक्षामे फेल कऽ देल गेलाह। मुदा फेल होइसँ ओ ओते दुखी नै भेलाह जते खुशी अपन संकल्प निमाहैसँ भेलाह।

आर्दश माए

आर्मेनियाक सर्वोच्च सेनापति सीरोज ग्रिथक व्यक्तित्व हुनक माइयेक बनाओल छलनि। जखन ग्रिथ बच्चे रहथि तखने पिता मरि गेलखिन। विधवा नार्विन ग्रिड कपड़ा सीब-सीबि गुजरो करथि आ बेटोकेँ पढ़बथि। गरीब परिवारक ग्रिथ अछि, ई बात स्कूलोक शिक्षक सभ जनैत। फीस माफ होइले ग्रिथ आवेदन देलक। फीस माफो भऽ गेलै। फीस माफक समाचार ग्रिथ माएकेँ कहलक। माए बिगड़ि कऽ बाजलि- ''हम मेहनत कए कऽ गुजर करै छी, तखन फीस किएक ने देबै। हम मेहनती छी नै कि गरीब। हमर अपन स्वाभिमान कहैत अछि जे गरीब नै छी।''

स्वाभिमानी माए अपन बच्चाक एहेन चरित्र बनौलक जे देशक सर्वोच्च सेनापति भेल।

नारी सम्मान

नेपोलियन बोनापार्ट अपन टुइ-लेरिस नाओंक महलमे स्नान घरक मरम्मत करबैले सचिवकेँ कहलखिन। सचिव महलक अधिकारीकेँ फ्रान्सक कुशल कारीगरकेँ बजा मरम्मत करैले कहलखिन। कारीगर आबि मरम्मत करए लगल। जखन मरम्मत भऽ गेलै तखन नारीक नग्न चित्र सभ सेहो बना देलकै।

नेपोलियन नहाइले गेलाह। नहाइसँ पहिने चित्र सभ देखलखिन। चित्र देख नेपोलियन चोट्टे घुरि कऽ आबि अधिकारीकेँ बजौलखिन। अधिकारी आएल। हृदएक क्रोधकेँ दबैत नेपोलियन अधिकारीकेँ कहलखिन- ‘‘नारीकेँ प्रतिष्ठा देब सीखू। स्नान घरमे जे नारीक नग्न चित्र बनबौने छी ओ निन्दनीय अछि। जै देशमे नारीकेँ विलासक साधन बनाओल जाएत ओइ देशक बिनाश निश्चित हेतै।’’

नेपोलियनक आदेश सुनि अधिकारी कारीगरकेँ बजा सभ चित्र मेटौलक।

अनुशासन

अंग्रेजी शासनक खिलाप आन्दोलन उग्र रुप धेने जा रहल छल। आन्दोलन चलबैले क्रान्तिकारी दलकेँ डकैतियो करए पड़ै। एक दिन, राम प्रसाद विस्मिलक नेनृत्वमे, एकटा गाममे डकैती करैक लेल पहुँचल। एकटा परिवारमे सभ घुसल। जतए जे किछु दलकेँ भेटलै लऽ कऽ निकलल। सभ एकत्रित हुअए लगल कि अपन साथीक गिनती करए लगल। गिनतीमे एक गोटे कमैत रहए। घरेमे चन्द्रशेखर एकटा बुढ़ियाक कैदमे पड़ल छल। ओ बुढ़िया अपन जेबर आ नगदीबला बक्सापर बैस चन्द्रशेखरक गट्टा पकड़ने छलि। चन्द्रशेखर चुपचाप आगूमे ठाढ़। ने बाँहि झमारैत आ ने किछु बजैत। सभ कियो घर पैस देखलक जे चन्द्रशेखर बुढ़ियाक पालामे पड़ल छथि।

क्रान्तिकारी पार्टीक बीच अनुशासन छल जे ने महिलापर हाथ उठाओल जएत आ ने ओकर जेबर लेल जएत। आजाद बुढ़ियाकेँ बुझबैत कहथिन- ''माता जी! अहाँ बक्सापर सँ हटि जाउ। हम सिर्फ नगद लेब। जेबर नै लेब।''

आजादक विनम्र बातसँ बुढ़ियाक साहस बढ़ि गेल छलैक। जखन चन्द्रशेखरसँ संगी सभ पूछल तखन ओ सभ बात कहलखिन। आजादक बात सुनि सभ ठाहाका दऽ हँसए लगल। गट्टा छोड़बैले एक गोटे बढ़ए लगलथि आकि चन्द्रशेखर कहलखिन- ''माताजीक सभ सम्पत्ति घुमा दियौन।''

सम्पत्तिक नाओं सुनि भावुक बुढ़िया चन्द्रशेखरक गट्टा छोड़ि देलकनि। तखन ओ घरसँ संगी सबहक संगे निकललाह।

सादा जिनगी

सन १९४९ई.क बात थिक। ओइ समए स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री उत्तर प्रदेश सरकारमे गृहमंत्री रहथि। एक दिन लोक निर्माण विभागक किछु कर्मचारी हुनका डेरामे कूलर लगबैले आएल। शास्त्री जी डेरामे नै रहथि। परिवारक बच्चो आ पत्नियोकेँ कूलर देख खुशी होइत।

साँझमे लालबहादुर शास्त्री डेरा एलाह। डेरा अबिते देखलखिन जे कूलर लगबैले लोक निर्माणक कर्मचारी सभ छथि। कूलरसँ शास्त्री जीकेँ खुशी नै भेलनि। ओ कूलर लगबैसँ मना कऽ देलखिन। परिवारक सभ स्तब्ध भऽ गेल। पत्नी कहलकनि- “जे सुविधा सरकार दऽ रहल अछि ओकरा मना किएक करै छी?”

गंभीर स्वरमे शास्त्री जी उत्तर देलखिन- “ई जरुरी नै अछि जे हम सभ दिन मंत्रिये रहब। कूलरसँ सबहक आदति बिगड़ि जाएत। परिवारमे बेटियो अछि, जेकर बिआह हेतै। दोसर घर जाएत। अगर जँ ओकरा ओइ परिवारमे एहेन सुविधा नै होय तखन तँ कष्ट हेतै।”

विचारक उदय

गाँधीजी बच्चे रहथि। हुनक बड़का भाय हुनका मारलकनि। गाँधीजी कनैत माए लग आबि कहलखिन। गाँधीक बात सुनि माए कहलखिन- ‘‘तहूँ किएक ने मारलह?’’

माएक बात सुनि गाँधीजी कानब छोड़ि कहलखिन- ‘‘जे गलती भैया केलनि सएह करैले हमरो कहै छी। आकि हुनका मनाही करबनि।’’

बेटाक बात सुनि माए कहलखिन- ‘‘बौआ, हम तोहर परीछा लेलिअह। अगर तोरामे एहेन विचारक विकास हेतह तँ आगू चलि कऽ सौंसे दुनियाँक प्रति सिनेह आ प्रेम पौबह।’’

बच्चाक समुचित विकासक आरंभ परिवारेसँ शुरु होइत अछि।

पुष्ट इकाइसँ समर्थ राष्ट बनैत

फ्रान्स हालैंडपर आक्रमण कऽ देलक। फ्रन्स नमहर देशो आ सम्पन्नो। जबकि होलैंड छोटो आ पछुआएलो। मुदा फ्रान्स हालैंडसँ जीत नै पबैत। ई देख, फ्रन्सक राजा लुइ-चैदहम बिगड़ि मंत्री कालवर्टकेँ बजा पूछल- ''हमर देश एत्ते पैघ आ सामरिक सम्पन्न रहितो पछड़ि किअए रहल अछि?''

राजाक बात सुनि कालवर्ट नम्र भऽ उत्तर देलकनि- ''महत्ता आ समर्थता। कोनो देशक विस्तार आ बैभवपर निर्भर नै करैत। ओ निर्भर करैत ओइ देशक देश-भक्त आ बहादुर नागरिकपर। जे अपना देशक अपेक्षा हालैंडमे मजगूत अछि।''

मंत्रीक बात सुनि राजा अपन सेना वापस बजा लेलक। हालैंडमे बच्चा-बच्चाकेँ राष्ट्रक सशक्त इकाईक रुपमे ढालल जाइत। जइसँ ओ शक्तिशाली बनि ठाढ़ अछि।

डर नै करी

उगैत सुरुज जकाँ जिनगी अपन दिशामे, अपना ढंगसँ बढ़ैत जा रहल छल। एक विरामपर जा जिनगी पाछू मुँहे घुरि कऽ तकलक तँ चौंक गेल। चंडालिनी सन कारी आ कुरुप छाया पाछू-पाछू अबैत छल। छायाकेँ देख जिनगी ललकारि कऽ पूछलक- ‘‘अभागिनी! तौँ के छेँ? हमरा पाछू-पाछू किएक अबैछेँ? तोहर कारी आ कुरुप काया देख हमरा डर होइए। जो भाग। हमरासँ हटि कऽ रह।’’

छाया छिप गेल। मुदा जिनगी घिंघयाइत बढ़ल। पुनः छाया आबि कहलकै- ‘‘वहिन! हम तोहर सहचरी छियौ। तोरे संग हमहूँ चलि रहल छी। आ अंतमे दुनू गोटे संगे रहब। तँए डरैक कोनो बात नै। तौँ हमरा नै चिन्हैछेँ, हमरे नाओं मृत्यु थिक।’’

मृत्युकेँ पाछु लगल अबैत देख जिनगी डरि गेल। सकपका कऽ गिर पड़ल।

असिरवाद उलटि गेल

एक गोटेकेँ दूटा बेटा छलै। दुनूक बीच तीन बर्खक जेठाइ-छोटाइ छलै। गामेक स्कूलमे दुनू भाँइ पढ़बो केलक। अपर प्राइमरी स्कूल रहने दुनू-भाँइ पचमे तक पढ़लक। दुनू बेटाक वियाह बाप-माए कऽ देलक। जाबे धरि छोटका बेटाक दुरागमन नै भेल छलै ताबे धरि तँ परिवार शान्त रहलै, मुदा छोटकाक दुरागमन होइते परिवारमे खटपट शुरु हुअए लगलै। एक्को दिन एहेन नै होय जै दिन दुनूक बीच झगड़ा नै होइत। सभ दिन दुनू दियादनीकेँ झगड़ा करैत देख बापकेँ बरदास नै भेलै। दुनू बेटाकेँ बजा बाप कहलकै- ‘‘बौआ, सभ दिन झगड़ा केने घरसँ लछमी पड़ा जेथुन तँए अखन हमहूँ जीबते छी दुनू भाँइ भीन भऽ जाह। जे चीज छह दुनूकेँ बाँटि दै छिऐ।’’

जेठका बेटाकेँ नगद आ जेवर-जात हिस्सा भेलै आ छोटकाकेँ दू बीघा खेत, आ बड़द भेलै। दुनू भाँइ खुशीसँ भीन भऽ गेल। नगद आ गहना-गुरिया पाबि जेठका खूब एश-मौज करए लगल।

दुनू परानी छोटका दिन-राति मेहनत करए। गामक लोक जेठकाकेँ करमगर आ छोटकाकेँ करमघटू कहए लगलैक।

समए बीतए लगलै। दुइये सालक बाद पाशा पलटए लगलै। जेठका बेटाक रुपैओ आ गहनो सठि गेलै मुदा छोटकाक उन्नति हुअए लगलै। नगद आ जेबर सठने जेठका चोरि करए लगल। एक दिन चोरि करए गेल तँ घरेमे पकड़ा गेल। जइसँ मारिओ खूब खेलक आ जहलो गेल।

गामक लोकक असिरवाद उनटए लगल। जही मुँहसँ जेठकाकेँ करमगर आ छोटकाकेँ करमघटू कहैत छलै ओही मुँहसँ लोक जेठकाकेँ करमघटू आ छोटकाकेँ करमगर कहए लगलैक।

रत्न गमेवाक दुख

एकटा गोताखोर, कएक दिनसँ असफल होइत आएल छल। भरि-भरि दिन परिश्रम करैत छल मुदा किछु हाथ नै लगैत छलै। जइसँ परिवार चलब कठिन भऽ गेलै। आन काज करैक लूरि रहबे ने करै, जे करैत। भोरे घरसँ नदीक महारपर बैस रत्नक आशामे टक-टक पानि दिस तकैत रहैत छल। निराश भऽ गोताखोर मनमे विचारलक जे आइ ऐ काजक आखिरी दिन छी। जँ आइ किछु नै भेटत तँ काल्हिसँ छोड़ि देब। जाल लऽ नदीक महारपर बैस, मने-मन भगवानसँ कहए लगलनि- ‘‘अगर अहाँ मदति नै करब तँ हम जीब केना?’’

भगवानसँ प्रार्थना कऽ गोताखोर पानिमे पैस डूबकी लगौलक। एकटा पोटरी भेटलै। पोटरी नेने गोताखोर ऊपर भेल। किनछरिमे बैस पोटरी खोललक। छोट-छोट पाथर ओइ पोटरीमे। पाथर देख गोताखोर निराश भऽ गेल। मनमे क्रोधो उठलै। एकाएकी ओइ पाथरकेँ पानिमे फेकए लगल। पाथरो फेके आ मने-मन अपना भागोकेँ कोसै। फेकैत-फेकैत एकटा पाथर बँचलै। ओइ पाथरकेँ जखन फेकए लगल कि ओइपर नजरि पड़लै। पाथर चमकैत रहए। ओ नीलम पत्थर रहए। गोताखोर चीन्हि गेल। मुदा ताघरि तँ सभटा फेक देने छल। अपसोच करए लगल मुदा सभ तँ पानिमे चलि गेल छलै तँए अपसोच कइये कऽ की हेतै। अपसोच करैत देख भगवान चिड़ै बनि आबि कहए लगलखिन- ‘‘ऐ गोताखोर! सिर्फ तोँहींटा एहेन अभागल नै छेँ, ढेरो अछि जे जीवन रुपी रत्न राशिकेँ एहिना गमबैत अछि। जो, जएह बँचल छौ ओकरे बेच कऽ गुजर कर। मुदा ज्ञान बढ़ा। जइसँ धनो पबैक लूरि भऽ जेतौ आ मनुक्खो बनि जीमे।’’

नशा

एकटा व्यापारी अफीम खाइत छल। ओ अपना नोकरोकेँ अफीमक चहटि लगा देलक। एक दिन दुनू गोटे बाजार जाइक विचार केलक। जे सामान सभ दोकानमे सठल रहए ओकर पुरजी बनौलक। रुपैया गनलक। दुरस्त बाजार रहने दुनू गोटे घरेपर भरि पेट खा लेलक। बाजार विदा भेल। किछु दूर गेलापर दुनू गोटे खेनाइ बिसरि गेल। रास्तामे होटल छलै, दुनू गोटे घोड़ासँ उतड़ि खाइले गेल। घोड़ाकेँ छानि कऽ चरैले छोड़ि देलक। दोकानमे दुनू गोटे खा सोझे बजार विदा भेल। बजारक कात जखन पहुँचल तँ व्यापारीकेँ मन पड़लै जे घोड़ा ओतै छूटि गेल। मनहूस भऽ दुनू गोटे माथपर हाथ दऽ बैस रहल। थोड़े काल गुनधुन करैत घोड़ा आनए दुनू गोटे घुरि गेल। घुरि कऽ दोकान लग आएल तँ घोड़ाकेँ चरैत देखलक। लगाम लगा दुनू गोटे चढ़ि बजार दिस विदा भेल। बाजार पहुँच दोकानमे सौदा-बारी कीनलक। सामान समेट, मोटरी बान्हि जखन रुपैया देमए लगलै तँ रुपैयाक झोरे नै। दुनू गोटे मन पाड़ए लगल जे रुपैयाक झोरा की भेल? किछु कालक बाद मन पड़लै जे झोरा तँ ओतै छूटि गेल जेतए बैसल छलौं। दुनू गोटे बपहारि काटए लगल। कनैत देख, एकटा ग्रामीण महिला सामान कीनैत छलि, व्यापारीकेँ कहलक- ''ई गति सिर्फ अहीं दुनू गोटे टाकेँ नै, सभ नसेरीकेँ होइ छै।''

सामना

एकटा बन छल। ओइ बनमे अनेको सुगर परिवार छल आ एकटा सिंह सेहो रहैत छलैक। जखन कखनो सिंहकेँ भूख लगै तखन टहलि सुगरकेँ पकड़ि खा जाइत। दोसर-तेसर सुगर सिंहकेँ देखते पड़ा जाइत। एक दिन सभ सुगर मिल बैसार केलक। बैसारमे तँइ केलक- ''जखन एका-एकी मरिये रहल छी तखन लड़ि कऽ किएक ने मरब।''
ऐ विचारसँ सभ सुगरमे साहस जगलै। सभ मिल लड़ैले विदा भेल। सभ हल्लो करै आ चिकड़ि-चिकड़ि सिंहकेँ गरियेबो करै। जत्ते जोरगर सुगर छल ओ आगू-आगू आ अबलाहा सभ पाछू-पाछू विदा भेल। सिंहकेँ देखते सभ जोरसँ हल्ला करैत दौड़ल। आइ धरि सिंहकेँ एहेन मुकाबलासँ भेँट नै भेल छल। सिंह डरा गेल। अपन जान बँचबैले पड़ाएल। सिंहकेँ पड़ाइत देख सुगर पाछुसँ खेहारलक। सिंह बनसँ बाहर भऽ गेलै। बन खाली भऽ गेलै। सभ सुगर निचेनसँ रहए लगल।

शिष्टाचार

एकटा इनारपर चारिटा पनि-भरनी पानि भरैले आएल छलि। एक्केटा डोल छलै तँए एक गोटे पानि भरैत छलि आ तीन गोटे गप-सप्प करैत छलि। सभ अपन-अपन बेटाक बड़ाइ करैत। पहिल औरत बाजलि- ‘‘हमर बेटाक आवाज एत्ते मधुर अछि जे रजो-रजवारमे ओकरा सम्मान भेटतै।’’

दोसर कहलकै- ‘‘हमरा बेटाक शरीरमे एत्ते तागत अछि जे नमहर भेलापर बड़का-बड़का पहलमानकेँ पटकत।’’

तेसर बाजलि- ‘‘हमर बेटा एहेन तेजगर अछि जे सभ साल इस्कूलमे फस्ट करैए।’’

मूड़ि निच्चाँ केने चारिम कहलक- ‘‘आने बच्चा जकाँ हमर बेटा साधारण अछि।’’

पनि-भरनी सभ इनारपर गप-सप्प करिते छलि कि स्कूलमे छुट्टी भेलै। अबैत-अबैत चारुक बेटा इनार लग देने गुजरैत रहए। एकटा गीत गबैत दोसर कूदैत-फनैत, तेसर किताब खोलि किछु पढ़ैत छल। चारिम पाछू-पाछू चुपचाप अबैत छल। इनार लग अबिते चारिम अपन माएक भरल घैल माथपर लऽ लेलक आ माएक हाथमे अपन बस्ता दऽ देलक। आगू-पाछू दुनू माए-बेटा आंगन विदा भेल।

इनारे लग एकटा बुढ़िया बैसल सभ बात सुनैत छलि। ओ चारु पनिभरनीकेँ रोकि, कहलक- ‘‘ई चारिम लड़का जे अछि ओ सभसँ नीक अछि। एकर शिष्टाचार सभसँ नीक छै।’’

ठक

एकटा ठक लोमड़ी गाछक निच्चाँमे छल। गाछपर बैसल मुर्गाकेँ पट्टी दऽ रहल छलै जे भाय तूँ नै सुनलहक जे सभ पशु-पक्षी आ जानवरक बीच सभा भेल। जइमे सर्वसम्मतिसँ निर्णए भेल जे अपनामे कोइ ककरो अधला नै करै तोँ किएक गाछपर छह, निच्चाँ आबह आ दुनू गोटे अपन जिनगीक दुख-सुखक गप-सप्प करह। लोमड़ीक चालाकी मुर्गा बुझैत छल तँए गाछेपर सँ हूँ-कारी दैत मुदा निच्चाँ नै उतड़ै। ताबे दूटा आवारा कुकूड़केँ दौड़ल अबैत लोमड़ी देखलक। कुत्ताकेँ देखते पड़ाएल। लोमड़ीकेँ पड़ाइत देख गाछेपर सँ मुर्गा कहलकै- ‘‘भाय, भगै किएक छह? जखन सबहक बीच समझौता भऽ गेलै तखन तोरा किएक डर होइ छह?’’

लोमड़ी भगबो करै आ उत्तरो दै- ‘‘भऽ सकैए जे तोरे जकाँ ओकरो नै बूझल होय।’’

पत्नीक अधिकार

गृहस्ताश्रम ओहन आश्रम होइत जइमे आत्मसंयम, पारस्परिक सद्भाव आ सद्प्रवृत्तिक अभ्यास आसानीसँ कएल जा सकैत अछि। एक दिन हजरत उमरसँ भेँट करए एक आदमी आएल। थोड़े काल बैसल तँ उमरक पत्नीकेँ जोर-जोरसँ उमरपर बजैत सुनलक। उमर चुपचाप सुनैत। किछु उत्तर नै दैत। ओइ आदमीकेँ बड़ छगुन्ता लगलै जे पत्नी यत्र-कुत्र कहि रहल छन्हि मुदा किछु उत्तर उमर नै दैत छथिन। ओइ आदमीकेँ नै रहल गेलै। ओ उमरकेँ पूछल- ‘‘अपनेक पत्नी यत्र-कुत्र कहि रहल छथि मुदा अहाँ मुड़िओ उठा कऽ ओमहर नै तकै छी?’’

गंभीर स्वरमे उमर जबाब देलखिन- ‘‘भाय! ओ हमर मैल-कुचैल कपड़ा खिंचैत छथि, खाना बनबै छथि, सेवा करैत छथि आ सभसँ पैघ बात जे हमरा पाप करैसँ सेहो बँचबै छथि। तखन जँ ओ बिगड़ि कऽ दू-चारिटा बाते कहै छथि तँ कि हुनका एतबो अधिकार नै छन्हि।’’

शिनीची सिनेह

तीन दिनसँ चुल्हि नै पजरने, दुनू परानी सियान तँ बरदास केने रहथि, मुदा बच्चा सभ भूखे ओसारपर ओँघरनियो दैत आ हिचुकि-हिचुकि कनबो करैत। अनेको प्रयास सियान केलक मुदा कोनो गर खेनाइक नै लगलै। अंतमे निराश भऽ सियान, अपन जिनगीकेँ बेकार बुझि, आत्महत्या करैक विचार मनमे ठानि लेलक। आत्महत्या करैले विदा भेल। निराश मन दुखक अथाह सागरमे डूबए लगलै आकि पाछूसँ एक आदमी कान्हपर हाथ दऽ कहलकै- ''मित्र! ऐ अमूल्य जिनगीकेँ गमौलासँ की हएत? हम मानै छी जे अहाँक विपत्ति अहाँकेँ आत्महत्या करैले बेबस कऽ देलक। मुदा की अहाँ ऐ बिपतिकेँ हँसैत-हँसैत पाछू नै धकेल सकै छी?''

आत्मीयताक शब्द सुनि सियान बोम फाँड़ि कनए लगल। कनबो करैत आ अपन सभ मजबूरी ओइ आदमीकेँ कहबो करैत। मजबूरी सुनि शिनीचिओकेँ ऑखिमे नोर आबि गेलै। तत्काल ओ सियानकेँ भोजनक जोगार करैक लेल किछु रुपैया दऽ देलखिन। सियान घुरि कऽ घर आबि भोजनक व्यवस्था केलक।

वएह शिनीची जापानक प्रसिद्ध कवि छथि। आहीठाम ओ संकल्प केलनि जे अप्पन कमाइक तीन-चैथाइ भाग ओहन व्यक्तिक सेवामे लगाएब जे कष्टमय जिनगीमे पड़ल अछि।

घरपर आबि शिनीची एकटा गुप्तदानक पेटी बना मुख्य चौराहापर रखि देलनि। ओइ पेटीक उपरमे लिख देलखिन- ''जै सज्जनकेँ सचमुच पाइक जरुरत होइन ओ ऐ पेटीसँ अपना काज जोकर निकालि लथि''

सभ दिन साँझकेँ शिनीची आबि पेटी खोलि देख लथि। जँ पाइ नै रहै तँ दऽ दथि।

सिखबैक उपाए

एकटा गरुड़ छल। ओकरा एकटा बच्चा छलै। बच्चाकेँ पीठपर लऽ गरुड़ एकठामसँ दोसर ठाम चराओर करैत छल। साँझू पहरकेँ बच्चाकेँ पीठपर लदने घर अबैत छल। उड़ै जोकर बच्चा भऽ गेल छलै मुदा पीठपर बैसैक जे आदति लागि गेल छलै से छोड़बे ने करैत। कएक दिन गरुड़ बुझौलकै मुदा ओ अपन बानि छोड़बे ने करैत। मने-मन गरुड़ सोचलक जे सोझे कहनेसँ नै मानत तँए रास्ता धड़बए पड़त।

दोसर दिन बच्चाकेँ पीठपर नेने गरुड़ उड़ैत विदा भेल। जखन खूब ऊपर गेल तखन आस्तेसँ अपन पाँखि समेट बच्चाकेँ छोड़ि देलक। बच्चा निच्चाँ गिरए लगल। अपनाकेँ निच्चाँ गिरैत देख बच्चा पाँखि फड़फड़बए लगल। आस्तेसँ निच्चाँ उतड़ल। आँखि उठा-उठा गरुड़ देखबो करैत आ बँचबैक उपायो सोचैत। निच्चाँमे आबि बच्चा पाँखि चलबैक प्रयास करए लगल, जइसँ उड़ब सीख लेलक। सायंकाल जखन सभ एकठाम भेल तखन बच्चा बापक शिकाइत करैत माएकेँ कहलक- ‘‘माए! आइ जँ पाँखि नै फड़फड़ेने रहितौं तँ बाबू बिच्चे रास्तामे मारि दैताए।’’

माए बुझि गेलि। हँसैत बेटाकेँ कहलक- ‘‘बौआ! जे अपनेसँ नै सिखत, स्वावलंवी बनत, ओकरा सिखबैक एकटा इहो रास्ता छिऐक।’’

कर्तव्यपराएन तोता

एकटा जमीनदार रहथि। हुनका बहुत खेत रहनि। धानक खेती केने रहथि। खेतक चारु कोणपर रखवार खोपड़ी बना ओगरबाहि करैत छल। रखवारकँ रहितो तोता सभ उड़ैत आबि, धानो खाइत आ सीस काटि-काटि लैयो जाइत। एकटा एहेन तोता छल जे अपने खेतेमे खा लैत आ उड़ै काल छहटा सीस काटि लोलमे लऽ उड़ि जाइत। एक दिन रखवार ओकरा जालमे फँसा लेलक। तोताकँ नेने जमीनदार लग रखवार लऽ गेल।

तोताकँ देख जमीनदार पूछलकै- ‘‘धानक सीस काटि कतए जमा करैछँ ’’

निर्भीक भऽ तोता उत्तर देलकनि- ‘‘दूटा सीस कर्ज सठबैले दूटा कर्ज लगबैले आ दूटा परमार्थले लऽ जाइ छी। कुल छह-टा सीस, अपन पेट भरलापर, लऽ उड़ि जाइ छी।’’

अचंभित होइत जमीनदार पूछलकै- ‘‘की मतलब?’’

तोता- ‘‘बृद्ध माए-बाप छथि जनिका उड़ि नै होइत छन्हि, तनिकाले दूटा सीस। दूटा बच्चा अछि तकराले दूटा सीस आ पड़ोसिया दुखित अछि दूटा सीस तकराले।’’

तोताक बात धियानसँ सुनि जमीनदार गुम्म भऽ गेलाह। किछु समए मने-मन विचारि रखवारकँ कहलखिन- ‘‘ऐ तोताकँ चीन्हि लहक। जँ कहियो धोखासँ पकड़ाइयो जा तँ छोड़ि दिहक।’’

तस्वीर

एकटा चित्रकार तीनटा तस्वीर बनौलक। एकटा सोचमे, दोसर हाथ मलैत आ तेसर माथ धुनैत। एक गोटे तीनू तस्वीरकेँ देख चित्रकारसँ पूछलक- ‘‘तीनू तीन रंगक बुझि पड़ैए।’’

उत्तर दैत चित्रकार कहलक- ‘‘ई तीनू एक्के आदमीक तीन अवस्थाक छी।’’

‘‘कोन-कोन अवस्थाक छी।’’

‘‘पहिल वियाहसँ पहिलुका छी। जखन युवक कल्पनामे उड़ैत अछि। सोचैत अछि जे कत्ते सुन्नर कनियाँ भेटत। दोसर वियाहक बादक छी। जखन पारिवारिक जिनगी शुरु होइ छै आ जिम्मेवारी बढ़ैत छै। जिम्मेवारी बढ़लाक बादे समस्यासँ टकराए पड़ै छै। तखन बुझि पड़ै छै जे कोन जंजालमे पड़ि गेलौं तँए हाथ मलैत अछि। तेसर तस्वीर ओ छी जखन स्त्रीक वियोग आकि विरोध होइत छै। तखन माथ घुनैत सोचए पड़ै छै जे हमर कपार फूटि गेल। अपने किरदानीसँ अपन, परिवारक आ खानदनक नाक कटा देलिऐक। जँ हमहूँ सही रास्तापर आबि चलैत रहितौं तँ एहेन दिन नै देखए पड़ैत।’’

दोस्तक जरुरत

एकटा पैध पोखरि छल। ओकर उत्तरबरिया महारमे मोर रहैत छल आ दछिनबरियामे मोरनी। दुनू असकरे-असकरे रहैत। एक दिन मोर मोरनी ऐठाम जा वियाहक प्रस्ताव रखलक। मोरक प्रस्ताव सुनि मोरनी पूछलकै- ‘‘अहाँकेँ कएटा दोस अछि?’’

नजरि दौड़बैत मोर उत्तर देलक- ‘‘एकोटा नै।’’

मोरक जबाब सुनि मोरनी वियाह करैसँ इनकार कऽ देलक। तखन मोरक मनमे एलै जे सुखसँ जीबैक लेल दोस जरुरी अछि। ओतएसँ विदा भऽ मोर पूबरिया महार होइत चलल। पूबरिया महारमे सिंह रहैत छल। आ पछबरियामे कौछु। सिंह बैसल-बैसल झपकी लैत छल। मोर सिंहक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मोरकेँ बजैक साहसे ने होय। बड़ी खान धरि मोरकेँ ठाढ़ भेल देख सिंह पूछलकै। निराश मने मोर कहलकै- ‘‘भैया! हम अहाँसँ दोस्ती करए एलौंहेँ। किएक तँ जिनगीक लेल दोस्तक जरुरत होइत छै।’’ सिंह मानि दोस्ती कऽ लेलक। सिंहसँ दोस्ती भेलाक बाद मोर पछबरिया महार आबि कौछुसँ सेहो दोस्ती केलक। पछबरिये महारक गाछपर टिटही सेहो रहैत छल। जे अपन काज इमानदारीसँ करैत छल। जखन कखनो शिकारीक आगमन होय आकि कोनो आफत अबैबला होय तँ टिटही सभकेँ जानकारी दऽ दैत।

दोस्ती केलाक बाद मोर मोरनी लग आबि सभ बात कहलक। मोरनी वियाह करैले राजी भऽ गेलि। दुनूक बीच वियाह भऽ गेलै। दुनू एक्के ठाम रहए लगल।

एक दिन एकटा शिकारी शिकारक भाँजमे पहुँचल। भरि दिन शिकारी शिकारक पाछू हरान भेल रहए मुदा कतौ किछु नै भेलै। थाकियो गेल रहै आ भूखो लागि गेल रहए। गाछक निच्चाँमे सुसताए लगल। गाछक निच्चाँमे चिड़ैक चट देख गाछपर चढ़ि चिड़ैकेँ पकड़ैक विचार केलक। गाछेपर सँ

मोर-मोरनी सेहो शिकारीकेँ देखैत। शिकारीकेँ गाछपर चढ़ैत देख दुनू परानी - मोर-मोरनी- सोचए लगल जे आइ दुनूक जान जाएत। मोर उड़ैत टिटही लग गेल। टिटही जोर-जोरसँ बोली देमए लगलै। सिंह बुझि गेल। शिकार पकड़ैले सिंह विदा भेल। ताबे कछुआ सेहो पानिसँ निकलि किनछरिमे आबि गेलै। सिंहकेँ देख शिकारी भगैक ओरियान करए लगल आकि कौछुपर नजरि पड़लै। कौछुकेँ पकड़ए शिकारी किनछरिमे गेल कि कौछु ससरि पानिमे चलि गेल। शिकारी पानिमे पैइसए लगल आकि गादि -दलदल- मे लसकि गेल। ने आगू बढ़ि होय आ ने पाछू भऽ होय। ताबे सिंह आबि शिकारीकेँ पकड़ि लेलक। शिकारीकेँ पकड़ल देख मोरनी मोरकेँ कहलक- "वियाह करैसँ पहिने जे दोस्तक संख्या पूछने रही से देखलिऐ। आइ जँ दोस्ती नै केने रहितौं तँ की होइत?"

स्वार्थपूर्ण विचार

एकटा बच्चाक मृत्यु भऽ गेलै। अभिभावक संग किछु गोटे ओकरा उठा कऽ असमसान लऽ गेल। बरखा होइत रहए। असमसानमे सभ विचारए लगल जे एहेन दुरकाल समैमे लाशकेँ की कएल जाय? अपनामे सभ विचारिते छल आकि बिलसँ एकटा सियार निकलि कहलकै- ‘‘एहेन समैमे लाशकेँ जरौनाइसँ नीक माटिमे गारनाइ हएत। धरती माएक गोदमे समरपित करब सभसँ नीक हएत।’’

सियारक बात समाप्तो नै भेल छल आकि कौछु कहए लगलै- ‘‘धारमे फेक दियौ। ऐ सँ नीक दोसर नै हएत।’’ ताबे एकटा गीध उड़ैत आबि कहए लगकै- ‘‘सभसँ नीक हएत जे ओहिना फेक दियौ, धारेमे नहा लिअ आ गामपर चलि जाउ।’’

कठिआरीबला सभ तीनूक चलाकी बुझि गेल। तीनूकेँ धन्यवाद दैत विदा केलक। पानियो छूटि गेलै। सभ मिल चीता खुनि जारन दऽ जरा देलक।

संगीक महत्व

एकटा गाछ लग एकटा फूलक लत्ती जनमि कऽ लटपटाइत बढ़ैत गाछक फुनगी धरि पहुँच गेलि। गाछक आश्रए पाबि ओ लत्ती फुलाए-फड़ए लगल। लत्तीक फड़-फूल देख गाछक मनमे द्वेष जगए लगलै जे हमरे बले ई लत्ती एत्ते बढ़ि, फड़ै-फुलायए। जँ हम सहारा नै दैतिऐक तँ कहिया-कतए माल-जाल चरि नष्ट कऽ देने रहितैक। लत्तीपर रोब जमबैत गाछ कहलकै- ‘‘तोरा हम जे आदेश दियौ से तूँ कर। नै तँ मारि कऽ भगा देबौ।’’

वृक्ष लत्तीकेँ कहिते छल आकि दूटा बटोही ओइ रस्ते जाइत छल। लत्तीसँ सुशोभित गाछ देख एकटा राही दोसरसँ कहलक- ‘‘संगी! ऐ वृक्षकेँ दखियौ जे कत्ते सुन्दर लगैए। निच्चाँमे कत्ते-शीतल केने अछि। ऐठाम बैस बीड़ी-तमाकुल कऽ लिय, तखन आगू बढ़ब।’’

लत्ती संग अपन महत्व सुनि गाछक रोब समाप्त भऽ गेलै। ओइ दिनसँ दुनू मिल प्रेमसँ रहए लगल।

उपहास

कोनो अधलो प्रचलन माने चलैन आकि ढर्राकेँ तोड़ब अपने-आपमे कठिन कार्य होइत। जखन कखनो कियो समाज आकि परिवारमे गलत कार्यकेँ छोड़ि स्वस्थ आकि तर्कयुक्त कार्य आरंभ करैत तँ सिर्फ परिवारेटा मे नै समाजोमे सभ उपहास करैत अछि। जइसँ धैर्यवान तँ स्थिर रहैत मुदा साधारण मनुष्य अधीर भऽ जाइत। पहिने इंग्लैंडमे छतरी -छत्ता- ओढ़नाइ गमारपन बुझल जाइत छलै। जै दुआरे लोक बरखोमे भीजैत चलैत मुदा छाता नै ओढ़ैत। ऐ गलत प्रथाक विरोध करैत हेनरी जेम्स छाता ओढ़ब शुरु केलनि। सदिखन ओ छाता संगेमे राखथि। जइसँ जेम्हर होइत चलथि व्यंग्यक बौछार हुअए लगनि। मुदा तेकर एक्को पाइ परवाह नै करथि।

देखा-देखी लोक हुनकर अनुकरण करए लगल। किछु दिनक बाद सभ छाता रखए लगल। जइसँ चलनि बनि गेल। चलैन एत्ते बढ़ि गेलै जे स्त्रीगणो आ राजमहलोक सभ छाता ओढ़ए लगल।

बादमे जएह सभ व्यंग्य करैत वएह सभ हेनरी जेम्सकेँ बधाई देमए लगलनि। बधाई देनिहारकेँ हेनरी जेम्स कहथिन- "जे कियो उपहास आ व्यंग्यक विरोधसँ नै डरत, वएह छोटसँ पैध धरि परिवर्तन कऽ सकैत अछि।"

चाहे शिक्षा हो आकि खेती आकि आन-आन जिनगीक पहलू, रुढ़िवादी पुरान प्रथाकेँ तोड़ै पड़त। जाबे ओ नै टूटत ताबे नव समाजक निर्माण कल्पना रहत। तँए किछु प्रथाकेँ तोड़ि आ किछुकेँ सुधारि चलए पड़त। ऐ लेल सभमे साहस आनए पड़त।

महादान

अज्ञानक निवारण करब सभसँ पैघ पुण्य परमार्थ थिक। जे स्वध्याय आ ज्ञानार्जनसँ होइत अछि। उत्तराखंडमे एकटा पुरान नगरमे सुबोध नाओंक राजा राज्य करैत छलाह। हुनक माने सुबोधक नियम छलनि जे राजक काज शुरु करैसँ पहिने, आएल याचक सभकँ दान दैत छलाह। ऐ नियममे कहियो भूल नै भेलनि।

एक दिन सभ याचककँ दान दऽ देलखिन मुदा विचित्र स्थिति पैदा भऽ गेलनि। एकटा याचक ओहन आएल छल जे दानक लेल तँ हाथ पसारैत छल मुदा मुँहसँ किछु नै बजैत। सभ हेरान होइत जे हिनका की देल जाइन? एतथर्द बुद्धियार सबहक सलाहकार बोर्ड बनौलनि। कियो विचार दन्हि जे वस्त्र देल जाए त कियो अन्न देबाक सलाह देथिन। कियो सोना-चानीक विचार देथिन। मुदा समस्याक यथार्थ समाधान हेबे ने करैत। सुबोधक पत्नी उपवर्गो रहथिन।

उपवर्गा कहलकनि- “राजन! जै आदमीक मुँहसँ बोल नै निकलै ओकरा आन कोनो चीज देब उचित नै। तँए एहेन लोककँ मुँहमे बोल देब सभसँ उत्तम हएत। अर्थात् ज्ञानदान। ज्ञानसँ मनुष्य अपन सभ इच्छा-आकांक्षा पूर्ति कऽ सकैत अछि आ दोसरोकँ मदति कऽ सकैत अछि।”

उपवर्गाक विचार सभकँ जँचलनि। ओइ आदमीक लेल शिक्षा व्यवस्था कएल गेल। ओइ दिन सुबोध अपन दानक सार्थकता बुझलनि।

भाग्यवाद

भाग्यवाद, शकुन, फलित ज्योतिष जकाँ अनेको प्रकरण अछि जे जनसमुदायकेँ जंजालमे ओझरा शोषणक रास्ता शोषकक लेल खोलि दैत अछि। एकटा ज्योतिषी सुख-दुख, जनम-मरणक बात कहि मनसम्फे धन जमा कऽ ताड़ी-दारु खूब पीबैत। एक दिन एकटा जमीनदारक ऐठाम पहुँच, हुनक हाथ देख कहलखिन जे एक बर्खक अभियनतरे अहाँक मृत्यु भऽ जाएत। ज्योतिषीक बातक बिसवास कऽ जमीनदार दिन व दिन सोगाए लगलाह। जमीनदारकेँ तीन गोट बेटा। तीनू पिताक आज्ञापालक। पिताकेँ सोगाएत देख मझिला बेटा पूछलकनि- ''बाबूजी! अपने दिनानुदिन किएक रोगाएल जाइ छी?''

चिन्तित मने जमीनदार उत्तर देलखिन- ''बौआ! हमर औरदा पूरि गेल। सालक भीतरे मरि जाएब।''

''ई, अहाँ केना बुझलिऐक?''

''ज्योतिषी हाथ देख कहलनि।''

मझिला बेटा ज्योतिषीकेँ बजा पूछलखिन। पैछले बातकेँ ज्योतिषी दोहरा देलकनि। मझिला बेटा ज्योतिषीकेँ पुनः पूछल- ''अहाँ अपने कत्ते दिन जीब?''

हँसैत ज्योतिषी उत्तर देलखिन- ''तीस बर्ख।'' ज्योतिषीक बात सुनि ओ घरसँ फरुसा आनि सोझे ज्योतिषीक गरदनिपर लगा देलक। ज्योतिषीक मूड़ी धरसँ अलग भऽ गेल। तखन ओ पिताकेँ कहलक- ''हिनकर उमेर तीस बर्ख बचले छलनि तखन आइ किएक मरलाह? ई सभ ठक छी। ठकक बातमे पड़ि अहाँ अनेरे सोगाएल जाइ छी।''

जमीनदारक भ्रम टूटि गेल। धीरे-धीरे निरोग हुअए लगलाह।

सद्वृति

स्कन्दपुराणक कथा थिक। एकबेर कात्यायन देवर्षि नारदसँ पूछलकनि- ‘‘भगवान! आत्म-कल्याणक लेल भिन्न-भिन्न शास्त्रमे भिन्न-भिन्न उपाए आ उपचार बताओल गेल अछि। गुरुजन सेहो अपन-अपन विचारानुसार कते तरहक साधन-विधानक महात्म्य बतौने छथि। जना-जप, तप, तियाग, बैराग्य, योग, ज्ञान, स्वध्याय, तीर्थ, व्रत, धियान-धारण, समाधि इत्यादि अनेको रास्ता कहने छथि। जे सभ करब असंभवे नै असाध्यो अछि। सामान्यजन तँ निर्णये ने कऽ सकैत अछि जे एहिमे ककरा चुनल जाए? कृपा कऽ अपने एकर समाधान करियौक जे सर्वसुलभ सेहो होय आ सुनिश्चित मार्ग सेहो होय।’’

धियानसँ नारद कात्यायनक बात सुनि कहलखिन- ‘‘हे मुनिश्रेष्ठ! सद्ज्ञान आ भक्तिक एक्के मार्ग अछि। जे थिक मनुष्यकेँ सत्कर्ममे प्रवृत्त करब। स्वयं संयमी बनि अपन सामर्थ्यसँ गिरल आदमीकेँ उठबए आ उठलकेँ उछालैमे नियोजित करए। सत्प्रवृत्तिये असल देवी थिक। जकरा जे जत्ते श्रद्धासँ सिंचैत अछि ओ ओते विभूतिकेँ अर्जित करैत अछि। आत्म-कल्याण आ विश्व-कल्याणक समन्वित साधनाक लेल परोपकार-रत रहब श्रेष्ठ अछि। चाहे व्यक्ति कोनो जाति आकि धर्मक किएक ने होथि।’’

आश्रम नै स्वभाव बदली

एकटा युवक उद्धत स्वभावक छल। बात-बातमे खिसिया कऽ आगि-अंगोड़ा भऽ जाइत। जँ कियो बुझबै-सुझबै छलै तँ ओ घर छोड़ि संयासी बनैक धमकी दै छलै। ओइ युवकसँ परिवारक सभ परेशान रहैत। एक दिन पिता खिसिया कऽ संयासी बनैले कहि देलक।

घरसँ किछुऐ दूर हटि संयासीक आश्रम छलै। जे ओकरा बुझल छलैक। घरसँ निकलि युवक सोझे संयासीक आश्रम पहुँच गेल। आश्रमक संचालक ओइ युवकक उदंडतासँ परिचित छल। युवककेँ आश्रममे पहुँचते, संचालक रास्तापर अनै दुआरे पुचकारि कऽ लगमे बैसाए पूछलक। ओ युवक संयासक दीक्षा लैक विचार व्यक्त केलक। दोसर दिन दीक्षा दैक आश्वासन संचालक दऽ देलखिन।

दीक्षाक विधानमे पहिल कर्म छल गोसाँइ उगैसँ पहिने समीपक धारमे नहा कऽ एनाइ। आलसी प्रवृत्ति आ जाड़सँ डरैबला युवककेँ ई आदेश खूब अखड़लै। मुदा करैत की? नियम पालन तँ करै पड़तै।

कपड़ाकेँ देवालक खूँटीपर टांगि युवक नहाइले गेल। जखन युवक नहाइले गेल कि संचालक कपड़ाकेँ चिरी-चोंट फाड़ि देलक। नहा कऽ थरथराइत युवक आएल तँ देखलक। तामसे आरो थरथराए लगल। मुदा करैत की?

दीक्षाक मुहूर्त्त संचालक सौंझुका बनौलक। ताधरि मात्र किछु फल-फलहरी खाएब छलैक। तँए ओइ युवकक लेल नोन मिलाओल करैला परोसि कऽ थारीमे देल गेलै। एक तँ करैला ओहिना तीत दोसर छुछे। कंठसँ निच्चाँ युवककेँ उतड़बे ने करए।

भोरमे उठब, जाड़मे नहाएब, फाटल-चीटल कपड़ा पहिरब आ तइपर सँ तीत करैला खाएब। युवक खिन्न हुअए लगल। संचालक सभ बुझैत। युवककेँ बजा संचालक कहलक- ‘‘संयासी बनब कोनो खेल नै छिऐक। ऐ दिशामे

बढ़निहारकँ डेग-डेगपर मनकँ मारए पड़ैत छै। परिस्थितिसँ ताल-मेल बैसाए, संयम बरैत, अनुशासनक पालन करए पड़ैत छै। तखन संयासी बनैत अछि।"
भरि दिन युवक अपन प्रस्तावपर सोचैत-बिचारैत रहल। तेसर पहर अबैत-अबैत ओ पुनः घुरि कऽ घर आबि गेल। संयम साधना आ मनोनिग्रहक नामे तँ संयास थिक। जे घरोपर रहि लोक पालन कऽ सकैत अछि।
स्वभाव बदलने वातावरणो बदलि जाइत छै।

पुरुषार्थ

संसारक कुशल-क्षेम बुझैले एक दिन भगवान नारदकँ पृथ्वीपर पठौलखिन। पृथ्वीपर आबि नारद एकटा दीन-हीन बूढ़ आदमी लग पहुँचला। ओ बेचारे - वृद्ध-आदमी- अन्न-वस्त्रक लेल कलहन्त छल। नारद जीकँ देखते चीन्हि गेलखिन। कानैत-कलपैत कहए लगलनि- ‘‘अहाँ घुरि कऽ जब भगवान लग जाएब तखन कहबनि जे हमरा सन-सन लोकक लेल जीबैक जोगार करथि।’’

बूढ़क बात सुनि उदास मने नारद आगू बढ़ला। आगू बढ़िते एकटा धनीक आदमीसँ भैंट भेलनि। ओहो नारदकँ चीन्हि गेलनि। ओ धनीक नारदकँ कहलकनि- ‘‘भगवान हमरा कोन जंजालमे फँसौने छथि जे दिन-राति परेशान-परेशान रहै छी। कम धन दितथि जे गुजरो चलैत आ चैनोसँ रहितौं। तँए भगवानकँ कहबनि जे जंजाल कम कऽ दथि।’’

दुनूक बात सुनलापर नारद मने-मन सोचए लगला जे कियो धने तबाह तँ कियो निर्धने तबाह। सोचैत-बिचारैत नारद आगू बढ़ला। थोड़े आगू बढ़लापर बबाजीक झुण्ड भेटलनि। नारदकँ देख बाबाजी घेरि कऽ कहए लगलनि- ‘‘स्वर्गमे तोहीं सभ मौज करबह। हमरो सभले राजसी ठाठ जुटाबह नै तँ चुट्टासँ मारि-मारि भुस्सा बना देबह।’’

नारद घूमि कऽ भगवान लग पहुँचला। यात्राक वृतान्त भगवान नारदसँ पूछल। तीनू घटनाक वृतान्त नारद सुना देलखिन। हँसैत नारायण कहए लगलखिन- ‘‘देवर्षि! हम ककरो कर्मक अनुसार किछु दइले विवश छी। जे कर्महीन अछि ओकरा कत्तए सँ किछु देबैक। अहाँ फेर जाउ। ओइ वृद्ध गरीबकँऽ कहबै जे भाय अपन गरीबी मेटबैले संघर्ष करु। अपन पुरुषार्थकँ जगाउ। तखन सभ कुछ भेटत। दोसर ओइ धनीककँ कहबै जे अहाँकँ धन दोसराक उपकार करैले देलौं। से नै कऽ संग्रही बनि गेलौं तँए अहाँ धनक जंजालमे फँसि गेल छी। आ ओइ बाबाजी सभकँ कहबै जे परमार्थीक भेष बना कोढ़ि आ स्वार्थी बनि गेल छी, तँए अहाँ सभकँ नरक हएत।

नैष्ठिक सुधन्वा

महाभारतमे सुधन्वा आ अर्जुनक बीच लड़ाइक कथा आएल अछि। दुनू महाबलि, युद्ध विद्यामे निपुन। दुनूक बीच लड़ाइ छिड़ल। धीरे-धीरे लड़ाइ जोर पकड़ैत गेलै। लड़ाइ एहेन भयंकर रुप लऽ लेलक जे निर्णयक दौड़ आबिये ने रहल छलैक।

अंतिम बाजी ऐ विचारपर अड़ल जे फैसला तीन वाणमे हुअए। या तँ एतबेमे कियो हारि जाए आकि लड़ाइ बन्न कऽ दुनू हारि कबूल कऽ लिअए। जीवन-मरणक प्रश्न दुनूक सामने। कृष्ण सेहो रहथिन। कृष्ण अर्जुनकँ मदति करैत रहथिन। हाथमे जल लऽ कृष्ण संकल्प केलनि जे "गोवरधन उठौला आ ब्रजक रक्षा करैक पुण्य हम अर्जुनक वाणक संग जोड़ैत छी।"

सुधन्वा संकल्प केलक- "पत्नी धर्म पालनक पुण्य अपन अस्त्रक संग जोड़ैत छी।"

दुनू अस्त्र आकाश मार्गसँ चलल। आकाशेमे दुनू टकराएल। अर्जुनक अस्त्र कटि गेल। सुधन्वाक अस्त्र आगू बढ़ल मुदा निशान चूकि गेलै।

दोसर अस्त्र पुनः उठल। कृष्ण अपन पुण्य अस्त्रक संग जोड़ैत कहलखिन- "गोहि -ग्राह- सँ हाथीक जान बचाएब आ द्रौपदीक लाज बँचबैक पुण्य जोड़ैत छी।"

अपन अस्त्रक संग जोड़ैत सुधन्वा बाजल- "नीतिपूर्वक उपारजन आ दोषरहित चरित्रक पुण्य जोड़ै छी।"

दुनू अस्त्र आकाशेमे टकराएल। सुधन्वाक वाण अर्जुनक वाणकँ काटि धरासायी कऽ देलक। तेसर अस्त्र बाकी रहल। ऐपर निर्णए आबि गेल। अर्जुनक बाणक संग जोड़ैत कृष्ण कहलखिन- "बेर-बेर ऐ धरतीपर अवतार लऽ धरतीक भार उताड़ैक पुण्य जोड़ै छी।" अपन वाणक संग जोड़ैत सुधन्वा

कहलक- ‘‘अगर स्वार्थक लेल धनकेँ एक्को क्षण सोचने होय आ सदति परमार्थमे लगाओल पुण्य जोड़ैत छी।’’

दुनू वाण आकाश मार्गसँ चलल। अर्जुनक वाण कटि कऽ निच्चाँ गिरल। दुनू पक्षमे के अधिक समर्थ, ई जानकारी देवलोकमे पहुँचल। देवलोकसँ फूलक वर्षा सुधन्वापर हुअए लगल। लड़ाइ समाप्त भेल। भगवान कृष्ण सुधन्वाक पीठि ठोकि कहलखिन- ‘‘नरश्रेष्ठ! अहाँ साबित कऽ देलौं जे नैष्ठिक गृहस्थ साधक कोनो तपस्वीसँ कम नै होइत छै।’’

सद्‌गृहस्त

एकटा गृहस्त छलाह। संयमसँ जीवन-यापन करैत छलाह। परिवारकेँ सुसंस्कारी बनबैमे सदिखन लागल रहथि। नीतिपूर्वक आजीविकासँ जिनगी बितबथि। परिवारक काज आ खर्चसँ जे समए आ धन बँचैत छलनि ओ परमार्थमे लगबथि। ओ गृहस्त कहियो तपोभूमि नै गेलाह मुदा घरेमे तपोवन बना नेने छलाह। देवतो खुशी रहैत छलथिन।

एक दिन, गृहस्तक क्रियासँ खुशी भऽ इन्द्र आबि वर मांगैले कहलखिन। गृहस्त असमंजसमे पड़ि गेलाह जे की मंगबनि। जखन असंतोषे नै तखन अभाबे कथीक? स्वाभिमानी गमौलाक उपरान्ते कियो ककरोसँ किछु पबैत अछि। ई बात सोचि गृहस्त मने-मन विचारए लगलाह जे जइसँ ॠणो-भार नै हुअए आ देवतो अपमान नै बुझथि। बड़ी काल धरि सोचैत-विचारैत गृहस्त मंगलकनि- ''हमर छाया जतए पड़ै ओतए कल्याणक बरखा होय।''

इन्द्र वरदान तँ दऽ देलखिन मुदा अचंभित भऽ गृहस्तसँ पूछलखिन- ''हाथ रखलापर कल्याणो होइत आ आनंदो, प्रशंसो आ प्रत्युपकारक संभवनो होइत। मुदा छायासँ कल्याण भेलोपर लाभसँ बंचित रहए पड़ैत। तखन एहेन विचित्र वर किएक मंगलौं?''

मुस्कुराइत गृहस्त कहलखिन- ''देव! सोझाबलाक कल्याण भेने अपनामे अहंकार पनपैत अछि। जइसँ साधनामे बाधा उपस्थिति होइत। छाया ककरापर पड़ल, के कत्ते लाभान्वित भेल, ई पता नै लगब जीवनक लेल श्रेयस्कर थिक।''

साधनाक यएह रुप पैघ होइत। यएह क्रम प्रगतिक रास्तापर चलैत-चलैत व्यक्ति महामानव बनैत अछि।

सद्भाव

अपन शिष्यक संग महात्मा इसा कतौ जाइत रहथि। साँझ पड़ि गेलै। राति बितबैक लेल एकठाम ठहरि गेलाह। संगमे पाँचेटा रोटी खाइले छलनि। रोटीक हिसाबे खेनिहार अधिक तँए सभकेँ पेट भरब कठिन। अपनामे शिष्य सभ यएह गप-सप्प करैत। इसो सुनलखिन। मुस्कुराइत इसा कहलखिन- ‘‘सभ रोटीकेँ टुकड़ी-टुकड़ी तोड़ि एकठाम कऽ लिअ आ चारु भागसँ सभ बैस, खाउ। जइसँ सभकेँ एक रंग भोजन भेट जाएत।’’

महात्मा इसाक विचार मानि सभ सएह केलक। संतोषक जन्म सबहक हृदेमे भऽ गेल। सभ कियो खाएब शुरु केलक। रोटी सठैत-सठैत सबहक पेटो भरि गेल। तखन एकटा शिष्य बाजल- ‘‘ई गुरुदेवक चमत्कार छियनि।’’

शिष्यक बात सुनि इसा कहलखिन- ‘‘ई अहाँ लोकनिक सद्भावक सहकार थिक नै कि चमत्कार। अगर अहाँ सभ अपनामे छीना-झपटी करितौं तँ ई संभव नै होइत। जइठाम सद्भावसँ परिवारक संबंध होइत तइठाम एहिना प्रभुक अयाचित सहयोग भेटैत अछि।’’

आलस्य वनाम पिशाच

वन विहार करैक लेल वासुदेव, बलदेव आ सात्यकि घोड़ापर चढ़ि निकललाह। घनघोर जंगल रहने तीनू गोटे रास्तामे भटकि गेलाह, जाइत-जाइत एहेन सघन बनमे पहुँच गेलथि, जइठामसँ ने पाछू होएब बननि आ ने आगू बढ़ब। मुन्हारि साँझ भऽ गेलै। अन्हारमे चलब आरो कठिन भऽ गेलनि। अचताइत-पचताइत तीनू गोटे अटकि गेलाह। एकटा झमटगर गाछ छलैक जहिक निच्चाँमे घोड़ा बान्हि तीनू गोटे राति बितबैक कार्यक्रम बनौलनि। खाइ-पीबैले किछु रहबे ने करनि तँए गाछेक निच्चाँमे दूबिपर सुतैक ओरियान केलनि। मुदा मनमे शंका होइत रहनि जे जँ तीनू गोटे सुति रहब आ घोड़ा कियो खोलि कऽ लऽ जाए? तीनू गोटे विचारलनि जे एक-एक पहर जागि अपनो आ घोड़ोक ओगरवाही कऽ लेब आ सुतियो लेब।

पहरा करैक पहिल पारी सात्यकिक भेल। वासुदेव आ बलदेव सुति रहला। सात्यकि जगल रहल। थोड़े खानक बाद गाछपर सँ पिशाच उतड़ि सात्यकिक संग मल्लयुद्ध करैक लेल ललकारलक। ओहने उत्तर सात्यकियो देलक। दुनूक बीच घुस्सा-घुस्सी हुअए लगल। सौंसे पहर दुनूक बीच मल्लयुद्ध होइते रहल। कतेठाम सात्यकिक देहमे चोटो लगलैक। छालो ओदरलै। पहर बीत गेल।

दोसर पारी बलदेवक आएल । सात्यकि सुति रहल। बलदेव पहरा करए लगल। थोड़े कालक बाद पिशाच पुनः आबि चुनौती देलकनि। बलदेवो ओहने उत्तर देलखिन। पिशाचक आकार सेहो नमहर भऽ गेल छलै। दुनूक बीच मल्लयुद्ध शुरु भेल। बलदेवोकेँ पिशाच दुरगति कऽ देलकनि। दोसरो पहर बीतल। तेसर पहरक पारी वासुदेवक छलनि। पुनः पिशाच आबि हुनको चुनौती देलकनि। मुदा वासुदेव हँसवो करथि आ कहबो करथिन- ‘‘बड़ मजगर अहाँ छी। निन्न आ आलससँ बँचैक लेल मित्र जकाँ मखौल करै छी।’’

पिशाचक बल घटए लगलै। आकारो छोट होइत गेलै। भिनसर भेल। नित्यकर्मसँ तीनू गोटे निवृत्ति भऽ चलैक तैयारी करए लगलथि। तखन सात्यकि आ बलदेव अपन रौतुका चरचा करैत, जतए-जतए चोट लगल रहनि सेहो देखोलखिन। हँसैत वासुदेव कहलखिन- “ई पिशाच आरो किछु नै थिक। ई मात्र कुसंस्कार रुपी क्रोध छी। ओकरो ओहने प्रत्युत्तर भेटलै तँए बढ़ैत गेल। मुदा जखन ओकरा उपेक्षाक रुपमे देखलिऐ तखन ओ छोट आ दुर्बल भऽ गेल।”

स्वर्ग आ नर्क

विद्यालयक ओसारपर बैस गुरु आ शिष्य गप-सप्प करैत रहथि। एकटा शिष्य गुरुसँ स्वर्ग आ नर्कक संबंधमे पूछलकनि। शिष्यकेँ बुझबैत गुरु कहए लगलखिन- ''स्वर्ग आ नर्क अही धरतीपर अछि। जे कर्मक अनुसार अही जिनगीमे भेटैत छै।''

गुरुक उत्तरसँ शिष्य संतुष्ट नै भेल। शंका बनले रहलै। पुनः गुरुसँ अपन शंका व्यक्त केलक। गुरु बुझलनि जे बिना व्यवहारिक जिनगी देखौने शिष्य संतुष्ट नै हएत। ओ उठि शिष्य सभकेँ संग केने गाम दिस विदा भेला।

गाममे एकटा बहेलियाक घर छलै। ओइठाम पहुँचते, सभ देखलक जे पेट-पोसैक लेल बहेलिया जीव-हत्या कऽ रहल अछि। ततबे नै, जीव हत्यो केने ने देहपर वस्त्र छै आ ने भरि पेट भोजन। धीयो-पुतोक देहपर माछी भिनकै छै। एको क्षण ओतए रहैक इच्छा ककरो नै होय। चुपचाप गुरुजी शिष्यक संग ओतएसँ विदा भऽ गेलाह। दोसर ठाम पहुँचला। ओ बेश्याक घर छलै। युवावस्थामे ओ बेश्या खूब पाइयो कमेने छलि आ भोगो केने छलि। मुदा बुढ़ाढ़ीमे आबि अनेको रोगोसँ ग्रसित भऽ परिवारो-समाजोसँ तिरस्कृत भेल छलि। पेटक दुआरे भीख मंगैत छलि। सभ कियो देख ओतएसँ विदा भऽ गेलाह।

तेसर परिवार गृहस्तक छल। जइठाम जा सभ देखलखिन जे गृहस्त जेहने संयमी छथि तेहने परिश्रमी। स्वभावसँ उदार आ सद्‌गुणी सेहो छथि। जइसँ परिवार सुख-समृद्धिसँ भरल-पूरल छलैक। गृहस्तक परिवार देख गुरुजी शिष्यक संग आगू बढ़ि चारिम परिवारमे पहुँचलाह। पोखरिक मोहारपर एकटा संत कुटी बनौने रहथि। शिक्षा आ प्रेरणा पबैक लेल दिन-राति समाजक लोक अबैत-जाइत रहैत छल। संतजी मस्त-मौला जकाँ जिनगी बितबैत रहथि। ने मनमे एक्को मिसिया क्रोध आ ने कोनो तरहक चिन्ता।

चारु परिवार देख शिष्यक संग गुरुजी विद्यालय दिस चललाह। रास्तामे शिष्यकेँ कहलखिन- ''पहिल जे दुनू परिवार देखलिऐ ओ नरकक रुपमे छल आ बादक जे दुनू परिवार देखलिऐ ओ स्वर्गक रुपमे।''

यथार्थक बोध

शिखिध्वज ब्रह्मज्ञानी बनए चाहैत रहथि। ओ सुनने रहथि जे तियाग आ बैराग्यसँ मनुष्य ब्रह्मज्ञानी बनैत अछि। तँए शिखिध्वज घर-परिवार छोड़ि जंगलमे कुटी बना रहए लगलथि। ओइ बनमे तपस्वी शतमन्यु सेहो रहै छलथिन। शतमन्युकेँ पता लगलनि जे एकटा नवांगतुक घर-परिवार छोड़ि कुटी बना रहैत अछि।

शतमन्यु आबि शिखिध्वजकेँ कहलखिन- ‘‘गामक घर-गिरहस्ती उजाड़ि बनमे वएह सभ सरंजाम माने रहैक व्यवस्था जुटबैमे लागि गेलौं, तइसँ की लाभ? बैराग्य तँ अहंता आ लिप्सासँ हेबाक चाही। जँ भऽ सकए तँ घरेमे तपोवन बना सकै छी।’’

शतमन्युक विचार सुनि शिखिध्वजकेँ वास्तविकताक बोध भऽ गेलनि। ओ घुरि कऽ घर आबि परिवारक बीच रहि सेवा-साधनामे जुटि गेलाह। शिखिघ्वज एकांकी मुक्तिक जगह सामूहिक मुक्तिक मार्ग अपनौलनि। हुनके वंशमे बाल्यखिल्य ऋृषि भेलखिन, जे सौंसे जम्बूद्वीपकेँ देवभूमि बना देलखिन।

विद्वताक मद

एक दिन महाकवि माघ राजा भोजक संग वन-विहार कऽ घुमल अबैत रहथि। रास्तामे एकटा झोपड़ी देखलखिन। ओइ झोपड़ीमे एकटा वृद्धा टोकरी माने तकली कटैत रहथि। ओइ वृद्धासँ माघ पूछलखिन- "ई रास्ता कत्तऽ जाइत अछि?" वृद्धा माघकेँ चीन्हि गेलीह। ओ हँसैत उत्तर देलखिन- "वत्स! रास्ता तँ कतौ नै जाइत अछि। जाइत अछि ओइपर चलैबला राही। अहाँ सभ के छी?"

माघ- "हम सभ यात्री छी।"

मुस्कुराइत वृद्धा बाजलि- "तात्! यात्री तँ सुरुज आ चान दुइये टा छथि। जे दिन-राति चलैत रहैत छथि। सच-सच कहू जे अहाँ के छी?"

थोड़े चिन्तित होइत माघ कहलखिन- "माँ! हम क्षणभंगुर आदमी छी।"

थोड़े गंभीर होइत पुनः वृद्धा कहलकनि- "बेटा! यौवन आ धने टा क्षणभंगुर होइत। पुराण कहैत अछि जे ऐ दुनूक बिसवास नै करी।"

माघक चिन्ता आरो बढ़लनि। रोषमे कहलखिन- "हम राजा छी।"

हुनका मनमे एलनि जे राजाक नाओं लेलासँ ओ सहमि जेतीह। मुदा ओ वृद्धा निर्भीक भऽ उत्तर देलकनि- "नै भाय, अहाँ राजा केना भऽ सकै छी? शास्त्र तँ दुइये टा राजा- "यम आ इन्द्र मानने अछि।"

अनंत

"हरि अनंत हरि कथा अनंता" -तुलसी

एक दिन भगवान बुद्ध आनंदक संग एकटा सघन बनसँ गुजरैत रहथि। रास्तामे, दुनू गोटेक बीच ज्ञानक चर्च चलैत रहनि। आनंद पूछलखिन- "देव, अपने तँ ज्ञानक भंडार छिऐ। अपने जे जनैत छी ओ हमरा बुझा देलौं?"

आनंदक बात सुनि उलटि कऽ बुद्धदेव पूछलखिन- "ऐ जंगलक जमीनपर कते सुखल पत्ता पड़ल छै? हम जै गाछक निच्चाँमे ठाढ़ छी ओइ गाछमे कते सुखल पात लागल छै? आ अपना सबहक पाएरक निच्चाँ कते पड़ल छै। सभ मिला कत्ते हएत?"

बुद्धदेवक प्रश्नसँ आनंद निरुत्तर भऽ गेलाह। आनंद कऽ उत्तर नै दैत देख तथागत कहलखिन- "ज्ञानक विस्तार ओते अछि जते ऐ वन प्रदेशमे सुखल पातक परिवार। अखन धरि हमहूँ एतबे बुझलौंहें, जे जते वृक्षक ऊपर सुखल पात अछि। मुदा पाएरक निच्चाँ जे अछि ओ हमहूँ ने बुझै छी।"

हँसैत लहास

जिनगीकेँ जिनगी बुझि मनुष्यकेँ जीबाक चाहियेक। जँ से नै भेल तँ जिनगीक कोनो महत्व नै जाएत। जे कियो जिनगीकेँ कमेनाइ-खेनाइ धरि रखैत, ओकर संस्कार मरलोपर ओहिना रहि जाइत।

एक दिन दूटा शव एक्के बेर श्मशान पहुँचल। कठिआरीक लोक डाहैक ओरियान करए लगल। एकटा शव दोसरकेँ देख ठहाका मारि हँसए लगल। हँसैत शवकेँ देख दोसर शव पुछलक- "बंधु, एहेन कोन बात भऽ गेल जे अहाँ हँसि रहल छी। जबकि दुनू गोटे एक्के स्थितिमे छी?"

हँसैत शव उत्तर देलक- "बंधु, अहाँकेँ मन अछि आिक नै मुदा हमरा तँ मन अछि। दुनू गोटे संगे गामक स्कूलमे पढ़ने रही। पढ़लाक वाद अहाँ वणिक वृत्तिमे लगि दिन-राति पाइयेक हिसाबो आ भोग-बिलासमे लगि गेलौं। आब अहाँक ओहन स्थिति भऽ गेल अछि जे श्मशानो घाटपर पाइयेक हिसाब आ भोगे-बिलासक गर लगबै छी।"

"आओर अहाँ?" -दोसर पूछलक।

पहिल- "जाधरि जीबैत छलौं मस्त सऽ रहलौं। ने कहियो बेसी पाइक जरुरत भेल आ ने तइले मनमे चिन्ता। जहिना चिन्ता मुक्त पहिने छलौं तहिना अखन छी। अच्छा आब अहूँ जाउ आ हमहूँ जाइ छी। अछिया तैयार भऽ गेल। नमस्कार।"

कहि पहिल शव चिता दिस बढ़ि गेल आ दोसर कनगुरिया ओंगरीपर हिसाब जोड़ए लगल।

अनगढ़ चेतना

ज्ञान (विद्या) अनगढ़ चित्तकेँ सुगढ़ बनबैत। जइसँ सोचै आ चलैक दिशा निर्धारित होइत। ओना मनुष्यक अनगढ़ताक प्राप्ति जन्मजात होइत। जहिना शरीरक रक्षाक लेल भोजनक प्रयोजन होइत तहिना मनुष्यता प्राप्त करैक लेल विद्याक।

वशिष्ठ जी रामकेँ, भयंकर वनमे विचरण करैबला उनमत्तक, आँखिक देखल कथा सुनबैत कहलखिन- ''ओ -उनमत्त- देखैमे तँ स्वस्थ बुझि पड़ैत मुदा ओकर जे क्रिया-कलाप होइत ओ विल्कुल पागलक सदृश्य होइत। सदिखन रास्ताक व्यतिक्रम करैत। जहाँ-तहाँ बौआएलो घुमैत आ अन्ट-सन्ट रास्ता सेहो बनबैत। जइसँ अपनो देह-हाथक नोकसान करैत आ काँट-कुशमे ओझराइलो रहैत। मुदा तैयो अपनाकेँ बुद्धियार बुझि दोसराक नीको विचारकेँ मोजर ने दैत। जइसँ सदिखन भय माने डर आ चिन्तासँ मन त्रस्त रहैत। मुदा तैयो ने अधलाह रस्ता छोड़ैत आ ने ककरो नीक करैत।''

वशिष्ठक विचार सुनि राम पूछलखिन- ''भगवन! ओ उन्मादी कतए रहैत अछि, ओकर नाओं की थिकैक आ ओकर कोनो उपचार छै की नै?''

वशिष्ठ- ''वत्स, ओ कियो आन नै, मनुष्यक अनगढ़ चेतना छी। जे जालमे फँसल ओइ चिड़ैक सदृश्य अछि जे मरैक रास्ता देख फड़फड़ाइत तँ अछि मुदा निकलैक रस्ते ने देखैत।''

सत्य विद्या

विद्याध्ययन साधना छी। जइसँ अन्तः क्षेत्र शुद्ध आ पुरुषार्थक जन्म होइत। जकरा संपादित केने बिना मानव जीवनक सभ उपलब्धि व्यर्थ।

जिनगी भरि भरद्वाज मुनि तपस्या करैत रहलाह। जखन मरैक बेर एलनि तँ देवदूत लेमए एलनि। देवदूतकँ भारद्वाज मुनि कहलखिन- ''हमरा अही लोकमे फेर जनमए देल जाउ। स्वर्ग जा कऽ की करब?''

मुनिक बात सुनि, आश्चर्जित होइत देवदूत पूछलकनि- ''तपक लक्ष्य तँ स्वर्ग प्राप्त करब होइत अछि।''

भारद्वाज कहलखिन- ''ज्ञान संचय आ पूर्ण सत्य तक पहुँचैक लेल। अखन हमर ज्ञान संपदा बहुत कम अछि। तँए ओते जन्म धरि तपस्या करए चाहै छी जाधरि सत्यकँ लगसँ नै देख सकिऐ। स्वर्गसँ ज्ञान बहुत पैघ होइत अछि। स्वर्गसँ सुविधा भेटैत जबकि ज्ञानसँ आनंद।''

समता

गुरुकुलमे जे विद्याध्ययन होइत ओ अमृत सदृष्य होइत। किएक तँ ओ साधनाक नै उच्च स्तरीय आदर्शक निर्माण करैत। ऐ हेतु गुरुकुलक छात्र उपभोगकँ नै उपयोगक महत्व सत्-प्रयोजनक लेल अपन अगिला माने भावी दिशाधाराकँ निर्धारित करैत अछि।

एक दिन सम्पन्न घरसँ आएल छात्र गुरुकुल संचालक आत्रेयसँ पूछल- ''भगवन! जे कियो अपना घरसँ नीक भोजन आ नीक वस्त्र मंगा सकै छथि ओ ओकर उपयोग किअए ने कऽ सकै छथि? ओहो किअए निर्धने परिवारक छात्र जकाँ जीवन-यापन करथि?''

गंभीर मुद्रामे आत्रेय कहलखिन- ''छात्र, श्रेष्ठ माने उत्तम मनुष्य, जै समाजमे रहैत छथि ओ ओइ समाजक अनुकूल जीवन-यापन करैत छथि। यएह समता अपनो आ दोसरोले सौजन्य उत्पन्न करैत अछि। सम्पन्नता प्रदर्शन इर्ष्या आ अहंकारकँ उत्पन्न करैत अछि। जइसँ विग्रहक जन्म होइत अछि। जे सहयोगक नींवकँ डोला दैत अछि। विषमतेसँ समाजमे अनेको विग्रह ठाढ़ होइत अछि। अपराध बढ़ैत अिछ, जइसँ अनाचारक जन्म सेहो होइत अछि। ऐठाम माने गुरुकुलमे समान जीवन जीबैक रास्ता सिखाओल जाइत अछि। धनिक अपन धन गरीबकँ उठबैमे लगावह। नै कि निजी सुविधा-संवर्द्धनमे।''

समताक दूरगामी सत्-परिणामकँ छात्र बुझि अधिक उपयोगक विचारकँ बदलि लिअए।

जते चोट तते सक्कत

कोशाम्बीक राजा शूरसेनसँ मंत्री भद्रक पुछलकनि- राजन, अपने श्रीमंत थिक। राकुमारक शिक्षाक लेल एक से एक विद्वान् रखि सकै छिऐ। तहन अपने ऐ पुष्प सन बच्चाकेँ वन्य प्रदेशमे बनल गुरुकुलमे किएक पठबैत छियनि? जइठाम सुविधाक घोर अभाव छै। एहेन कष्टमय जीवनचार्यामे बच्चाकेँ पठाएब उचित नै?''

मंत्रीक विचार सुनि मुस्कुराइत शूरसेन उत्तर देलखिन- ''हे भद्रक, जहिना आगिमे तपौलासँ सोना चमकैत तहिना कष्टपूर्ण जीवनचर्यासँ मनुष्य बनैत अछि। कष्टे मनुष्यकेँ धैर्य, साहस आ अनुभव दैत अछि।

वातावरणक प्रभाव सभसँ बेसी नव उमेरक बच्चेपर अधिक पड़ैत अछि। ऋृषि सम्पर्क आ कष्टमय जिनगी राजमहलमे थोड़े भेट सकैत अछि। ऐठाम तँ हम ओकरा भोगिये-बिलासी बना सकै छी। जँ क्षणिक मोहमे पड़ब तँ ओकर भविष्ये चैपट्ट भऽ जेतै। तँए ओकर उज्वल भविष्यक लेल गुरुकुल पठाएब उचित अछि।''

परिष्कार

गुरुकुलमे विद्याध्ययन सभ जाति, सभ वर्ण आ सभ समुदायक लेल हितकारी अछि। अगर जँ किनको अपन पैतृक व्यवसाय करैक होनि, तिनको पैघ उपलब्धिक लेल संस्कारक शिक्षा देब अत्यन्त अनिवार्य अछि।

एक गाममे क्षत्रिय आ वैश्य रहैत छल। ब्राह्मणक बालक तँ गुरुकुल पढ़ैले चलि गेलाह। दुनूक -क्षत्रियो आ वैश्योक- मनमे यएह जे हम योद्धा बनब तँ हम वणिक। अनेरे विद्याध्ययनमे समए किअए लगाएब। मुदा जखन कनी असथिर भऽ सोचलक तँ अपनापर शंका जरुर भेलै। मनमे खुट-खुटी एलै। मने-मन सोचलक जे से नै तँ कुल पुरोहितसँ किअए ने पुछि लिअनि। दुनू जा कऽ पुरोहितसँ पुछलक। कुल पुरोहित उत्तर देलखिन- ''ब्रह्मविद्याक तात्पर्य संयासी बनि भीख मांगब नै होइत। ओ जीवनक अंतिम भागमे अधिकारी व्यक्तिक द्वारा ग्रहण कएल जाइत छै। ब्रह्मिमद्याक प्रयोजन गुण, कर्म, स्वभावक परिष्कार करब होइत छै। जे सभ स्तरक प्रगतिक लेल आवश्यक अछि। क्षत्रिय आ वैश्य जँ ओइ विद्याकेँ ग्रहण करत तँ अपन-अपन जिनगीक कार्य क्षेत्रमे अधिक सफल आ सुन्दर ढंगसँ सम्पादन करत।''

प्राचीनकालमे गुरुकुलमे, कठिनसँ कठिन कार्यक भार छात्रकेँ दैल जाइत छल। जइसँ भारीसँ भारी काज करैक अभ्यास बनैत छलैक।

कुल पुरोहितक परामर्श मानि ओहो दुनू -क्षत्रिय और बैश्य- अपन-अपन बालककेँ गुरुकुल भेजब शुरु केलक।

गुरुकुलसँ अध्ययन कऽ लौटलापर ओहो अपन काजकेँ, बिनु अध्ययन केलहाक तुल्नामे अधिक सफल भेल।

कथनी नै करनी

एकटा लोहार वाण -तीर- बनबैक विद्यामे निपुन छल। वाणो अद्भुत बनबैत छल। वाण बनबैक कलाकेँ सीखैले दोसर लोहार आबि पुछलक- ''भाय! तोँ केना वाण बनबै छह, से हमरो कहह।''

पहिल लोहार जबाब देलक- ''भाइ!, कहलेटा सँ सभ लूड़ि नै होइ छै। तँए हम वाण बनबै छी, तूँ धियानसँ देखह।''

सुनि दोसर लोहार लगमे बैस देखए लगल। तही काल एकटा बरिआती बगलक रस्तासँ गुजरए लगल। बरिआतियो खूब झमटगर। दर्जनो गाड़ी, रंग-बिरंगक बजो, सजाबटो सुन्दर। दोसर लोहार, वाण बनौनाइ देखब छोड़ि, बरिआती देखए लगल। जखन बरिआती आँखिक अढ़ भऽ गेल, तखन ओ लोहार बाजल- ''बड़ सुन्दर बरिआती छलै।''

वाण बनबैबला लोहार कहलक- ''भाय, ने तखन देखैक फुरसत छल आ ने अखन तोहर बात सुनैक अछि। जाधरि कोनो काजकेँ तत्परतासँ नै कएल जाएत ताधरि काजक सफलताक कोन आश। तँए जे काज तत्परता आ एकाग्रतासँ कएल जाएत, वएह काज सफल हएत।''

अफसोस करैत दोसर लोहार सोचए लगल जे एकाग्रताक अभ्यास करब सभसँ जरुरी अछि। जँ से नै करब तँ जीवनमे कहियो कोनो काजमे सफल नै हएब।

ज्ञानक सूत्र कतौसँ भेटए ओकर जरुर अंगीकार करक चाही।

शालीनता

विद्या व्यक्तिकँ विनम्र बनबैत। ओकर अन्तरंगक स्तरकँ ऊपर उठबैत। शिक्षा कतौ भेट सकैत अछि मुदा विद्याक सूत्र कतौ-कतौ भेटैत अछि। जै व्यक्तिकँ विद्याक सूत्र भेट जाइत तँ ओइ व्यक्तिक काया-कल्प भऽ जाइत। छान्दोग्य उपनिषदक छठम प्रपाठमे उद्दालक आ श्वेतकेतुक संवाद अछि।

विद्यालयक परीक्षा पास कऽ श्वेतकेतु आएल। मुदा ने ओकर आत्म परिष्कृत भेल आ ने उदंडता कमल। जइसँ पिता -उद्दालक- कँ दुख भेलनि। खिसिया कऽ कहलखिन- "अगर व्यक्तित्वमे शालीनताक समावेश नै भेल तँ अनेरे कियो किअए पढ़ैमे समए नष्ट करत?"

महसूस करैत श्वेतकेतु कहलकनि- "अगर ई रहस्य जँ हमर शिक्षक जनितथि तँ जिनगी भरि शिक्षके किएक रहितथि वा तँ ऋृषि बनितथि वा द्रष्टा।"

श्वेतकेतुक विचार सुनि पिता मने-मन सोचए लगलथि जे पुत्रक प्रति पितोक दायित्व होइत। एकटा गुलरीक फड़ आनि उद्दालक फोड़लनि। गुलरीक तर माने भीतरमे छोट-छोट अनेको बीआ छलैक। ओइ बीआकँ देखबैत कहलखिन- "ऐ नान्हि-नान्हिटा बीआक भीतर विशाल वृक्ष छिपल अछि। तहिना जकरा आत्म-ज्ञान भऽ जाइत छै ओ वृक्षे सदृश्य विकासो करैत आ फड़बो-फुलेबो करैत। तहूँ ओइ तत्वकँ चिन्हह।"

मजूरी

एक दिन गाड़ीक प्रतीक्षामे लियो टाल्सटाय स्टेशनपर ठाढ़ रहथि। एकटा अमीर परिवारक महिला, साधारण आदमी बुझि, हुनका कहलकनि- ‘‘हमर पति सामनेबला होटलमे छथि। अहाँ जा कऽ हुनका ई चिट्ठी दऽ अबिअनु। ऐ काजक लेल दू आना पाइ देब।’’

चिट्ठी नेने टाल्सटाय होटल जा दऽ देलखिन। घुरि कऽ आबि अपन कमेलहा दू आना पाइयो लऽ लेलनि। कनी कालक बाद एकटा अमीर आदमी आबि, प्रणाम कऽ टाल्सटायसँ गप-सप्प करए लगल। ओ आदमी हुनकासँ नम्रतापूर्वक गप्प करैत। गप-सप्पक क्रममे ओ आदमी टाल्सटायकेँ आदरसूचक शब्द ‘‘काउंट’’ सँ सम्बोधित करैत। बगलमे बैसल ओ महिला सभ कुछ देखैत-सुनैत। ओ महिला एक गोटेकेँ पूछलक- ‘‘ई के छथि?’’

ओ आदमी लियो टाल्सटायक नाओं कहलखिन। टाल्सटाइक नाओं सुनि ओ महिला, टाल्सटाय लग आबि क्षमा मांगि अपन दुनू आना पाइ घुमा दइले कहलकनि। हँसैत टाल्सटाय उत्तर देल- ‘‘वहिन जी! ई हमर मजूरीक पाइ छी। एकरा हम किन्नहु नै घुमाएब।’’

जीवन यात्रा

गंगोत्रीसँ गंगाजल धरतीसँ बाहर निकलि चलि पड़ल। पहाड़सँ नीचाँ आरो निच्चाँ होइत मैदानमे पहुँचल। एक गोटे ऐ प्रक्रियाकेँ गंभीरतासँ देख रहल छल। आगू मुँहे जल बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। जइमे अनेको जल-नद आबि-आबि मिलैत गेल। जइसँ एक विशाल नदी बनि गेल। ओ नदी जाइत-जाइत समुद्रमे मिल गेल। जे व्यक्ति देख रहल छल। ओइ व्यक्तिक मनमे भेल जे जलक ई मुरुखपना छी। किएक तँ जे हिमालएक उच्च शिखर छोड़ि, अनेक प्रकारक दुख उठा, नोनगर पानिमे मिलल। एकरा मुरुखपना नै कहबै तँ की कहबै? ओइ व्यक्तिक मनः स्थितिकेँ नदी बुझि गेल। कहलक- “अहाँ हमर यात्राक मर्म नै बुझि सकलौं। कतबो ऊँच हिमालय किअए ने हुअए मुदा ओ अपूर्ण अछि। पूर्णता तँ गहराइमे होइत छै, जइठाम पहुँचलापर मनक सभ कामना समाप्त भऽ जाइत छै। हम हिमालए सन महान ऊँचाइक आत्मा छी जे पूर्णता पबैक लेल निरन्तर चलैत समुद्रक गहराइमे पहुँचलौं। तँए, हमरा बेहद खुशी अछि, अप्पन लक्ष्य धरि पहुँच गेलौं।”

ज्योति

जनक आओर याज्ञवल्क्यक बीच ज्ञानक चरचा चलैत छल। जनक पुछलखिन- ''सुर्यास्त भेलापर -सुर्य डुबलापर- अन्हारक सघन बनमे रास्ता केना ढूढ़ल जाए?''

जनकक प्रश्न सुनि, मुस्कुराइत याज्ञवल्क्य उत्तर देलखिन- ''तरेगन रास्ता बता सकैत।''

याज्ञवल्क्यक उत्तरसँ असन्तुष्ठ होइत जनक पुछलखिन- ''अगर मेघौन होय? संगे दीपकक प्रकाश सेहो नै उपलब्धि होय, तखन?''

जनकक प्रश्नक गंभीरताकेँ बुझैत याज्ञवल्क्य कहलखिन- ''अपना सुझि-बुझिक सहारा लेबाक चाही।''

विवेकक प्रकाश हर मनुष्यमे होइत। जे कहियो नै बुझाइत। हे राजन, ओइ सुतल विवेककेँ जगाएबे ऋृषि समुदायिक पवित्र कर्तव्य छी।

पवनक विवेक

चन्द्रमाकेँ दू सन्तान-एक बेटा आ एक बेटी। बेटाक नाओं पवन आ बेटीक आँधी। एक दिन आँधीक मनमे उपकल जे पिता, सांसरिक पिता जकाँ, हमरो दुनू भाए-बहिनमे भेद करैत छथि। आँधीक व्यथाकेँ चन्द्रमा बुझि गेलखिन। बेटीक आत्मनिरीक्षणक लेल चन्द्रमा एकटा अवसर देबाक विचार केलनि।

दुनू भाए-बहीनकेँ बजा कहलखिन- ''बाउ, अहाँ सभ, स्वर्गक इन्द्रक काननक परिजात नामक देववृक्षकेँ देखने छी?''

दुनू भाए-बहिन- ''हँ।''

पिता- ''अहाँ दुनू ओतए जाउ आ सात खेप ओकर परिक्रमा कए कऽ आउ।''

पिताक आज्ञा मानि दुनू गोटे चलि देलक। आँधी हू-हू-आ कऽ दौड़ल। जइसँ गरदा, खढ़-पात आ कूड़ा-कड़कट उड़बैत लगले पहुँच, सात बेर परिक्रमा कऽ चोट्टे घुरि कऽ आबि गेल। मने-मन आँधी सोचैत जे हम्मर काज देख पिता प्रशंसा करताह।

पवन पाछु घुरि कऽ आएल। ओकरा संग सौंधी-सुगंध सेहो आएल। जइसँ सौंसे घर गमकि उठल।

मुस्कुराइत चन्द्रमा बेटीकेँ कहलखिन- ''बेटी, अहाँ नीक जकाँ बुझि गेल हेबै जे जे अधिक तेज गतिसँ चलत ओ खाली झोरा लऽ कऽ आओत मुदा जे स्वाभाविक गतिसँ चलत ओ मनकेँ मुग्ध करैबला सुगंध सेहो लाओत। जइसँ सौंसे वातावरण सुगंधित होएत।

वानप्रस्थक यात्रा पवन देवक सदृश्य उद्देश्यपूर्ण होइत।

आत्मबल-२

जै समैमे डॉक्टर राधाकृष्णन कओलेजमे पढ़ति रहथि, घटना ओइ समैक छी। कॉलेजमे पादरी शिक्षक अधिक।

एक दिन एकटा प्रोफेसर क्लासेमे हिन्दू धर्मक निन्दा खुलायाम केलनि। बालक राधाकृष्णन सेहो क्लासमे रहथि। प्रोफेसरक बातसँ हुनका एते क्रोध भेलनि जे सम्हारि नै सकलाह। उठि कऽ ठाढ़ होइत पुछलखिन- “महाशय, की इसाई धर्म आन धर्मक निन्दा केनाइ सिखबैत अछि?

राधाकृष्णन प्रश्न सुनि ओ तमसा कऽ बाजल- “और की हिन्दुधर्म दोसराक प्रशंसा करैत अछि।”

राधाकृष्णन जबाब देलखिन- “हँ।”

“हम्मर धर्म कोनो धर्मक अधलाह नै करैत अछि। गीतामे कृष्ण कहने छथिन- कोनो देवताकेँ उपासना केलासँ हमरे उपासना होइत अछि। आब अहीं कहू जे हम्मर धर्म ककर निन्दा करैत अछि।”

प्रोफेसर निरुत्तर भऽ गेल।

खुदीराम बोस

स्वतंत्रता संग्रामक प्रखर सिपाही खुदीराम बोसकेँ मुजफ्फरपुर जेलमे फाँसी भेलनि। जै समए फाँसी भेल रहनि ओइ समए खुदीरामक वएस मात्र अट्ठारह बर्ख आठ मासक छलनि। ओना हुनकर जन्म बंगालमे भेल छलनि मुदा ओ अपनाकेँ भारत माताक बेटा बुझैत छलाह। हुनकापर अंग्रेज किंग फोर्डक हत्याक आरोप लगाओल गेल छलनि। ओ जेहने कर्मठ, तेहने हँसमुख छलाह। फाँसीसँ किछु समए पहिने जेलर उदार पूर्वक आम आनि खाइले दैत कहलकनि- ''चुपचाप खा लिअ। कियो बुझए नै।''

खुदीराम आम रखि लेलनि। साँझू पहर जखन दोहरा कऽ जेलर आबि पुछलकनि तँ ओ जबाब देलखिन- ''जखन आइ फाँसिये होइबला अछि, तँ डरसँ किछु खाइ-पीबैक मन नै होइए। अहाँक आम ओहिना कोनमे राखल अछि।''

आमक गुद्दा खा कऽ बोस खोंइचाक खप्पामे मुँहसँ हवा भरि ओहिना रखि देने। कोनमे पहुँच जखन जेलर आम उठौलक तँ पचैक गेलै। जइपर जेलर भभा कऽ हँसल। जेलरक हँसी देख खुदीरामो खूब जोरसँ ठहाका मारि हँसल। मृत्युक एक्को पाइ डर हुनका नै छलनि।

खुदीरामक फाँसीक चरचा, लोकमान्य तिलक अपन पत्रिका ''केशरी''मे ''देशक दुर्भाग्य'' शीर्षक नाओंसँ लेख लिखलनि। जइपर हुनका, तिलककेँ छह मासक कारावास भेलनि।

शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो

गुरुकुलमे ई अनिवार्य नै जे नीक -आलीशान- मकानक बन्द कोठरियेटा मे शिक्षा देल जाए। अनिवार्य ई जे छात्रक मनः स्थितिक अनुरुप प्रकृतिक पाठशालामे व्यवहारिक शिक्षा भेटै। जइसँ व्यक्तित्वमे प्रखरताक समाबेश संवर्धन भऽ सकए।

महर्षि जरत्कारुक गुरुकुलमे छात्र विद्रुध प्रवेश पौलक। किछुए दिनक उपरान्त विद्रुधक प्रतिभासँ गुरु जरत्कारु प्रभावित होइत कहलखिन- ''बाउ, पौरुषक पुरुषत्वक परीक्षामे उतीर्ण भेलेपर कियो बरिष्ठ -महान- बनि सकैत अछि। अहाँ पराक्रमक संग-संग पोथियो पढ़ू।''

महर्षिक परामर्शसँ सहमत होइत विद्रुध कहलकनि- ''अपनेक जे आदेश होय, तैयार छी।''

विद्रुध कऽ एक सए गाए प्रभुदारण्यमे चरबैक आदेश दैत कहलखिन- ''जखन हजार गाए भऽ जाए तखन घुरि कऽ आएब।''

पोथी सभ सेहो लऽ लेलक।

सए गाए कऽ हजार गाए बनबैमे विद्रुध कऽ बारह बर्ख लगल। बच्चो सभ पुष्ट। किएक तँ कोनो बच्चाकेँ दूध पीबैमे कोताही नै करैत।

ऐ बारह बर्खक बीच विद्रुध अनेको साधक, विद्वानसँ सम्पर्क बना सीखबो केलक आ रास्ताक बाधासँ सेहो निपटल। जइसँ ओकर प्रतिभामे आरो चारि चान लगि गेलै घुरि कऽ एलापर चेहरासँ ब्रहमतेज टपकैत। किएक तँ अपन बुइधिक प्रयोगसँ पढ़बो केलक आ बुझबो आ सीखबो केलक।

विद्रुधक मेहनक आ साहस देख जरत्कारु हृदेसँ आनन्दित होइत अपन आश्रमक भार दऽ नमहर काज करए अपने चलि गेलाह।

लौह पुरुष

ई घटना १९४६क छी। बम्बई बंदरगाहमे नौ-सैनिक विद्रोह केलक। अंग्रेज शासक ओकरा -नौ-सैनिक- गोलिसँ भुजि देबाक धमकी देलक। जकरा जबाबमे भारतक नौ-सेना माटिमे मिला देब कहलक। स्थिति भयानक बनि गेल। पाछु हटैले कियो तैयार नै। ओइ समए सरदार वल्लभ भाय पटेलक हाथमे बम्बईक नेतृत्व छलनि। जनिकापर सभ टकटकी लगौने। मुदा सरदार पटेलक मनमे एक्को मिसिया घबड़ाहट नै। बम्बईक गवर्नर बजा कऽ मारे अन्ट-सन्ट कहलकनि। गवर्नरक बात सुनि, शेरक बोली सदृश्य गरजि कऽ सरदार पटेल उत्तर देलकनि- ''ओ -गवर्नर- अपना सरकारसँ पुइछ लिअ जे अंग्रेज भारतसँ मित्र जकाँ विदा हएत आकि लाश बनि।''

अंगेरज गवर्नर सरदार पटेलक जबाबसँ ठर्रा गेल। आखिर कार ओकरा समझौता करए पड़ल। वएह सरदार पटेल स्वतंत्र भारतक पहिल गृहमंत्री बनलाह।

कोनो आदमीमे साहस ओहिना नै बनैत। पुरुषार्थक बलपर विकसित होइत।

जंग लागल

एकबेर भगवान वुद्धक समक्ष श्रेष्ठि पुत्र सुमंत आ श्रमिक पुत्र तरुण संगे प्रब्रज्या लेलक। दुनू गोटे भावना पूर्वक संघारामक अनुशासनक पालन करए लगल। किछु मासक प्रगतिक जानकारी दैत प्रधान भिक्षु (संघाराम) कहलकनि- ''तरुणक अपेक्षा सुमंत अघिक स्वस्थ आ पढ़ल-लिखल अछि। भावनो प्रबल छै। मुदा सौंपल गेल काज आ साधनोक उपलब्धि तरुणमे सुमंतक अपेक्षा अधिक अछि। जेकर कारण बुझिमे नै अबैत अछि।''

संधारामक विचार सुनि तथागत (बुद्ध) कहलखिन- ''अखन सुमंत जंग लागल लोहाक औजार सदृश्य अछि। जंग छुटैमे किछु समए लागत।''

तथागतक बात संघाराम नीक-नाहाँति नै बुझि सकल। तँए प्रश्न वाचक नजरिसँ नजरि मिला बकर-बकर मुँह दिस तकैत रहलनि।

स्पष्ट करैत बुद्ध कहलखिन- ''ओकर (सुमंतक नमहर) अधिक समए आलस्य आ प्रमादमे बीतल अछि। जइसँ व्यक्तित्व जंग लागल औजार सदृश्य भऽ गेल अछि। जबकि तरुण एहेन उपकरण अछि जकरामे जंग छूबो ने केलक अछि। तँए, लगले फल पाबि रहल अछि। सुमंतक जंग छोड़बैमे पर्याप्त समए आ साधना लागत। तखन जा कऽ अभीष्ट फल निकलत।''

जीवकक परीक्षा

आदर्श शिक्षक सिर्फ अध्ययने नै छात्रकेँ ओइ विद्यामे एहेन पारंगत बना दैत, जइसँ ओ स्वर्ण (सोन) बनि चमकि उठैत। तक्षशिला विश्वविद्यालयमे सात वर्ख आयुर्वेदक शिक्षा पाबि आचार्य वृहस्पति जीवकक परीक्षा लऽ कऽ विदा करैक समए निकाललनि। समए निकालि गुरु (वृहस्पति) जीवककेँ हाथमे खुरपी दैत कहलखिन- ''एक योजनक बीच एकटा एहेन पौधा उपाड़ि कऽ नेने आउ जेकर औषधि नै बनैत होय।''

खुरपी लऽ जीवक विदा भेल। मास दिन घुमैत रहल मुदा एक्कोटा एहेन गाछ नै भेटलै जेकर औषधि नै बनैत होय। मास दिनक उपरान्त जीवक घुमि कऽ आबि कहलकनि- ''गुरुदेव! हमरा एक्कोटा एहेन गाछ नै भेटल जेकर औषधि नै बनैत होय।''

जीवककेँ गरदनि लगबैत वृहस्पति कहलखिन- ''वत्स! अहाँ सफल भेलौं। आब अहाँ जाउ, आयुर्वेदक प्रचार करु।''

तप

श्रमे ओ देवता छी जे सभ सिद्धिक स्वामी छी। आयुष्यकँ पूर्वाद्धमे एकर सम्पादनक लेल विधाता मनुष्यकँ शक्ति सम्पन्न बना दैत छथिन। जखने एकर -श्रमक- उपेक्षा होइत तखने समाज अव्यवस्थित हुअए लगैत।

राजा विड़ाल मुनि बैवस्वतकँ प्रणाम कऽ चुपचाप बैस गेलाह। सूक्ष्मदर्शी गुरु -बैवस्वत- बुझि गेलखिन जे कोनो गंभीर चिन्तामे विड़ाल पड़ल छथि।

पुछलखिन- ‘‘विड़ाल, आइ अहाँ अशान्त जकाँ बुझि पड़ै छी। कथीक चिन्ता अछि से हमरो कहू?’’

अपन अन्तर्वेदनाकँ प्रगट करैत विड़ाल कहलखिन- ‘‘देव, नै जानि किएक प्रजाजन अशान्त छथि। सभ कियो धर्म आ शान्तिसँ विमुख भेल जा रहल छथि। जइसँ धन-धान्यक अभाव आ प्रेम-भाव टुटि रहल अछि। अपराध वृत्ति बढ़ि रहल अछि।’’

विड़ालक विचार धियानसँ सुनि बैवस्वत कहलखिन- ‘‘जै देशमे लोक मेहनतसँ देह चोराओत, श्रमकँ सम्मान जनक स्थान नै देत, ओइठाम केना समृद्धि भऽ सकैत अछि।’’

श्रम ओहन तप छी जइसँ समाजक सभ दोष मेटा जाइत अछि। तँए, श्रमकँ साधना बुझि सभकँ ऐमे लगि जेबाक चाही। जै परिवार समाज आ देशमे श्रमकँ जते महत्व देल जाएत, ओ ओते उन्नति करत।

उल्टा अर्थ

शिक्षा केहेन देल जाए, की देल जाए-ई गंभीर प्रश्न छी।

एक गोटेकेँ दू संतान। एक बेटा दोसर बेटी। सम्पन्न परिवार। दुनू संतानकेँ बच्चेसँ सुख-सुविधा भेटैत रहल। जइसँ वयस्क होइत-होइत अनेको व्यसनक आदति लगि गेलै।

अपन दुनू बच्चाकेँ बिगड़ल देख पिताक मनमे चिन्ता भेलै। भीतरे-भीतर सोगाए लगल। जइसँ रोगी जकाँ खिन्न हुअए लगल। एक दिन एकटा मित्र पुछलक- "मित्र, अहाँ दिनानुदिन खिन्न किएक भेल जा रहल छी?"

मित्रक बात सुनि ओ उत्तर देलक- "मित्र, सभ कुछ अछैतो दुनू बच्चा बिगड़ि गेल अछि। वएह चिन्ता मनकेँ पकड़ने अछि।"

दुनू गोटे विचारि तँइ केलक जे दुनू बच्चाकेँ एक मास महाभारतक कथा, जइमे धर्म, आ सदाचारक सभ तत्व मौजूद अछि, सुनाओल जाए। सएह केलक।

मास दिन महाभारतक कथा सुनलाक बाद दुनू आरो बिगड़ि गेल। बेटा अपना दोस्तकेँ कहलक- "भगवान श्री कृष्णकेँ सोलह हजार रानी छलनि तँ दस-बीससँ संबंध राखब केना अधलाह हएत?"

तहिना बेटियो अपन बहिनाकेँ कहलक- "कुन्तीकेँ कुमारियेमे बेटा भेलै जे श्रेष्ठ नारीक श्रेणीमे छथि तखन हम कोन अधला काज करै छी।"

आब प्रश्न उठैत जे एना किएक भेल?

अखन धरि जे कथा श्रवणक व्यवहार अछि ओ अपूर्ण अछि। दृष्टिकोण बदलैक लेल एहेन प्रभावी वातावरण बनबए पड़त जइमे कथा चर्च आ क्रियामे समुचित समन्वय हेबाक चाहिये। तखने दृष्टिकोण बदलत आ समुचित उपयोगी बनत।

जाति नै पानि

बुद्धदेवक प्रमुख शिष्य आनंद श्रावस्तीमे भिक्षाटन करैत रहथि। गरमी मास तँए रौदो तीख। हुनका पियास लगलनि। लगमे पानिक कोनो जोगार नै देख किछु आगू बढ़लाह। एकटा युवतीकेँ इनारपर पानि भरैत देखलखिन। पानि देख मनमे सवुर भेलनि। इनार लग पहुँच ओइ युवतीकेँ आनंद कहलखिन- ‘‘दाय, बड़ जोर प्यास लगल अछि, कनी पानि पियाउ?’’

पानि नै दऽ ओ युवती कहलकनि- ‘‘साधुबाबा, हम चंडालक बेटी छी, हम्मर छुबल पानि केना पीब?’’

कनी काल गुम्म रहि आनंद कहलखिन- ‘‘बुच्ची, हम तोरा तँ जाति नै पुछलिअ। पानि मंगलियह।’’

पियाससँ तरसैत आनंदकेँ देख ओइ युवतीकेँ दया लगल। मुदा मनमे विचित्र द्वन्द्व उपैक गेलै। अंतमे ओ पानि भरि आनंदकेँ देलकनि पानि पीब आनंद तृप्त भऽ गेलाह।

महात्मा नारायण स्वामी कहने छथि जे जाति-पाति आ अस्पृश्यताक बंधन हिन्दू जातिक लेल कलंक छी। यएह बंधन सभ जातिकेँ छिन्न-भिन्न केने अछि। एकरे चलैत सभ जातिक बीच घृणा आ द्वेष पसरल अछि।

ऊँच-नीच

एक राति, जखन पुजेगरी मंदिरक केबाड़ बन्न कऽ चलि गेल, स्तम्भक माने खूटाक पाथर देवमूर्ति बनल पाथरसँ पुछलक- ''की भाय, हम सभ तँ एक्के पहाड़क पाथर छी। फेर अहाँक पूजा होइए आ हम जे मकानक -मंदिरक- भार उठैने छी से हम्मर कोनो मोजरे नै?''

देवताक आसनपर बैसल पाथर मने मन विचार करए लगल। मुदा प्रश्नक जबाब नै बुझि कहलक- ''भाय, हम ऐ रहस्यकेँ नै जनैत छी। पुजेगरी विद्वान छथि, हुनकासँ बुझि काल्हि कहबह।''

प्रातःकाल पुजेगरी आबि पूजा करए लगल। फूल-पात चढ़ा, दुनू हाथ जोड़ि पुजेगरी धियान केलनि कि देव पाथर पुछलखिन- ''मंदिरमे जते पाथर अछि सभ तँ गुण-जातिसँ एक्के अछि। फेर हम किएक पूजनीए छी?''

पुजेगरी- ''हे देव! अपने बड़ पैघ बात पुछलौं। एक गुण, घर्म आ जातिक सभ वस्तुक उपयोग एक्के पदक लेल होय, ई सर्वथा असंभव अछि। प्रकृति ककरो एक रंग नै रहए दैत अछि। जे मनुष्योमे अछि। बहुतो मनुष्यमे एक तरहक प्रतिभा आ गुण-घर्म होइत। मुदा ओहूमे अपन श्रेष्ठ कर्मक कारणे कियो सभसँ आगू बढ़ि जाइत आ कियो पाछू पड़ि जाइत। तँए एकर अर्थ ई नै जे ओ -पाछु पड़ल- अपनाकेँ हेय बुझए। किएक तँ परिवर्तन सृष्टिक नियम छिऐ। आइ जे ऊपर अछि ओ काल्हियो ऊपरे रहत, एकर कोनो गारंटी नै छै। तहिना जे निच्चाँ अछि ओ सभ दिन निच्चेँ रहत, सेहो बात नै।''

पागलखाना

एकटा छोट-छीन देश आनन्द लोक। देशमे लोकक संख्या जमीने अनुकूल। उर्वर माटि मीठ पानि, मधुर हवाक मिलान तँए मनुक्खसँ लऽ कऽ गाछ-विरिछ, फल-फूल, जीव-जन्तु धरि आनंदसँ रहैत। दुनियाँक आन देशमे तँ ढेरो सम्प्रदाय अछि मुदा ओइ देशमे दुइयेटा। दू सम्प्रदाय रहनौं कहियो अपनामे झगड़ा-झंझट नै होइत। एक्के इनारक पानि पीबैत, एक्के पोखरिमे नहाइत। एक्के स्कूलमे पढ़ैत आ मौका-कुमौका एक्के जहलोमे रहैत। ततबे नै बाढ़ि, रौदी, बिहाड़ि, शीतलहरी सेहो संगे झेलैत।

एक दिन दुनू सम्प्रदाइक बीच, एकटा गाममे झगड़ा ऐ लेल भऽ गेलै जे दुनू अपन-अपन सम्प्रदायकेँ दोसरसँ पैघ कहए लगलै। एक ठामसँ झगड़ा शुरू भेल आ सगरे देश पसरि गेल। झगड़ोक रूप बदलए लगलै। गारि-गरोबलिसँ पटका-पटकी होइत खून-खच्चर हुअए लगलै। अंतमे दुनू सम्प्रदाय दू देश बना लेलक।

दुनू देशक सिपाही सीमापर बाँसक खूटा गारि-गारि सीमान काइम करए लगल। अधासँ जखन आगू बढ़ल तँ सीमापर एकटा पागलखाना पड़ैत रहए। दुनू देशक सिपाही पगलखन्नाक बगलमे बैस बिचारए लगल जे ऐठाम कोना सीमा काइम करब? दुनूमे सँ कियो अपना दिस पगलखन्ना लेमए नै चाहैत। दुनूक बीच विवाद शुरू भेल। दुनू अपन काज रोकि अपना-अपना सरकारकेँ खबरि देलक। सरकार पागलक संख्या पता लगबए चाहलक जे दुनू सम्प्रदायक कते-कते पागल अछि। तै लेल आदेश देलक। दुनू देशक सिपाही मिल कऽ पागलखाना जा पूछलक- ‘‘अपन-अपन सम्प्रदाइक नाओं कहू?’’

सभ पागल हल्ला करैत कहए लगलै- ‘‘अरे बेकूफ, भाग एतऽ सँ हम सभ एक छी आ एक रहब।’’